@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित

बुधवार, 27 अगस्त 2025

कौमी पत्रिका

राष्ट्रीय दैनिक अखबार

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 287 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

वैष्णो देवी यात्रा मार्ग पर अर्धकुंवारी के पास भूस्खलन

पांच की मौत, 14 घायल; यात्रा स्थगित, यात्रा रुकी

एजेंसी

जम्मू-कश्मीर। कटड़ा में भारी बारिश के चलते माता श्री वैष्णो देवी यात्रा मार्ग पर अर्धकुंवारी स्थित इंद्रप्रस्थ भोजनालय के पास मंगलवार को भूस्खलन हुआ है, जिसमें पांच लोगों की मौत हो गई है और 14 अन्य घायल हो गए हैं। करीब छह लोग घायल हो गए और कुछ के दबे होने की आशंका है। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने भी अपने एक्स अकाउंट पर पोस्ट करते हुए भूस्खलन होने की जानकारी साझा की है। भूस्खलन के बाद बड़े स्तर पर राहत-बचाव कार्य किया जा रहा है। रियासी पुलिस-प्रशासन और एनडीआरएफ अलर्ट मोड पर हैं।

● हिमकोटी ट्रेक मार्ग पर यात्रा सुबह से ही स्थगित

हिमकोटी ट्रेक मार्ग पर यात्रा सुबह से ही स्थगित कर दी गई थी, लेकिन दोपहर 1.30 बजे तक पुराने मार्ग पर यात्रा जारी थी, जिसके बाद अधिकारियों ने मूसलाधार बारिश के मद्देनजर अगले आदेश तक इसे भी स्थगित करने का निर्णय लिया।

जम्मू-कश्मीर के डोडा में बादल फटा, 10 से अधिक घर हुए तबाह;

अब तक तीन लोगों की मौत

जम्मू-कश्मीर के डोडा में बादल फटने से एक बार फिर तबाही मच गई है। 10 से ज्यादा घर तबाह हो गए हैं। डोडा जिले में लगातार भारी बारिश के कारण भूस्खलन, मिट्टी धंसने और पत्थर गिरने की घटनाएं हुई हैं, जिसके कारण कई संपर्क सड़कों के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग के कई हिस्से बंद हो गए हैं। जानकारी के लिए बता दें कि ये बादल डोडा जिले के थाथरी उप-मंडल में फटा है। जहां अचानक से तबाही मच गई है। इससे पहले किश्तवाड़ और थराली में भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं। किश्तवाड़ जिले और डोडा के कई इलाकों में बादल फटने की सूचनाएं मिल रही हैं। डिप्टी कमिश्नर हरविंदर सिंह ने कहा कि तीन दिनों से लगातार बारिश हो रही है। खासकर चिनाब नदी के इलाकों में दो जगहों से बादल फटने की खबरें आई हैं। बादल फटने से एनएच-244 भी बह गया। आगे बातचीत में कहा कि हमारी टीम उसे बहाल करने में जुटी है। अब तक तीन लोगों की जान जा चुकी है। इनमें से दो गंधोर में और एक ठठरी सबडिवीजन में है। 15 रिहायशी घर क्षतिग्रस्त हुए हैं और गौशालाओं को भी नुकसान पहुंचा है। आगे बताया कि एक निजी स्वास्थ्य केंद्र क्षतिग्रस्त हुआ है। तीन पैदल पुल बह गए हैं।

पंजाब के सात जिले बाढ़ की चपेट में, राज्य के स्कूल 30 अगस्त तक बंद

चंडीगढ़। पंजाब में सात जिलों के बाढ़ की चपेट में आने तथा कई जिलों में बाढ़ की स्थिति पैदा होने के बाद राज्य सरकार ने सभी स्कूल 30 अगस्त तक बंद कर दिए हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने मंगलवार की शाम सोशल मीडिया 'एक्स' पर लिखा कि पिछले दिनों से भारी बारिश हो रही है और मौसम विभाग की ओर से आगे भी कुछ दिनों तक भारी बारिश होने का अनुमान लगाया जा रहा है। इसे देखते हुए राज्य के सभी प्राइमरी, सेकेंडरी, सीनियर सेकेंडरी सरकारी और प्राइवेट स्कूल 27 अगस्त से 30 अगस्त तक बंद रहेंगे।

मौसम विभाग पठानकोट, गुरदासपुर, बरनाला, संगरूर और मनसा में बारिश का रेल अलर्ट जारी किया गया है। अब तक सात जिले बाढ़ की चपेट में आ चुके हैं। रणजीत सागर डैम और भाखड़ा डैम से लगातार पानी छोड़े जाने से रावी, सतलुज और ब्यास नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। तरनतारन और फिरोजपुर में हरिके हेडवर्क्स से छोड़े गए पानी के कारण बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। ब्यास नदी पर बने चक्की रेलवे पुल के नीचे से मिट्टी धंसने से पठानकोट-जालंधर रेलवे रूट बंद कर दिया गया है। इससे 90 ट्रेनें प्रभावित हुईं।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में दिल्ली सुरक्षित हाथों में है: वीके सक्सेना

कौमी पत्रिका
नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 26 अगस्त। दिल्ली के उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कल लोधी एस्टेट स्थित सरदार पटेल विद्यालय में हरित परिवहन की पहल को बढ़ावा देने के लिए 24 से अधिक इलेक्ट्रिक बसों को रिबन काटकर रवाना किया। इस अवसर पर उपराज्यपाल श्री वी. के. सक्सेना ने कहा है कि दिल्ली आज सुरक्षित हाथों में है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मात्र छह महीने में दिल्ली की हवा बदलने की दिशा में कार्य शुरू किया है, वह सराहनीय है। मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने भी कहा कि प्रकृति के साथ जुड़ना ही प्रगति है। उन्होंने यह भी कहा कि दिल्ली सरकार प्रदूषण को कम करने और हरित परिवहन को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इलेक्ट्रिक बसों की शुरुआत केवल तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक ठोस कदम है। स्कूलों को ईवी बसें उपलब्ध कराना सरकार की प्रदूषण के खिलाफ एक प्रभावी पहल है। इसका उद्देश्य है कि स्कूली बच्चें प्रदूषण रहित बसों में यात्रा करें और मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें। इस अवसर पर उपराज्यपाल श्री वी. के. सक्सेना ने विश्वास जताया कि आने वाले दो से तीन वर्षों में दिल्ली में ऐसे अद्भुत परिवर्तन दिखाई देंगे, जिनकी प्रतीक्षा लंबे समय से की जा रही थी। विद्यालय परिसर में छात्रों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की सराहना करते हुए उपराज्यपाल ने कहा कि आज पर्यावरण संरक्षण के लिए शुरू की गई इलेक्ट्रिक बसों के माध्यम से प्रतिदिन लगभग 1200 छात्रों का आवागमन होगा, जिससे 400ङ्क500 निजी वाहनों का बोझ सड़कों से कम होगा। इससे न केवल प्रदूषण घटेगा, बल्कि यातायात व्यवस्था भी सुगम होगी।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि सभी स्कूल और कॉलेज इस प्रकार की पहल करें, तो प्रदूषण की समस्या का बहुत हद तक समाधान हो सकता है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि यह पहल न केवल विद्यार्थियों के सुरक्षित आवागमन को सुनिश्चित करेगी, बल्कि दिल्ली की वायु गुणवत्ता में सुधार की दिशा में भी एक महत्त्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदूषण कम करना दिल्ली सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उपराज्यपाल महोदय की पहल पर सरकार पहले ही कूड़े के पहाड़ हटाने, धूल नियंत्रण, वृक्षारोपण और यमुना तट-विकास जैसे कई प्रयास कर रही है। अब स्कूली बसों को इलेक्ट्रिक मोड पर परिवर्तित करना इस दिशा में एक निर्णायक पहल है। उन्होंने कहा कि प्राइवेट व सरकारी स्कूलों की डीजल-सीएनजी बसें भी प्रदूषण बढ़ाने में भूमिका निभाती हैं और यदि सभी स्कूल इन्हें इलेक्ट्रिक में बदलें तो राजधानी की हवा और अधिक स्वच्छ होगी। मुख्यमंत्री ने सरदार पटेल विद्यालय द्वारा दिल्ली सरकार के सहयोग से संपूर्ण बस बेड़े को ई-बसों में परिवर्तित करने की सराहना की। उन्होंने कहा कि अब दिल्ली की रगों में प्रदूषण नहीं, बल्कि स्वच्छ हवा बहेगी। उन्होंने यह भी घोषणा की कि दिल्ली सरकार सभी स्कूलों में पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास से जुड़े प्रतियोगिताओं का आयोजन करेगी, ताकि बच्चे प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी समझें और जीवनभर इन मूल्यों का पालन करें।

शेष पृष्ठ 3 पर

भारत-जापान का रिश्ता 'मेड फॉर ईच अदर' वाला : पीएम मोदी

भारत के कॉलेज और विश्वविद्यालय अब जापानी भाषा की शिक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं।

एजेंसी

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत और जापान के मजबूत संबंधों का जिक्र करते हुए कहा कि दोनों देशों के रिश्ते 'मेड फॉर ईच अदर' वाले हैं। भारत-जापान के बीच 'पीपल टू पीपल' कनेक्ट बढ़ा है। स्किल और ह्यूमन रिसोर्स से जुड़ी एक-दूसरे की जरूरतों को भी हम पूरा कर पा रहे हैं। आने वाले वर्षों में सभी प्रमुख क्षेत्रों में निरंतर प्रगति की आवश्यकता पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि आज के प्रयास 2047 तक एक विकसित भारत की नींव मजबूत करेंगे। उन्होंने यह विश्वास व्यक्त करते हुए समापन किया कि जापान इस लक्ष्य को प्राप्त करने में एक विश्वसनीय भागीदार बना रहेगा। प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि वह अगले हफ्ते जापान जाएंगे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत और जापान के बीच संबंध सिर्फ कूटनीतिक संबंधों से कहीं आगे तक फैले हैं, यह संस्कृति और आपसी विश्वास पर आधारित है। दोनों देश एक-दूसरे के विकास में अपनी प्रगति देखते हैं। मारुति सुजुकी के साथ शुरू हुआ सफर अब बुलेट ट्रेन की गति तक पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि भारत-जापान साझेदारी की औद्योगिक क्षमता को साकार करने की प्रमुख पहल गुजरात में शुरू हुई थी। अतीत को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 20 साल पहले जब वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन शुरू हुआ था, तब जापान एक प्रमुख साझेदार था। उद्योग से जुड़े नियम और कानून जापानी भाषा में छपवाए गए, ताकि उन्हें समझना आसान हो। उन्होंने गोल्फ के प्रति जापानियों के लगाव की सराहना की और बताया कि उनके हितों को ध्यान में रखते हुए 7-8 नए गोल्फ कोर्स विकसित किए गए हैं। पीएम मोदी ने आगे बताया कि भारत के कॉलेज और विश्वविद्यालय अब जापानी भाषा की शिक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, ÷भारत के निरंतर प्रयास भारत और जापान के लोगों के बीच आपसी संपर्क को मजबूत कर रहे हैं। दोनों देश अब कौशल विकास और मानव संसाधन के क्षेत्र में एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं।' उन्होंने मारुति सुजुकी जैसी कंपनियों से ऐसी पहलों में सक्रिय रूप से भाग लेने और युवा आदान-प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा देने का आग्रह किया।

राष्ट्रपति ने गणेश चतुर्थी की पूर्व संध्या पर दी देशवासियों को शुभकामनाए

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को गणेश चतुर्थी की पूर्व संध्या पर देश और विदेश में बसे सभी भारतीयों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। राष्ट्रपति ने अपने संदेश में कहा कि यह पर्व पूरे देश में बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। भगवान श्री गणेश को ज्ञान और कल्याण का प्रतीक मानकर उनकी पूजा की जाती है। हम सब उनके आशीर्वाद से नई शुरुआत और विघ्नों के निवारण की कामना करते हैं। उन्होंने कहा कि यह पर्व हमें नए लक्ष्यों के साथ सकारात्मक भाव से आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। राष्ट्रपति ने लोगों से आह्वान किया कि गणेश चतुर्थी का उत्सव पर्यावरण संरक्षण के संकल्प के साथ मनाएं और स्वच्छ, हरित एवं समृद्ध भारत के निर्माण में योगदान दें।

भारत के विश्व गुरु बनने में है संघ की सार्थकता : भागवत

उन्होंने कहा कि संघ के बारे में अनेक चर्चाएं होती हैं, लेकिन प्रामाणिक जानकारी का अभाव है।

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने मंगलवार को यहां विज्ञान भवन में समाज के विविध क्षेत्रों से जुड़े लोगों के साथ संगठन की सौ वर्षों की यात्रा पर संवाद की शुरुआत की। तीन दिवसीय इस संवाद का विषय '100 वर्ष की संघ यात्रा : नए क्षितिज' रखा गया है।

डॉ. भागवत ने कहा कि प्रत्येक राष्ट्र का विश्व में एक योगदान होता है और संघ की सार्थकता भारत के विश्व गुरु बनने में है। उन्होंने माना कि भारत के उत्थान की प्रक्रिया धीमी है, लेकिन यह निरंतर जारी है और संघ की यात्रा का लक्ष्य इसी भारत के उत्थान से जुड़ा है। उन्होंने कहा कि संघ के बारे में अनेक चर्चाएं होती हैं, लेकिन प्रामाणिक जानकारी का अभाव है। उन्होंने कहा, 'जो जानकारी है, वह भी अधिकतर परसेप्शन पर आधारित है, तथ्यपरक नहीं। हमारा उद्देश्य किसी को कनविंस करना नहीं, बल्कि संघ की सही जानकारी देना है। निष्कर्ष निकालना श्रोताओं का अधिकार है।' उन्होंने 2018 में विज्ञान भवन में हुए अपने पिछले संवाद का जिक्र कर कहा कि तब भी यही भावना रही थी कि संघ को लेकर तथ्य सामने लाए जाएं। इस बार सौ वर्ष की यात्रा पूरी होने के बाद संगठन आगे किस दिशा में काम करेगा, इस पर दृष्टि साझा करना उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि इस बार संवाद केवल दिल्ली में ही नहीं, बल्कि देश के अन्य तीन स्थानों पर भी होगा ताकि ज्यादा लोग शामिल हो सकें। उन्होंने बताया कि 70-75 प्रतिशत प्रतिभागी नये लोगों को आमंत्रित किए गए हैं। संघ के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ. भागवत ने कहा, 'संघ क्यों शुरू हुआ, कैसे बाधाओं के बीच स्वयंसेवकों ने इसे आगे बढ़ाया और आज सौ साल बाद भी नए क्षितिज की बात क्यों हो रही है– इसका उत्तर एक वाक्य में है।

जीतू पटवारी का बयान मध्य प्रदेश की महिलाओं का अपमान: भाजपा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कांग्रेस की मध्य प्रदेश इकाई के अध्यक्ष जीतू पटवारी के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे महिलाओं का अपमान बताया है। भाजपा ने कहा कि यह बयान न केवल मध्य प्रदेश की महिलाओं का अपमान है, बल्कि कांग्रेस की महिला विरोधी कुत्सित मानसिकता का एक अशोभनीय उदाहरण है।

भाजपा प्रवक्ता एवं सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि कांग्रेस का चेहरा कितना महिला विरोधी है, इसका एक अत्यंत निंदनीय उदाहरण मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के बयान से सामने आया है। पटवारी ने कहा था कि मध्य प्रदेश में अधिकांश महिलाएं शराब पीती हैं और सर्वाधिक शराब पीती हैं। डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि यह बयान न केवल मध्य प्रदेश की महिलाओं का अपमान है, बल्कि कांग्रेस की महिला विरोधी कुत्सित मानसिकता का एक अशोभनीय उदाहरण है। उन्होंने कहा कि विकास विरोधी और संविधान विरोधी कांग्रेस का चेहरा कितना महिला विरोधी है, इसका एक अत्यंत निंदनीय उदाहरण पटवारी के बयान से सामने आया है। उनके बयान से साफ है कांग्रेस ने हमेशा से ही महिलाओं का अपमान किया है। यह बात उनकी पार्टी में रही महिला नेत्रियों को भी पता है जिन्होंने अपमान के कारण पार्टी छोड़ी। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश वह राज्य है जहां भाजपा के शासन काल में सबसे पहले महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। देवी अहिल्या बाई की पुण्य भूमि है। लाड़ली लक्ष्मी योजना वहां सबसे पहले लागू की गई। जहां तक शराब की खपत का सवाल है तो एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में ग्रामीण तेलंगाना में शराब की सबसे खपत होती है। उन्हें यह सच दिखाई नहीं देता। भाजपा प्रवक्ता त्रिवेदी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा ही महिलाओं के सम्मान को सर्वोपरि रखा है फिर चाहे महिलाओं के सम्मान के लिए ऑपरेशन सिंदूर चलाना हो या संसद भवन के उद्घाटन के साथ महिला आरक्षण विधेयक पारित कराना हो। उल्लेखनीय है कि जीतू पटवारी ने कहा था कि पूरे देश में सबसे ज्यादा मध्य प्रदेश की महिलाएं शराब पीती हैं। लाड़ली बहना के नाम पर वोट लिए और आज वे ही सबसे ज्यादा नशा कर रही हैं।

● मुख्यमंत्री ने खड़गे से हटाने की मांग की

भोपाल। कांग्रेस की मध्य प्रदेश इकाई के अध्यक्ष जीतू पटवारी राज्य में सबसे ज्यादा महिलाओं के शराबी होने वाले बयान पर घिर गए हैं। भाजपा हमलावर है और उसने पटवारी से अपने बयान पर माफी मांगने के साथ पार्टी हाईकमान से पटवारी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।राज्य में कांग्रेस लगातार मोहन सरकार पर हमलावर है और महिला अपराध से लेकर महिलाओं के शराब पीने का जिक्र करते हुए बीते रोज सोमवार को प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने महिलाओं के शराब पीने को लेकर बयान दिया था। मध्य प्रदेश के कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के महिलाओं पर दिए बयान पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कड़ी नाराजगी जाहिर की है. उन्होंने कहा है कांग्रेस ने प्रदेश की लाड़ली बहनों को शराबी बताकर उनका घोर अपमान किया है. जनता इस अपमान का हिसाब चुकाएगी. प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने महिलाओं पर टिप्पणी कर अपनी छोटी मानसिकता को दर्शाया है.सीएम मोहन यादव ने कहा कि यही कांग्रेस का चाल-चरित्र है. उसने कभी महिलाओं का सम्मान नहीं किया।

केंद्र के इशारे पर काम कर रहा चुनाव आयोग: ममता बनर्जी

बर्दवान। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को यहां एक सरकारी कार्यक्रम में चुनाव आयोग पर करारा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा को फायदा पहुंचाने की कोशिश में चुनाव आयोग बार-बार केंद्र सरकार के इशारे पर काम कर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बंगाल को लगातार अपमानित करने के लिए आयोग ने पंचायत चुनावों के दौरान 186 टीमें भेजीं, जबकि हर सवाल का जवाब दिया गया। फिर भी राज्य को बदनाम करने की कोशिश हो रही है। इस दौरान मंच पर मुख्य सचिव मनोज पंत भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री ने चार राज्य अधिकारियों के निलंबन को लेकर हुए विवाद का जिक्र करते हुए कहा कि आयोग की भूमिका पूरी तरह पक्षपातपूर्ण है। उन्होंने तंज कसा, ÷क्या केवल बंगाल ही चोर है? बाकी राज्यों में जो डबल इंजन सरकारें हैं, वहां क्या कुछ नहीं हो रहा? ममता ने मंच से स्पष्ट किया कि वह प्रशासनिक स्तर पर आयोग के आदेशों का पालन करती हैं, लेकिन राजनीतिक तौर पर आयोग की कार्यप्रणाली को जनता के सामने उजागर करती रहेंगी।

हरतालिका तीज भारत और नेपाल के बीच अटूट सांस्कृतिक बंधन का प्रतीक: कपिल मिश्रा

कौमी पत्रिका
संजय कुमार

नई दिल्ली, 26 अगस्त। भारत स्वाभिमान ट्रस्ट एवं हाम्रो स्वाभिमान ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में हरतालिका तीज महोत्सव 2025 का भव्य आयोजन यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली सरकार के मंत्री कपिल मिश्रा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। यह उत्सव योग ऋषि स्वामी रामदेव जी और आचार्य बालकृष्ण जी द्वारा आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में भारत में नेपाल राष्ट्र के राजदूत श्री शंकर प्रसाद शर्मा, विधायक श्री संजय गोयल सहित बड़ी संख्या में नेपाली-गोरखाली समाज एवं दिल्ली के नागरिकों की सहभागिता ने कार्यक्रम को विशेष रूप से सफल बनाया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कपिल मिश्रा ने कहा कि दिल्ली सरकार इस प्रकार के आयोजनों में आगामी वर्ष से पूर्ण सहयोग और प्रतिबद्धता के साथ सहभागी बनेगी। हरतालिका तीज जैसे पर्व हमारी सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिक परंपरा को सशक्त बनाते हैं। यह आयोजन भारत और नेपाल के बीच अटूट सांस्कृतिक बंधन का प्रतीक है। मिश्रा ने आगे कहा कि इस महोत्सव ने न केवल हरतालिका तीज की धार्मिक महिमा को उजागर किया बल्कि भारतीय और नेपाली संस्कृति के साझा मूल्यों और परंपराओं को भी जीवंत कर दिया। आगामी वर्ष से दिल्ली सरकार इस तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में खुद आगे आकर मदद करेगी। नेपाली समाज वीर, पराक्रमी और सनातनी परम्परा को आगे ले जाने वाला समाज है। इस मौके पर यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स तीज की उमंग और उल्लास से सराबोर दिखा। महिलाओं ने शिव-पार्वती व्रत कथा का श्रद्धापूर्वक पालन किया और पारंपरिक गीत-संगीत एवं नृत्य की प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्ति और उल्लास से भर दिया।

भारतीय मौसम विभाग ने 27 से 31 अगस्त तक कई राज्यों में भारी बारिश की चेतावनी दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) ने 27 से 31 अगस्त तक देश के विभिन्न राज्यों में भारी से बहुत भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। अगले सात दिनों तक उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर में भारी बारिश की संभावना है। 28-29 अगस्त को उत्तराखंड और 29 अगस्त से 1 सितंबर तक पूर्वी राजस्थान में बहुत भारी बारिश हो सकती है। वहीं ओडिशा, छत्तीसगढ़, विदर्भ, झारखंड, बिहार और मध्य प्रदेश में अगले पांच से सात दिनों तक भारी बारिश होने की संभावना है। ओडिशा में 27 अगस्त को और छत्तीसगढ़ में 27-28 अगस्त को बहुत भारी बारिश की चेतावनी है। गुजरात, कोंकण, गोवा और महाराष्ट्र में भारी बारिश की उम्मीद है। महाराष्ट्र के घाट क्षेत्रों में 27-28 अगस्त को बहुत भारी बारिश हो सकती है। आंध्र प्रदेश में 28 अगस्त को अति भारी बारिश की संभावना है। तेलंगाना, केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में भी अगले कुछ दिनों तक भारी बारिश हो सकती है। असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में 31 अगस्त तक भारी बारिश की संभावना है। मछुआरों को 26 से 31 अगस्त तक बंगाल की खाड़ी और अन्य समुद्री क्षेत्रों में न जाने की सख्त हिदायत दी गई है।

पंजाब में बाढ़ का कहर, रेलवे रूट बंद, 90 ट्रेनें प्रभावित

अमृतसर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में हो रही भारी बारिश का असर अब पंजाब में दिखने लगा है। राज्य के 7 जिले बाढ़ की चपेट में आ गए हैं। रणजीत सागर डैम और भाखड़ा डैम से लगातार पानी छोड़े जाने से रावी, सतलुज और ब्यास नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। बढ़ते खतरे को देखते हुए जालंधर, कपूरथला, पठानकोट और गुरदासपुर जिलों के अलावा अमृतसर के अजनाला और रईया ब्लॉक के स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी गई है। वहीं, फाजिल्का के 20 बाढ़ग्रस्त गांवों के स्कूल अगले आदेश तक बंद रहेंगे। तरनतारन और फिरोजपुर में हरिके हेडवर्क्स से छोड़े गए पानी के कारण बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। इस बीच, ब्यास नदी पर बने चक्की रेलवे पुल के नीचे से मिट्टी धंस जाने के कारण पठानकोट-जालंधर रेलवे रूट बंद कर दिया गया है। इसके चलते करीब 90 ट्रेनें प्रभावित हुई हैं। कुछ ट्रेनों का रूट बदलकर पठानकोट-अमृतसर-जालंधर के रास्ते से संचालन किया जा रहा है। बाढ़ग्रस्त इलाकों में राहत और बचाव कार्य जारी है। हेलिकॉप्टर की मदद से अब तक 6 लोगों को सुरक्षित निकाला गया है। वहीं, कई स्थानों पर बांध टूटने और निचले इलाकों में पानी भरने से हालात और बिगड़ सकते हैं।

गौहत्या के आरोपी को जमानत देने से इंकार, पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट का अहम फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट ने गौहत्या के एक मामले में आरोपी आसिफ को जमानत देने से इंकार किया है। जस्टिस संदीप मुद्गिल की बेंच ने फैसले में कहा कि आसिफ आदतन अपराधी है और उसने पहले भी मिली छूट का गलत फायदा उठाया है। कोर्ट ने बताया कि आसिफ पहले भी गौहत्या के आरोप का सामना कर चुका है। बार-बार इस तरह के अपराध करना न केवल कानून के खिलाफ है, बल्कि यह भारत की संवैधानिक और सांस्कृतिक संरचना के लिए भी खतरा है। कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि भारत में गाय को पवित्र माना जाता है और उसकी हत्या करने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। बात दें कि आसिफ के खिलाफ 3 अप्रैल, 2025 को नूंह सदर पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज की गई थी। पुलिस ने एक गाड़ी से दो गायों को बरामद किया था, जिन्हें कथित तौर पर कत्ल के लिए राजस्थान ले जाया जा रहा था। पुलिस को गाड़ी से चाकू और कुल्हाड़ी भी मिली थीं, जिससे यह अनुमान लगाया गया कि गायों को मारने के लिए ही ले जाया जा रहा था। इस मामले में तसलीम, अमन और आसिफ नाम के तीन लोग शामिल थे। पुलिस की कार्रवाई के दौरान आसिफ मौके से फरार हो गया था। आसिफ ने अमन की तरह जमानत की मांग की थी, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा कि जो व्यक्ति लगातार नियमों का उल्लंघन करता है, उस ऐसी सुविधा नहीं दी जा सकती। पुलिस ने इन आरोपियों के खिलाफ हरियाणा गोवंश संरक्षण और गोसंवर्धन ऐक्ट, 2015 और पशु क्रूरता अधिनियम, 1960 के तहत मामला दर्ज किया था।

कोटदीप मोहल्ले में, जमीन में गहरी दरारें.....100 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित धराली में आपदा प्रभावितों की परेशानियां कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। हाल ही में, थराली बाजार के ऊपर, कोटदीप मोहल्ले में, ज़मीन में गहरी दरारें पड़ गई हैं, जिससे वहां के निवासियों में भय का माहौल है। प्रशासन ने स्थिति की गंभीरता को देखकर 100 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया है। थराली-डुंगी मोटर मार्ग और उसके आस-पास की ज़मीन में चौड़ी दरारें आ गई हैं। चूंकि कोटदीप के ठीक नीचे थराली का मुख्य बाजार है, जिसमें कई इमारतें हैं, इसलिए प्रशासन ने कोई जोखिम नहीं लिया और क्षेत्र को खाली करवा दिया है। जिला मजिस्ट्रेट डॉ. संदीप तिवारी के अनुसार, इन दरारों और भूस्खलन के कारणों का पता लगाने के लिए एक वैज्ञानिक टीम द्वारा अध्ययन किया जा रहा है। भूस्खलन के खतरे को देखते हुए, थराली में चिकित्सा विभाग के आवासीय भवन, तहसील के एसडीएम रिकॉर्ड रूम, और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेजों को भी सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित कर दिया गया है। आपदा प्रभावित क्षेत्रों, खासकर चेपड़ों में, एसडीआरएफ और तहसील प्रशासन की टीमें मलबे को हटाने का काम कर रही हैं। हालाँकि, चेपड़ों से एनडीआरएफ और सेना की टीमें वापस लौट गई हैं। आर्थिक सहायता- पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुके 8 घरों के मालिकों को 40.35 लाख रुपये की सहायता राशि दी गई है। इस आपदा में 47 दुकानें, 8 घर, और 4 गौशालाएं पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई हैं। इसके अलावा, 38 दुकानें, 15 घर, और 11 घर और 79 दुकानें हैं जिनमें मलबा घुस गया है। 26 वाहन भी क्षतिग्रस्त हुए हैं। चेपड़ों क्षेत्र में बिजली और पानी की सुविधा को फिर से शुरू कर दिया गया है, लेकिन जल संस्थान की 14 योजनाएं अभी भी क्षतिग्रस्त हैं।

देश के खाते में एक साल का खर्च चलाने के बराबर रुपया, जो आपात स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त

-आरबीआई गवर्नर ने कहा- भारत जल्द तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा है कि भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। साथ ही उन्होंने जरूरी चीजों पर भी फोकस किया और बताया कि आगे कौन-कौन सी चुनौतियां आने वाली हैं, जिनसे निपटने के बाद ही भारत यह रुतबा हासिल कर सकता है। आरबीआई गवर्नर ने बताया कि देश के खाते में एक साल का खर्च चलाने के बराबर रुपया है, जो किसी आपात स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त है।

आरबीआई गवर्नर ने कहा कि वैसे तो भारतीय अर्थव्यवस्था ने पिछले कुछ समय से बहुत कुछ हासिल किया है, लेकिन आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उन्होंने कहा कि हमारी इकनॉमी पिछले 4 साल में 8 फीसदी सीएजीआर के हिसाब से बढ़ रही है, जबकि महंगाई दर पिछले एक दशक में 4.9 फीसदी की औसत दर पर बनी हुई है। सेवा निर्यात और विदेश से धन भेजे जाने की वजह से देश में विदेशी मुद्रा का भी प्रवाह बढ़ा है। फिलहाल हम वित्तीय स्थिति को स्थिर बनाए रखने पर जोर दे रहे हैं।

गवर्नर की मानें तो अभी देश के विदेशी मुद्रा भंडार 695 अरब डॉलर है, जो किसी भी आपात स्थिति में 11 महीने के आयात खर्च को चलाने के लिए काफी है। देश में चालू खाते का घाटा इस समय जीडीपी के महज 0.6 फीसदी के बराबर है, जो हमारी मजबूत आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। यह स्थिति सही नीतिगत फैसलों और ढांचागत सुधारों की वजह से आई है, जिसका फायदा पूरी अर्थव्यवस्था को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा फोकस ग्राहकों की सुरक्षा के साथ ग्रोथ करने पर है और इस बैलेंस को बनाना ही सबसे मुश्किल काम है।

भारत अभी दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है और जीडीपी का आकार करीब 4.3 ट्रिलियन डॉलर का है। अनुमान है कि यह साल 2030 से पहले ही जर्मनी को पीछे छोड़कर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इस बारे में आरबीआई गवर्नर के दावे से पहले ही ग्लोबल फर्म मॉर्गन स्टेनली ने दावा किया था कि भारत साल 2027-28 तक यह लक्ष्?य हासिल कर सकता है। हालांकि एसएंडपी का मानना है कि भारत को इस लक्ष्य तक पहुंचने में 2030 तक का समय लग सकता है, जिसके लिए उसे अपनी अर्थव्यवस्था का आकार दोगुना बढ़ाकर 7 से 10 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाना होगा। यह लक्ष्य 6 से 7 फीसदी विकास से हासिल हो जाएगा। भारत में तीसरी बड़ी इकनॉमी बनने के लिए सभी जरूरी क्षमताएं हैं। उसकी ग्लोबल इकनॉमी में हिस्सेदारी बढ़कर 20 फीसदी से भी ज्यादा पहुंच गई है। भारत की विकास दर अभी दुनिया में सबसे ज्यादा है, जिसे महंगाई में नरमी, बेहतर कैश इनफ्लो और रूरल इकनॉमी की वृद्धि से भी समर्थन मिल रहा है। इसके अलावा दुनिया की सबसे बड़ी आबादी होने के कारण भारत एक बड़ा घरेलू बाजार भी है। इससे उपभोग बढ़ेगा और मैन्युफैक्चरिंग में उछाल आने से जीडीपी का आकार भी बढ़ता जाएगा। अभी जीडीपी में विनिर्माण क्षेत्र का 15.6 फीसदी हिस्सा है, जो अगले कुछ साल में 21 फीसदी से ज्यादा हो जाएगा।

आप नेता सौरभ भारद्वाज के घर ईडी ने की छापेमारी, 13 जगहों पर तलाशे घोटाले के प्रमाण

नई दिल्ली (एजेंसी)। अस्पताल निर्माण में हुए कथित घोटाले को लेकर ईडी ने आप नेता सौरभ भारद्वाज के 13 ठिकानों पर छापेमारी की। पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल समेत आप के कई नेताओं पर अलग-अलग मामलों में ईडी शिकंजा कस चुकी है। यह पहली बार है जब केंद्रीय जांच एजेंसी सौरभ भारद्वाज तक पहुंची है। दिल्ली सरकार ने वर्ष 2018-19 में 5,590 करोड़ रुपये की लागत से 24 अस्पताल परियोजनाओं को मंजूरी दी गई थी। आरोप है कि इन परियोजनाओं में बेवजह देरी की गई और इनकी लागत में अत्यधिक वृद्धि हुई। आम आदमी पार्टी इसमें किसी तरह के भ्रष्टाचार के आरोप से इनकार करती रही है। पार्टी का कहना है कि उनके नेताओं को बेवजह फंसाया जा रहा है। सत्येंद्र जैन के जेल जाने के बाद सौरभ भारद्वाज को दिल्ली सरकार में मंत्री बनाया गया था और उन्हें स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी दी गई थी। सौरभ पार्टी के तेज तर्रार प्रवक्ता भी हैं और अरविंद केजरीवाल समेत कई बड़े नेताओं के जेल में बंद रहने पर सौरभ और आतिशी ने सरकार और पार्टी का कामकाज संभाला था। बताया जा रहा है कि सुबह ही ईडी की एक टीम सौरभ भारद्वाज के आवास पर पहुंची। कड़ी सुरक्षा के बीच टीम ने उनके घर दस्तावेजों को खंगालना शुरू कर दिया। दिल्ली सरकार की भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) ने आप सरकार के दौरान हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रॉजेक्ट्स में कथित घोटालों को लेकर पूर्व मंत्रियों सौरभ भारद्वाज और सत्येंद्र जैन के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में कथित मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों की जांच ईडी कर रही है। इसी सिलसिले में 13 जगहों पर छापेमारी की गई है।

उपराष्ट्रपति का चुनाव 'सिद्धांतों' की लड़ाई है हार-जीत की नहीं: अखिलेश यादव

लखनऊ (एजेंसी)। 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस यानि इंडिया गठबंधन के प्रमुख घटक समाजवादी पार्टी के मुखिया एवं उप्र के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि उपराष्ट्रपति पद का आगामी चुनाव हार-जीत की नहीं, बल्कि 'सिद्धांतों' की लड़ाई है और उम्मीद जताई कि न्याय के पक्षधर सभी दलों के सदस्य अपनी ''अंतरात्मा'' की आवाज पर 'इंडिया' गठबंधन के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करेंगे।

मंगलवार को लखनऊ दौरे पर आए इंडिया की तरफ से उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार एवं उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायामूर्ति बी. सुदर्शन रेड्डी का सपा कार्यालय में स्वागत करने के बाद आयोजित संवाददाता सम्मेलन में सपा मुखिया अखिलेश यादव ने कहा कि आज जिन राजनीतिक परिस्थितियों में उपराष्ट्रपति पद का चुनाव हो रहा है और हम जिस न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं, उसके लिए एक न्यायमूर्ति से बेहतर विकल्प क्या हो सकता है। उन्होंने कहा कि हमें उम्मीद है कि जो लोग न्याय के पक्षधर हैं, वे अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर हमारे प्रत्याशी के पक्ष में वोट डालेंगे। साथ ही उन्होंने आरोप भी लगाया कि भारतीय जनता पार्टी उपराष्ट्रपति जैसे उच्च संवैधानिक पद को एक विशेष विचारधारा से जोड़ना चाहती है, जो देशहित में नहीं है। इस मौके पर कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष अजय राय और पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रमोद तिवारी भी उपस्थित थे। उपराष्ट्रपति का चुनाव नौ सितंबर को होगा। यह पद जगदीप धनखड़ के हाल में इस्तीफा देने के बाद रिक्त हुआ है। सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने इस चुनाव में पूर्व सांसद सी.पी. राधाकृष्णन को अपना उम्मीदवार बनाया है।

अगर उनका पूरा खानदान भी बिहार आ जाए... तब भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा

वोट अधिकार यात्रा पर उपमुख्यमंत्री सिन्हा का तंज

पटना(एजेंसी)। बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा के मतदाता अधिकार यात्रा में शामिल होने पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता उन सभी लोगों को सबक सिखाएगी जिन्होंने कभी राज्य को अराजकता, पलायन और जंगलराज की ओर धकेल दिया था। उपमुख्यमंत्री सिन्हा ने कहा, यह लोग कितनी भी कोशिश कर लें, बिहार की जनता इनके झांसे में नहीं आने वाली हैं, बल्कि उन्हें सबक सिखाएगी। जिन्होंने बिहारी को गाली बनाया, बिहार को बर्बाद किया, बिहारियों को पलायन के लिए विवश किया, अराजकता और जंगलराज को बढ़ावा दिया, उन्हें बिहार की जनता जवाब देगी। उन्होंने कहा कि जंगलराज के दौर में जिन लोगों ने उग्रवाद को पोषित किया और गुंडाराज को पाला, वे आज लोकतंत्र और वोट के अधिकार की दुहाई दे रहे हैं। उपमुख्यमंत्री सिन्हा ने कटाक्ष कर कहा, अगर उनका पूरा खानदान भी बिहार में आ जाए, तब भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इसके साथ ही डिप्टी सीएम सिन्हा ने अमेरिका द्वारा भारत पर टैरिफ की अधिसूचना जारी करने के मुद्दे पर भी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, भारत आत्मनिर्भर है और स्वाभिमान के साथ जीता है। चिंता की कोई बात नहीं है।

बता दें, प्रियंका गांधी वाड्रा कांग्रेस नेता राहुल गांधी के साथ सुपौल में चल रही वोटर अधिकार यात्रा में शामिल हुईं। बिहार में 17 अगस्त से जारी कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा मंगलवार को सुपौल पहुंची। इस दौरान प्रियंका गांधी वाड्रा के साथ तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी भी यात्रा का हिस्सा बने। प्रियंका गांधी वाड्रा बुधवार को भी राहुल गांधी के साथ बिहार में यात्रा निकालेंगी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव

(संगठन) केसी वेणुगोपाल के अनुसार, कांग्रेस सांसद प्रियंका वाड्रा बुधवार को सीतामढ़ी में जानकी मंदिर में पूजा-अर्चना करने भी जाएंगी।

घर जा रहे राजद नेता की गोली मारकर हत्या, क्षेत्र में तनाव, पुलिस बल तैनात

हाजीपुर। वैशाली जिले के पकौली में सोमवार देर रात रिटायर्ड बिजली कर्मी और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रखंड महासचिव शिव शंकर सिंह की अज्ञात लोगों ने गोली मारकर हत्या कर दी। घटना रात करीब 11 बजे की है, जब शिव शंकर अपने पुराने घर भैरोपुर से पकौली में बने नए घर जा रहे थे। घात लगाए अपराधियों ने उन पर ताबड़तोड़ चार गोलियां चलाई जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल से चार खोखे बरामद किए। परिजनों का कहना है कि उनकी किसी से दुश्मनी नहीं थी। वहीं, इस घटना से इलाके में तनाव है और लोग कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। बिदुपुर थाना के एसएचओ ने बताया कि शुरुआती जांच में हत्या का मकसद साफ नहीं हुआ है। अपराधियों की पहचान के लिए पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है और संदिग्धों से पूछताछ जारी है। पुलिस ने इलाके में अतिरिक्त बल तैनात कर कर दिया स्थिति नियंत्रित में है। वहीं, शिव शंकर के परिजनों ने बताया कि वह रिटायरमेंट के बाद जमीन की खरीद-बिक्री का काम करते थे। उनका एक बेटा बैंक में मैनेजर है। पांच साल पहले उन्होंने पकौली में नया घर बनवाया था। उनकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। परिवार ने अपराधियों की गिरफ्तारी और कड़ी कार्रवाई की मांग की है। शिव शंकर सिंह राजद के सक्रिय प्रखंड महासचिव थे और उनकी हत्या ने बिहार की सियासत को गर्म दिया है। बता दें वैशाली में पहले भी राजद नेताओं और कार्यकर्ताओं पर हमले की घटनाएं सामने आ चुकी हैं, जिसके कारण यह हत्याकांड राजनीतिक रंग ले सकता है। स्थानीय लोगों और राजद समर्थकों में इस घटना को लेकर भारी आक्रोश है। स्थानीय लोग और राजद कार्यकर्ता सड़कों पर उतर आए हैं और हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। वैशाली के एसपी ने कहा कि एसआईटी का गठन किया गया है जो जल्द ही अपराधियों को गिरफ्तार कर लेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष का शुभारंभ किया, दिल्ली में होगा तीन दिवसीय कार्यक्रम

-कई देशों के राजनयिकों को आमंत्रित किया गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने 26 अगस्त से अपने शताब्दी वर्ष का शुभारंभ किया। इस मौके पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में तीन दिवसीय व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन हुआ है। इस विशेष कार्यक्रम का विषय आरएसएस की 100 वर्ष की यात्रा- नए क्षितिज है। इसी कड़ी में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने विज्ञान भवन में तीन दिवसीय व्याख्यान श्रृंखला के साथ शताब्दी समारोह की शुरुआत की। यह श्रृंखला 26 से 28 अगस्त तक चलेगी, जिसमें हर शाम चर्चाएं होंगी।

भागवत आरएसएस की 100 वर्ष की यात्रा- नए क्षितिज विषय पर अपने विचार प्रकट करने वाले हैं। वे इस बात पर जोर देने वाले हैं कि स्वयंसेवक स्वयं को कैसे देखते हैं, संगठन के बारे में फैली भ्रांतियों को दूर करने और उन समूहों से भी संपर्क करने का प्रयास होगा, जो आजतक आरएसएस से दूरी बनाए हुए हैं। आरएसएस सूत्रों के अनुसार, कई देशों के राजनयिकों को आमंत्रित किया गया है। इस चर्चा में विभिन्न क्षेत्रों के लोग शामिल होने वाले हैं, जिन्हें 17 मुख्य समूहों और 138 उप-श्रेणियों में बांटा गया है। इसमें कला, खेल, न्यायपालिका, नौकरशाही, कूटनीति, राजनीति, विचारक, मीडिया, स्टार्टअप और प्रभावशाली व्यक्ति शामिल हैं। करीब 2000 लोगों के शामिल होने की उम्मीद है।

50 से अधिक विदेशी दूतावासों को निमंत्रण

पहले दिन (26 अगस्त) आरएसएस की 100 साल की यात्रा पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। दूसरे दिन इसके भविष्य के दृष्टिकोण पर चर्चा होगी, जबकि तीसरे दिन मोहन भागवत के साथ एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र होगा। आरएसएस ने अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान, नेपाल, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण अफ्रीका और कई मुस्लिम बहुल देशों सहित 50 से अधिक विदेशी दूतावासों को आमंत्रित किया है। हालांकि, पाकिस्तान और बांग्लादेश के दूतावासों को निमंत्रण नहीं भेजा गया है।

मेहमानों की सूची में भाजपा के पारंपरिक हलकों से इतर नेता भी शामिल हैं। इसमें केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू, ज्योतिरादित्य सिंधिया, अपना दल की नेता और केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल, जदयू नेता केसी त्यागी और संजय झा, तथा टीडीपी के केंद्रीय उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू शामिल हैं। कांग्रेस सहित विपक्षी नेताओं को भी निमंत्रण भेजा गया है। संघ ने अल्पसंख्यक समुदायों, जैसे मुसलमानों, ईसाइयों, सिखों और बौद्धों से भी संपर्क किया है और उन्हें आमंत्रित किया है। आरएसएस के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने कहा कि हमने कांग्रेस सहित हर राजनीतिक दल के नेताओं को आमंत्रित किया है। दिल्ली में आयोजित कार्यक्रमों के साथ-साथ भागवत शताब्दी समारोह के तहत प्रमुख भारतीय शहरों में चार व्याख्यानों की श्रृंखला है। नवंबर में बेंगलुरु, फिर कोलकाता और फरवरी में मुंबई में ये व्याख्यान आयोजित होने है।

कपिल ने कसा तंज कहा- बस इतना बता दीजिए साहब.. धनखड़ अस्पताल में हैं या योग कर रहे?

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कपिल सिब्बल ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर तंज कसा है। उन्होंने चुटीले अंदाज में पूछा है कि साहब ज्यादा कुछ नहींज्बस इतना बता दीजिए कि पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ कहां है। वे किसी अस्पताल में इलाज करा रहे हैं या फिर कहीं योगा कर रहे हैं। सिब्बल ने इस बारे में सोशल मीडिया पर लापता धनखड़ शीर्षक दे अमित शाह से सवाल पूछे हैं। सिब्बल ने लिखा है, लापता धनखड़ज अमित शाह जी- मुझे मालूम है कि आप असत्य से दूर रहते हैं। हमें इतना तो बता दीजिए कि धनखड़ जी क्या- हॉस्पिटल में हैं या फिर योग कर रहे हैं? या फिरटेबल टेनिस खेल रहे हैं?

हाल ही में अमित शाह ने जगदीप धनखड़ के इस्तीफे पर खुलकर बात की थी और कहा था कि उन्होंने अपने स्वास्थ्य के चलते उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिया था और इसमें किसी को कुछ खोजने की जरूरत नहीं है। लगे हाथ शाह ने कहा था कि संवैधानिक पद पर रहते हुए धनखड़ जी ने अच्छा काम किया था। बता दें कि धनखड़ ने 21 जुलाई को स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए अचानक उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया था। उपराष्ट्रपति के रूप में धनखड़ का कार्यकाल 10 अगस्त 2027 को समाप्त होना था। अब उनके उत्तराधिकारी को चुनने के लिए नौ सितंबर को चुनाव होने हैं। केंद्र में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया है, जबकि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' ने उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश बी सुदर्शन रेड्डी को उनके खिलाफ मैदान में उतारा है।

कछ दिनों पहले ऐसी खबर आई थी कि पिछले महीने उपराष्ट्रपति पद से अचानक इस्तीफा देने वाले जगदीप धनखड़ अपने परिवार के साथ समय बिताने के साथ ही नियमित रूप से योगाभ्यास कर रहे हैं और टेबल टेनिस खेल रहे हैं। अगस्त 2022 में उपराष्ट्रपति निर्वाचित होने से पहले धनखड़ जब पश्चिम बंगाल के राज्यपाल थे, तब उन्होंने शौकिया टेबल टेनिस खेलना शुरू किया था। धनखड़ की दिनचर्या से वाकिफ लोगों ने बताया कि वह नियमित रूप से योग अभ्यास करते हैं और उपराष्ट्रपति एनक्लेव में अपने शुभचिंतकों व स्टाफ सदस्यों के साथ टेबल टेनिस खेलते हैं। पूर्व उपराष्ट्रपति की दिनचर्या से अवगत एक व्यक्ति ने बताया, यहां तक ??कि यात्रा से लौटने के बाद भी वह अपने स्टाफ सदस्यों के साथ टेबल टेनिस खेलते थे।

चीन के सबसे बड़े बांध निर्माण के बाद एक्शन में भारत... अरुणाचल प्रदेश में डैम बनाने की तैयारी में

-विरोध कर रहे आदिवासियों को समझाने में जुटी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन द्वारा तिब्बत में एक विशाल बांध का निर्माण भारत के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गया है, इससे भारत सरकार को कार्रवाई करने के लिए प्रेरित होना पड़ा है। यह बांध यारलुंग जांगबो नदी पर बन रहा है, इस भारत में सियांग और ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है। इस नदी का पानी भारत, चीन और बांग्लादेश में 10 करोड़ से भी ज़्यादा लोगों के जीवन का आधार है।

भारत को यह डर है कि चीन सूखे के मौसम में नदी के बहाव को 85 प्रतिशत तक कम कर सकता है। इससे भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में पानी की भारी कमी हो सकती है, जिसका असर कृषि, उद्योगों और आम लोगों पर पड़ेगा। इतना ही नहीं चीन का यह बांध 40 अरब घन मीटर पानी रोक सकता है, जो सालाना पानी का एक तिहाई है। गैर-मानसून महीनों में यह कमी और भी गंभीर होगी। वहीं, अचानक पानी छोड़े जाने से भारत के निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ जाएगा। चीन इस बांध के माध्यम से नदी के पानी पर नियंत्रण कर सकता है, जिससे भारत पर दबाव बनाने की उसकी क्षमता बढ़ जाएगी। यह भारत के लिए एक रणनीतिक खतरा है।

भारत की जवाबी रणनीति

इस खतरे से निपटने के लिए भारत ने अरुणाचल प्रदेश में अपर सियांग मल्टीपर्पस स्टोरेज डैम का निर्माण तेज़ी से करने की योजना बनाई है। इस डैम की क्षमता 14 अरब घन मीटर होगी और यह चीन के डैम के प्रभाव को कम करने में मदद कर सकता है। यह डैम सूखे के मौसम में पानी की आपूर्ति को सुनिश्चित कर सकता है, जिससे गुवाहाटी जैसे बड़े शहरों को पानी की कमी से बचाया जा सकेगा। यह डैम चीन द्वारा अचानक छोड़े गए पानी को रोककर बाढ़ के खतरे को कम कर सकता है। भारत अपने डैम का 30 प्रतिशत हिस्सा खाली रखने पर विचार कर रहा है ताकि आपातकालीन स्थिति में पानी को संभाला जा सके। भारत सरकार इस परियोजना को जल्द से जल्द पूरा करना चाहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस पर एक बैठक की थी। लेकिन इस रास्ते में कुछ बड़ी चुनौतियाँ भी हैं।

दरअसल अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय आदि समुदाय इस डैम का कड़ा विरोध कर रहे हैं। उनका मानना है कि इस डैम के जलाशय में करीब 16 गाँव डूब जाएँगे, जिससे करीब 10,000 लोग सीधे तौर पर प्रभावित हो रहे है। कुछ विशेषज्ञों को आशंका है कि इस इलाके में पानी का विशाल भंडारण भूकंप का कारण बन सकता है, जिससे बाढ़ की वजह से बड़ी तबाही हो सकती है।

अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडु इस डैम का समर्थन करते हैं और चीन के खतरे के खिलाफ एक ज़रूरी कदम मानते हैं। मोदी सरकार ने प्रभावित परिवारों के लिए मुआवजे की बातचीत भी शुरू कर दी है, लेकिन स्थानीय लोगों का

विरोध अभी भी एक बड़ी बाधा बना हुआ है।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के गेट पर ही मिलेगा अनारक्षित टिकट

नई दिल्ली। अनारक्षित टिकट लेने के लिए यात्रियों को होने वाली परेशानी दूर होगी। रेलवे प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा के लिए गेट पर ही मोबाइल-अनारक्षित टिकट प्रणाली (एम-यूटीएस) सहायकों की तैनाती का निर्णय लिया है। ये लोग यात्रियों को मौके पर ही टिकट उपलब्ध कराएंगे। पायलट प्रोजेक्ट के रूप में इस योजना की शुरुआत नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से होगी। सफलता मिलने के बाद इसे अन्य बड़े स्टेशनों पर भी लागू किया जाएगा। एम-यूटीएस सहायक मोबाइलनुमा एक मशीन के जरिए यात्रियों का गंतव्य पूछकर वहीं पर अनारक्षित टिकट प्रिंट कर दे देंगे। इसके लिए रेलवे प्रशासन ने आवेदन आमंत्रित किए हैं और अगले माह तक चयन की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी। चयनित सहायकों को प्रशिक्षण देकर स्टेशन पर तैनात किया जाएगा। अधिकारियों का कहना है कि इस व्यवस्था से यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी। उन्हें काउंटर या मशीनों के सामने लाइन में खड़े होने की जरूरत नहीं होगी। साथ ही बेटिकट यात्रियों को रोकने में भी मदद मिलेगी। प्लेटफार्म पर प्रवेश करने से पहले ही टिकट जांच की जाएगी और जिनके पास टिकट नहीं होगा, उन्हें मौके पर ही टिकट जारी किया जाएगा।

छात्रों के नाम काटने पर निजी स्कूल को कारण बताओ नोटिस

नई दिल्ली। बढ़ी फीस का भुगतान न करने पर स्कूली छात्रों के नाम काटने पर सोमवार को शिक्षा निदेशालय ने मयूर विहार विहार फेज-3 स्थित निजी स्कूल को कारण बताओ नोटिस जारी किया। निदेशालय के जोन-2 के उप शिक्षा निदेशक कार्यालय के नोटिस में स्कूल प्रबंधक को छात्रों के नाम न काटने के निर्देश दिए गए हैं। इसके लिए निदेशालय ने नियम 35(4) का हवाला दिया है। इस नियम के अनुसार जिनके माता-पिता ने बढ़ी हुई फीस का बकाया भुगतान नहीं किया है जो विभाग द्वारा मंजूर नहीं है, स्कूल उन छात्रों के नाम नहीं काट सकता है।

ये तकनीकी पहल विकसित दिल्ली के विजन को पूरा करेंगी: परवेश साहिब सिंह

कौमी पत्रिका

नई दिल्ली, 26 अगस्त। माननीय लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) मंत्री परवेश साहिब सिंह ने भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू-सूचना संस्थान (बीआईएसएजी-एन) और पीडब्ल्यूडी अधिकारियों के साथ बैठक में दिल्ली की सड़कों के बेहतर प्रबंधन और सुरक्षा के लिए तकनीकी समाधानों के एकीकरण पर जोर दिया। सड़क संपत्ति मैपिंग, परियोजना निगरानी प्रणाली, गड्ढों और जलभराव डैशबोर्ड, डार्कस्पॉट निगरानी और स्ट्रीट लाइट ट्रैकिंग प्रणाली महत्वपूर्ण नागरिक-केंद्रित पहल हैं, जिन्हें माननीय मंत्री ने जल्द से जल्द शुरू करने के आदेश दिए। यह राजधानी में कुशल, पारदर्शी और जवाबदेह बुनियादी ढांचा सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है। पीडब्ल्यूडी दिल्ली की सड़कों के प्रभावी प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है। ये डिजिटल प्लेटफार्म हमें वास्तविक समय में निगरानी, त्वरित प्रतिक्रिया और दीर्घकालिक समाधानों में मदद करेंगे, जिससे आम लोग हर कदम पर सुरक्षा और सुविधा का अनुभव कर सकें, परवेश साहिब सिंह ने कहा। बैठक में, मंत्री ने पीडब्ल्यूडी सड़क संपत्ति मैपिंग एप्लिकेशन की समीक्षा की, जो निर्माणाधीन है। यह समाधान सभी सड़क संपत्तियों का

जियो-टैगिंग के साथ डिजिटल इन्वेंट्री बनाएगा। बैठक के दौरान, एक परियोजना निगरानी प्रणाली की समीक्षा की गई, जो ?1 करोड़ से अधिक की महत्वपूर्ण पीडब्ल्यूडी परियोजनाओं की निगरानी करेगी। यह प्रणाली अधिकारियों को प्रगति की निगरानी करने, समस्याओं की पहचान करने और हितधारकों से वास्तविक समय के अपडेट के साथ सुधारात्मक कार्रवाई करने में सक्षम बनाएगी। परवेश साहिब सिंह ने कहा कि यह प्रणाली परियोजनाओं को समय पर, कुशलता और पूर्ण पारदर्शिता के साथ पूरा करने में सुनिश्चित करेगी, जिससे नागरिकों को सीधे लाभ होगा। मंत्री ने खराब स्ट्रीट लाइट्स की वास्तविक समय में निगरानी के लिए प्रस्तावित डिजिटल तंत्र की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि यह प्रणाली दिल्ली पुलिस, निर्वाचित प्रतिनिधियों और नागरिकों से प्राप्त रिपोर्टों को एकीकृत करेगी, जिससे तेजी से मरम्मत और सुरक्षित सड़कें सुनिश्चित होंगी। यह पहल दिल्ली के लोगों के कल्याण के लिए अंतर-विभागीय प्रयासों, सहयोग और अच्छे शासन की भावना को दर्शाती है, श्री परवेश साहिब सिंह ने कहा। सुरक्षा संबंधी चिंताओं को संबोधित करते हुए, मंत्री ने कहा कि एक डार्क स्पॉट मॉनिटरिंग सिस्टम विकसित किया जा रहा है, जो बिना स्ट्रीट लाइट वाले क्षेत्रों को डिजिटल रूप से कैप्चर करेगा। यह प्लेटफ़ॉर्म दिल्ली में सार्वजनिक सुरक्षा बढ़ाने के लिए डार्क स्पॉट क्षेत्रों में सुधार की प्रक्रिया को तेज करेगा। गड्ढों और जलभराव की शिकायतों के लिए एक डैशबोर्ड भी बनाया जा रहा है, जहां नागरिकों, विभागों और सार्वजनिक प्रतिनिधियों की रिपोर्टों को तुरंत ट्रैक किया जाएगा और उनका समाधान किया जाएगा। ये तकनीकी पहल दिल्ली की सड़कों को सुरक्षित, कुशल और नागरिकों की जरूरतों के प्रति जवाबदेह बनाकर विकसित दिल्ली के विज़न को पूरा करेंगी, परवेश साहिब सिंह ने कहा।

सीबीआई अधिकारी बनकर बुजुर्ग महिला से उड़ाए लाखों के गहने

नई दिल्ली। विकासपुरी इलाके में सीबीआई अधिकारी बनकर बदमाशों ने बुजुर्ग महिला से लाखों के गहने ठग लिए। इलाके में वारदात होने की जानकारी देकर बदमाशों ने महिला से उसके गहने उतरवा लिए। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने ठगी का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस बदमाशों की पहचान करने में जुटी है। विकासपुरी निवासी 68 साल की रजनी मलोचा ने बताया कि 22 अगस्त की दोपहर एफ ब्लॉक स्थित बैंक गई थीं। वहां से वह घर जा रही थी। सेंट स्टीलिया स्कूल के पास बाइक पर सवार तीन युवक उनके पास आकर रुके। एक युवक ने खुद को सीबीआई का अधिकारी बताते हुए कहा, कल इस इलाके में लूटपाट की वारदात हुई थी। ऐसे में बदमाश ने उन्हें सोने के गहने पहनकर जाने से मना किया।

दिल्ली बनेगी देश की ईवी कैपिटल, 2026 तक राजधानी में दौड़ेंगी 8,000 इलेक्ट्रिक बसें

नई दिल्ली। दिल्ली के परिवहन मंत्री ने कहा है कि फरवरी 2026 तक राजधानी की सड़कों पर 7,000 से 8,000 नई इलेक्ट्रिक बसें दौड़ेंगी। इसके साथ ही दिल्ली देश की इलेक्ट्रिक व्हीकल कैपिटल के रूप में अपनी पहचान और मजबूत करेगी। दिल्ली के परिवहन मंत्री पंकज सिंह ने कहा है कि फरवरी 2026 तक राजधानी की सड़कों पर 7,000 से 8,000 नई इलेक्ट्रिक बसें दौड़ेंगी। इसके साथ ही दिल्ली देश की इलेक्ट्रिक व्हीकल कैपिटल के रूप में अपनी पहचान और मजबूत करेगी। फिलहाल दिल्ली में करीब 3,400 इलेक्ट्रिक बसें हैं, जबकि मंत्री पद संभालने के समय यह संख्या सिर्फ 400 थी। पंकज सिंह ने बताया कि इस साल के अंत तक यह संख्या बढ़कर 6,000 तक पहुंच जाएगी। उन्होंने कहा, दिल्ली में रूट के हिसाब से 7,000 से 8,000 बसों की जरूरत है और हमें पूरा भरोसा है कि फरवरी तक हम यह लक्ष्य हासिल कर लेंगे। यह बयान उन्होंने सोमवार को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित इंडिया क्लीन ट्रांसपोर्टेशन समिट 2025 के दौरान दिया। बस बेड़े के विस्तार के साथ-साथ दिल्ली की देवी बसें भी शामिल होंगी, जो लास्ट-माइल कनेक्टिविटी को मजबूत करेंगी। पंकज सिंह ने बताया कि फरवरी तक दिल्ली की नई ईवी पॉलिसी 2.0 भी लॉन्च होगी। जिसमें खास तौर पर चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर पर ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने कहा, हम हाउसिंग सोसाइटी, फ्लाईओवर के नीचे और आउटर दिल्ली की खाली जमीन पर चार्जिंग पॉइंट बना रहे हैं। इसमें आरडब्ल्यूए (रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन) को शामिल किया जाएगा और पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल भी अपनाया जाएगा। नई पॉलिसी में पुराने वाहनों को स्क्रैप करना, रोड टैक्स और इंसेंटिव्स जैसे प्रावधान होंगे। यह नीति जनता को पसंद आएगी। मंत्री ने बताया कि दिल्ली नॉर्वे की राजधानी ओस्लो के अनुभवों से भी सीख लेगी। इसके लिए प्रस्तावित दिल्ली-ओस्लो स्मार्ट ट्रांसपोर्ट इनिशिएटिव शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा, ओस्लो से हमारी दोस्ती हमें बेहतरीन तकनीक तक पहुंचने में मदद करेगी और हम सही दिशा में आगे बढ़ पाएंगे। ओस्लो के क्लाइमेट डिपार्टमेंट के वाइस डायरेक्टर ऑड्न गारबर्ग ने कहा कि नॉर्वे ने भी शुरुआत में कई मुश्किलों का सामना किया। उन्होंने बताया, 2006-07 में हमारे पास पर्याप्त चार्जिंग पॉइंट नहीं थे, जिसकी वजह से ईवी अपनाना मुश्किल हो रहा था। लेकिन अब हमारे पास मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर है और अगली चुनौती ई-ट्रक और हाउसिंग कोऑपरेटिव्स में चार्जिंग सुविधा देना है।

21 साल जेल काटने वाले कैदी की रिहाई पर हाईकोर्ट का बड़ा फैसला, एसआरबी के फैसले को किया रद्द

नई दिल्ली। हाईकोर्ट ने 21 साल की सजा पूरी कर चुके कैदी की समयपूर्व रिहाई की याचिका पर सेंटेंस रिव्यू बोर्ड (एसआरबी) के फैसले को रद्द कर दिया। अदालत ने कहा कि एसआरबी का फैसला अपर्याप्त तर्कों पर आधारित है और इसमें अपराध की गंभीरता पर अत्यधिक जोर दिया गया है, जबकि कैदी के सुधार और पुनर्वास के पहलुओं को नजरअंदाज किया गया है। मामले को दोबारा विचार के लिए एसआरबी को भेज दिया गया है। न्यायमूर्ति संजीव नरूला की एकल पीठ ने 22 अगस्त 2025 को दिए गए फैसले में कहा कि एसआरबी ने नवीन अहुजा की रिहाई को अस्वीकार करते हुए अपराध की क्रूरता, समाज पर प्रभाव और पुलिस की आपत्ति को मुख्य आधार बनाया। कैदी के जेल में व्यवहार, सामाजिक जांच रिपोर्ट और प्रोबेशन अधिकारी की राय को उचित महत्व नहीं दिया। अदालत ने पूर्व के कई मामलों का हवाला देते हुए स्पष्ट किया कि अपराध की प्रकृति एक महत्वपूर्ण कारक है, लेकिन यह रिहाई अस्वीकार करने का एकमात्र आधार नहीं हो सकता। नवीन अहुजा को 2005 में कापसहेड़ा थाने में दर्ज एफआईआर के तहत अपनी पत्नी और दो नाबालिग बच्चों की हत्या के लिए दोषी ठहराया गया था। ट्रायल कोर्ट ने उन्हें मौत की सजा सुनाई थी, जिसे दिल्ली हाईकोर्ट ने 2012 में आजीवन कारावास में बदल दिया। सुप्रीम कोर्ट ने 2015 में अपील खारिज कर दी और 2020 में रिव्यू याचिका भी अस्वीकार कर दी। अदालत के अनुसार, अहुजा ने 24 मार्च 2025 तक 17 साल 11 महीने 21 दिन की वास्तविक सजा और छूट सहित 21 साल 4 महीने 8 दिन की सजा काट ली है। सामाजिक जांच रिपोर्ट में कहा गया कि अहुजा अब अपराध करने की क्षमता खो चुके हैं और समाज में उपयोगी सदस्य बन सकते हैं। हाईकोर्ट ने निर्देश दिया कि एसआरबी आठ सप्ताह के भीतर नई बैठक बुलाकर मामले पर पुनर्विचार करे और कानूनी सिद्धांतों के अनुरूप तर्कपूर्ण आदेश जारी करे।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में दिल्ली सुरक्षित हाथों में है: वीके सक्सेना

प्रथम पृष्ठ का शेष

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि देशभक्ति का अर्थ आज यह नहीं है कि केवल देश के लिए मरना पड़े, बल्कि हर नागरिक को प्रतिदिन यह सोचकर कार्य करना होगा कि वह अपने शहर व देश को स्वच्छ, सुरक्षित और प्रदूषणमुक्त बनाने में कितना योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे पास देश के लिए जीने और उसे आगेबढ़ाने का हर दिन अवसर है। जिस प्रकार इस विद्यालय ने इलेक्ट्रिक बसों को अपनी परिवहन फ्लीट में शामिल किया है, यह पहल न केवल प्रदूषण कम करने में सहायक होगी बल्कि बच्चों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना भी विकसित करेगी। उन्होंने सरदार पटेल विद्यालय के प्रबंधन, अध्यापकों और छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि विद्यालय ने स्वच्छ और हरित दिल्ली की दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

छात्र को तेज रफ्तार कार ने रौंदा...उछलकर दूर जा गिरा युवक

आगरा। आगरा-जगनेर मार्ग स्थित नगला गज्जा के पास शनिवार को हादसा हो गया। लाइब्रेरी में पढ़ने आए एक छात्र को सड़क पार करते समय तेज रफ्तार कार ने जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर से छात्र हवा में उछलकर दूर जा गिरा। गंभीर रूप से घायल हो गया। पूरी घटना पास लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। जानकारी के मुताबिक खेरागढ़ के गांव रिठौरी निवासी मनीष पुत्र राजपाल सिंह कागारौल में स्थित एक लाइब्रेरी में प?कर सिविल सेवा की तैयारी कर रहा है। शनिवार दोपहर करीब 3 बजे वह पढ़ने के लिए लाइब्रेरी पहुंचा था। सड़क पार करने के दौरान आगरा की ओर से कस्बा की तरफ आ रही तेज रफ्तार कार ने उसे अपनी चपेट में ले लिया। टक्कर इतनी भीषण थी कि छात्र उछलकर दूर जा गिरा और घायल हो गया। हादसा देख मौके पर मौजूद छात्रों में चीखपुकार मच गई। लोग मदद के लिए दौड़ पड़े। बताया जा रहा है कि कार सवार लोग कैला देवी के दर्शन को जा रहे थे। टक्कर के बाद कार सवारों ने गाड़ी रोककर घायल छात्र को अपनी कार से आगरा स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। यहां छात्र का इलाज जारी है।

बेहतर हॉस्टल के लिए जेएनयू छात्र संघ ने किया प्रदर्शन

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) छात्र संघ ने बेहतर हॉस्टल सहित दूसरी मांगों को लेकर सोमवार को डीन छात्र कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी छात्रों ने सभी डॉरमेट्री का नवीनीकरण, वाटर कूलर और वाई-फाई लगाने, पंखों और लाइट की मरम्मत करने, सभी को हॉस्टल आवंटित करने और बराक हॉस्टल में मेस की सुविधा शुरू करने की मांग की। छात्र संघ अध्यक्ष नीतीश कुमार ने कहा, हॉस्टल और डॉरमेट्री में बुनियादी सुविधाओं के लिए यह संघर्ष किया जा रहा है। हॉस्टल में सीलिंग टूटकर गिरने से लेकर बेड पर पंखा गिर जाने की घटनाएं सामने आ चुकी है। प्रशासन फंड न होने की बात कहता है। मगर, अधिकारियों के कमरे में कुर्सी बदलने और एसी लगाने के लिए उसके पास फंड है।

सार्वजनिक सूचना

यह सूचित किया जाता है कि श्री राघवेंद्र सिंह, पुत्र श्री बलिराम सिंह, आवासीय प्लॉट संख्या 2103, क्षेत्रफल 100 वर्ग गज, जो कि खसरा संख्या 2501मिन से संबंधित है तथा ग्राम करहेड़ा, परगना लोनी, तहसील एवं जिला गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश में स्थित है, के स्वामी हैं। श्री राघवेंद्र सिंह ने उक्त संपत्ति को श्री नरेश कुमार से बिक्री विलेख दिनांक 18.09.2023 के माध्यम से खरीदा था, जो दस्तावेज संख्या 9724 के रूप में पंजीकृत है। कृपया ध्यान दें कि मूल श्रृंखला दस्तावेज़ों में से एक गुम हो गया है — विशेष रूप से, बिक्री विलेख दस्तावेज़ संख्या 2917, पुस्तक संख्या 01, वॉल्यूम संख्या 5664, पृष्ठ संख्या 01–22, दिनांक 28.04.2009, एस.आर.-III गाज़ियाबाद में पंजीकृत। उपर्युक्त दस्तावेज़ की गुमशुदगी के संबंध में ऑनलाइन एफ.आई.आर. (लॉस्ट रिपोर्ट संख्या LAR 20250000616490) दिनांक 26.08.2025 को पुलिस कंप्यूटर केंद्र, टेक्निकल सर्विसेज मुख्यालय, लखनऊ में दर्ज कराई गई है। साथ ही कृपया यह भी ध्यान दें कि उक्त संपत्ति वर्तमान में कैन फिन होम्स लिमिटेड, शाखा- पीतमपुरा, नई दिल्ली के साथ बंधक की जा रही है। यदि किसी व्यक्ति को उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो, तो कृपया इस सूचना की तिथि से 07 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में प्रस्तुत करें। उक्त आपत्ति नीचे दिए गए पते पर पंजीकृत डाक के माध्यम से एवं ई-मेल द्वारा अधोहस्ताक्षरी को भेजी जा सकती है। यदि निर्दिष्ट अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होती है, तो उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी दावा अमान्य और निष्प्रभावी माना जाएगा।

[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122,
Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

NAME CHANGE

It is for general information that I, SURENDER KUMAR S/o JAGDISH PRASAD R/o E 20 A, Jawahar Park, Devli Road Khanpur, New Delhi, Dist. South Delhi, Delhi-110062, declare that name of mine has been wrongly written as SURINDRA KUMAR in my Service Record. The actual name of mine is SURENDER KUMAR, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I hitherto known as Mukesh Kumar alias Rajesh Kumar Thakur S/O Awadh Kumar Thakur C-311. Shalimar Garden.Ext-II. Sahibabad, PO: Sahibabad, DIST: Ghaziabad. Uttar Pradesh - 201005,have changed my name and shall hereafter be known as MUKESH KUMAR.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Gaurav Chauhan S/O: Ashok Kumar, R/O 76 G/F, Gaushala,Kishangarh, PO: Vasant Kunj, Vasant Vihar,South West Delhi, Delhi, 110070, declare that name of mine has been wrongly written as Gaurav in my Caste Certificate No SC/9/91/1416/8/6/2004/6395.The actual name of mine is GAURAV CHAUHAN, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I hitherto known as S K CHATTOPADHYAY alias SWAPAN KUMAR CHATTERJEE alias SWAPAN KUMAR CHATTOPADHYAY S/o NILKANTA CHATTOPADHYAY, R/o 114, Brahma Samaj Road, Behala, Kolkata, West Bengal-7000034, have changed my name and shall hereafter be known as SWAPAN KUMAR CHATTOPADHYAY.

NAME CHANGE

I hitherto known as MINASH DEVI D/o RAMMAN SINGH, and W/o MADAN SINGH, R/o Kalchhina, Kalchina, Ghaziabad, Uttar Pradesh-245304, have changed my name and shall hereafter be known as VINASH, for all future purposes.

NAME CHANGE

It is for general information that I, JAI MANGAL KUMAR S/O KAPIL PATEL R/O R-723, CAMP NO-5, JWALA PURI, SUNDER VIHAR, WEST DELHI, DELHI-110087, declare that name of mine and my minor son has been wrongly written as MANGALL KUMAR and MANISH KUMAR PATEL in my minor son MANISH KUMAR aged 14 years in his School Record. The actual name of mine and my minor son are JAI MANGAL KUMAR and MANISH KUMAR, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, Bal Mukund Gosain S/O Sant Lal Gosain R/O 45/5 East Patel Nagar Central Delhi 10008 Have changed my name to Bal Mukand Gosain for all future purposes.

NAME CHANGE

I, Punit Lamba R/O 195 Ist Floor Fateh Nagar New Delhi 110018, declare that name of my minor daughter's in her Birth certificate was wrongly mentioned as Veronika Lamba but correct name is Veronica Lamba for use all purpose

NAME CHANGE

It is for general information that I, POONAM DEVI W/O VIRENDER KUMAR, R/o H NO-454-B, CHIRAG DELHI, MALVIYA NAGAR, DELHI-110017, declare that name of mine has been wrongly written as POONAM in my minor son namely PARTH CHAUDHARY aged 13 years in his School Records. The actual name of mine is POONAM DEVI, which may be amended accordingly. It is certified that I have complied with other legal requirements in the connection

PUBLIC NOTICE
Cancellation of Power of Attorney

Notice is hereby given that 1, Iahwar Singh, S/o Late Shri Aflatoon, residing at F-97, Fatehpur Beri, New Delhi-110074, have revoked and cancelled the Power of Attorney dated 07/03/2019 in respect of property/plot bearing Khasra No. 1002 (04-04), 1001 (02-06), 995 (01-03), measuring approximately 1520 sq. yds., situated in Village Fatehpur Beri, New Delhi-110074, which was previously granted by me to Shri Ramkesh, S/o Shri Mangat Ram, residing at H.No. 106, Harswaroop Colony, Fatehpur Beri, New Delhi-110074, authorizing him to act on my behalf in personal, legal, financial, and/or property-related matters. It is further notified that the aforesaid property, i.e., Khasra No. 1002 (04-04), 1001 (02-06), 995 (01-03), measuring approximately 1520 sq. yds., does not belong to me, and the Power of Attorney was executed mistakenly. This cancellation is effective as of 25/08/2025. The said Power of Attorney is no longer valid, and any acts carried out by the aforementioned individual from this date forward are unauthorized and not binding upon me. This public notice is issued to inform all concerned parties, authorities, institutions, and the general public.

ISHWAR SINGH
F-97, FATEHPUR BERI,
NEW DELHI-110074

NAME CHANGE

It is for general information that I, RAJNATH YADAV S/o PUJARI YADAV permanent R/o 54, Akolha, Unchagaon, Deidiha, Gorakhpur, Uttar Pradesh-273409, and currently residing at H.No. D 60 A, Lajpatnagar Block D Sahibabad, D-Block Lajpat Nagar, P.S.-Sahibabad, Tehsil-Ghaziabad, Dist-Ghaziabad-201005, declare that name of mine and my wife have been wrongly written as RAJ NATH and SMT. RAMDHARI in my PPO No. 684471102214. The actual name of mine and my wife are RAJNATH YADAV and RAMDHARI DEVI respectively.

NAME CHANGE

I hitherto known as K L HURIA alias KRISHAN LAL HURIA alias KISHAN LAL alias KRISHAN LAL S/o CHANDER BHAN, R/o 53, Eklavya Vihar, Sec-13 Rohini, Raja Pur Kalan, PO: Rohini Sector-7, Dist.: North West Delhi, Delhi-110085, have changed my name and shall hereafter be known as KRISHAN LAL.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Rohan kataria S/O Manjeet, H. No 106, Pana Kailan, Near Shiv Mandir, Tikri Kalan, West Delhi,Delhi - 110041,Declare that name of my father and my mother has been wrongly written as Manjeet Kumar and Poonam in my 10th class educational document. The actual name of my father and my mother are MANJEET and POONAM DEVI which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I AZHAR QURESHI S/O MOHD SUALIN H NO-7394 QURESH NAGAR SADAR BAZAR DELHI 110006 HAVE CHANGED MY NAME TO MOHD AZHAR ALAM QURESHI FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE

I MOHD HAMZA ADIL S/O MOHD ADIL H NO-D-2/11 BLOCK-D FLATS SARAI KHALIL SADAR BAZAR DELHI 110006 HAVE CHANGED MY NAME TO MOHD HAMZA FOR ALL FUTURE PURPOSES

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Mamta Rani W/O Late Sh. Deepak Sawariya R/O 536/1 Upper Ground floor, Near Ice Cream factory, Nai Basti , Kishan Ganj , Padam Nagar (North Delhi), North Delhi, Delhi - 110007, declare that name of mine and my husband has been wrongly written as Mamta Sawariya and Deepak in my minor daughter namely Pari aged 15 years in her 10th class educational documents. The actual name of mine and my husband are Mamta Rani and Deepak Sawariya

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mrs. Shweta Arora W/o Mr. Japesh Budhiraja is the owner of Freehold Residential Entire Ground Floor, without roof rights, area measuring 63 Sq. Yds., i.e., 52.68 Sq. Meters, Built on Property Bearing New No. 474-A (Old No. I-329), Plot No. 7, out of Khasra No. 366, Khewat No. 20/21, Situated at G-Block, in the area of Village Salempur Mazra Madipur, Delhi State Delhi, now colony known as Rishi Nagar, Rani Bagh, Delhi-34. by virtue of Sale Deed dated 05.11.2024 as duly regd. on SR-VI-A, Pitampura, as Doc. No. 2024/15/I/16155, in Book No. 1, Vol. No. 14230, Page No. 49-66, dated 05.11.2024., now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same Property sold too be Mrs. Seema W/o Mr. Gulshan Kumar and same has been finance by ICICI Home Finance Co. Ltd. Branch: Pitampura, Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE

It is for general information that I, GURPREET SINGH S/o JANAM SINGH R/o F-2/14, Sangam Vihar, Deoli, South Delhi, Delhi-110062, declare that name of my mother has been wrongly written as WEYANTA KAUR in my 10th & 12th class Educational Documents, my Passport No. X6332638, and as VEANT KAUR in my Birth Certificate Registration No. MCDOLR10073119. The actual name of my mother is BAYANT KAUR.

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to public at large that my client **Mr. Aman Manocha** is purchasing Entire Built-up Upper Ground Floor, without roof rights, area measuring 150 sq. yds., part of built-up property bearing no. WZ-1917, part of Plot no. 86, out of khasra no. 316, Situated in the area of village Saleempur Mazra Madipur, Delhi, abadi known as Rani Bagh, Shakur Basti, Delhi-110034 from 1) Mr. Anil Kumar Dudeja 2) Mr. Ajay Dudeja who inherent the above-mentioned property after the death of Late Mr. Hukam Chand died on 16.12.2019 and Intend to mortgage the said property with **Aditya Birla Housing Finance Ltd.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

NAME CHANGE

I, PURAN DASS S/O KHILA RAM CHAND residing at 2NK/19 BP, Ward No.- 11, NH-2, NIT Faridabad, Haryana -121001 . have changed my name to PURAN CHAND GULATI for all future purposes

NAME CHANGE

I, DEEPIKA AGARWAL W/O SUNIL KUMAR GULATI residing at 2NK/19 BP, WARD No-11, NH-2, NIT Faridabad, HARYANA- 121001 have changed my name to DEEPIKA GULATI for all future purposes

NAME CHANGE

I, SMT KASHMIER KAUR Mother of JC-432810K Rank-SUB Name-HARJIT SINGH Presently residing at VILL-JOHAL NANGAL, PO-JAURA SINGHA, TEH+DIST-GURDASPUR, PUNJAB-143505, have changed my name from SMT KASHMIER KAUR to KASHMIR KAUR for all future purposes vide Affidavit dated 26/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I, JC-432810K Rank-SUB Name-HARJIT SINGH Father of PALKPREET KAUR Presently residing at VILL-JOHAL NANGAL, PO-JAURA SINGHA, TEH+DIST-GURDASPUR, PUNJAB-143505, have changed my minor daughter's name from PALKPREET KAUR to PALAKPREET KAUR for all future purposes vide Affidavit dated 26/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I hitherto known as Samreen Yusuf D/O Siraj Mohammad Khan W/O Yusuf Ashfaq Hashmi, R/O 402/Tower 4, Village, Sector Pi-2, Greater Noida, Unitech Horizon, Plot 6., Near Biraundi PO Knowledge Park-i, DIST:Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh, 201310, have changed my name and shall hereafter be known as SAMREEN KHAN.

NAME CHANGE

I, hitherto known as Raj kumar alias Raj kumar Sharma S/O Naresh Chandra Sharma, R/O House no-31, Pratap Nagar (Harsau), Near Police Line, Ghaziabad, Uttar Pradesh -201002, have changed my name and shall hereafter be known as RAJ KUMAR.

NAME CHANGE

I,Himanshu S/o RamKumar R/O A-9/45 block A, 4th floor pocket -C-4 Vasant Kunj Delhi- 110070,I have changed my name to HIMANSHU KATARIA Permanently

NAME CHANGE

I,Ramkumar S/O Raj SIngh Kataria R/O E-114-115 ,E Block Gandhi Vihar Dr Mukherjee Nagar Delhi 110009, I have changed my name to RAM KUMAR KATARIA Permanently

NAME CHANGE

I, Dalip Giri S/O Vikrama Giri R/O C-677, SGM Nagar, Faridabad, Haryana 121001 have changed my name to Dilip Giri for all future purposes.

NAME CHANGE

I,MONU KUMAR HARIJAN S/o Ratan Lal R/O Village Nayagaon, PO Mandha Distt Alwar Rajasthan - 301405, I have changed my name to Monu Kumar Permanently

NAME CHANGE

I,PRIYANSHU PRAKASH S/o ANAND PRAKASH R/O NZG -540 GALI NO 10 NEAR DDA PARK RAJ NAGAR PART-2 PALAM COLONY NEW DELHI-110077,I have changed my name to PRIYANSHU Permanently

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Jagdish chand Mongia S/O Sant Lal Mongia R/O House Number-95-C/DA, G-8 Area, Near Clock Tower, Hari Nagar, South West Delhi, Delhi - 110064,declare that name of mine and my father has been wrongly written as J C Mongia and Sant Lal in my Aadhar card no 9651 6113 3766.The actual name of mine and my father are JAGDISH CHAND MONGIA and SANT LAL MONGIA, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, Asha Praveen alias Ayesha Praveen D/O Md Mumtaz W/O Md Ashifshaikh Permanent resident of Village Paighamberpur, Thana Keoti , District Darbhanga, Post Darima , Paigambarpur , PO: Darima , Dist: Darbhanga Bihar - 847121, Presently residing at N-38/342C first floor, D Park Delhi -110033, have changed my name and shall hereafter be known as Ayesha Praveen

NAME CHANGE

I hitherto known as Kumar Kunal S/o Mahendra Singh R/o AH 406 Amrapali Village Apartments, Nyay Khand 2, Kala Pathar Road, Indirapuram, Shipra Sun C, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201014 have changed my name and shall hereafter be known as Kunaal Singh.

NAME CHANGE

I, Mahesh Bhagat S/o Ramaparikshit Bhagat R/o A.K. Mobile, Near By R.K. Public School, Mamura, Sec-66, Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh - 201301 have changed the name of my minor son Ayush Kumar Bhagat aged 14 years and he shall hereafter be known as Ashu Kumar Bhagat.

NAME CHANGE

I, ALI MOHD S/O BASHIRA resident of H NO-197 RUBARH DHOJ (17) FARIDABAD HARYANA-121004. have changed my name to ALI MOHAMMAD for all future purposes

NAME CHANGE

I, RAM SINGH S/O JAI SINGH R/O H.NO-760/11, NEAR KABIR BHAWAN, JACUBPURA, GURGAON, HARYANA-122001, HAVE CHANGED MY NAME TO RAM SINGH NAGPAL FOR ALL FUTURE PURPOSE

NAME CHANGE

I, Nageena W/O Karan Singh R/O Ward No 30, Bagh Ranap Vardhman, Puram Loni, Loni, PO: Loni, DIST: Ghaziabad, Uttar Pradesh - 201102, have changed my name and shall hereafter be known as Sunita Devi

NAME CHANGE

I, Riyaj Alam Alias Md Faiyaz Alam S/O Md Musa Present R/O Kh No-464, Khurana Enclave, Khurana Enclave Loni, Up-201102,Permanent R/O Village Bhagavanapur,Anchal-Sanhaula,District-Bhagalpur, Bihar-813225, have changed my name and shall hereafter be known as Md Faiyaz Alam.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, BASIRAT ULL NISHA W/o MUSHTAQ AHMAD, R/o House No.-A, 68/2-345, Street No.4, Insha Allah Masjid, Chauhan Banger, Seelampur, North East Delhi, Delhi-110053, declare that name of mine and my minor daughter has been wrongly written as BASIRAT AL NISHA & ZAINAB AHMAD in my minor daughter ZAINAB aged 14 years in her school records. The actual name of mine and my daughter are BASIRAT ULL NISHA & ZAINAB, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

Be it known to all concerned that my clients Sh. Vijay Kashyap and Smt. Vijeta W/o-Sh. Vijay Kashyap both Resident of RZR-17A, Nanda block, Mahavir enclave, New Delhi-110045 had debarred and disowned their son namely Vikas and daughter in laws namely Smt. Shivangi W/o-Vikas from all their moveable and immovable properties /assets. My clients have severed all her connections/relations from the above named sons, daughter in laws with the aforesaid persons shall do it at his own risk and peril. Neither my clients nor their family members shall not be responsible for any of the past or future acts, deeds and things done by them.

VIJAY SHANKAR GANDHI, Advocate
Chamber No. 851, Dwarka Court Complex, New Delhi 110075

NAME CHANGE

I,YOGITA RANI OJHA w/o Jagdish Chandra Raturi R/O B-428, First Floor, Front Side, Mahatma Gandhi Road, Near NHPC Chowk, Green Fields Colony Faridabad-121010, Haryana Have Changed my Name to YOGITA RATURI Permanently.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I KANCHI NAGASREENIVAS S/O KANCHI GOPALAIAH R/O C-122, 1st FLOOR, 6th STREET, KRISHNA NAGAR, SAFDARJUNG ENCLAVE, PO SAFDARJUNG ENCLAVE, DIST SOUTH WEST DELHI, DELHI-110029 declare that name of mine and my father have been wrongly written as NAGASREENIVAS K and K GOPALAIAH in my 10th class educational documents. The actual name of mine and my father are KANCHI NAGASREENIVAS and KANCHI GOPALAIAH respectively which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, VIJAYALAKSHMI Wife of No. 2606882M Rank-HAV Name-VENKATA RAMANAIAH B Presently residing at VILL-BURAGAMANIPALLI, PO-RAMESWARAM, TEH-BADVEL, DIST-YSR, ANDHRA PRADESH-516193, have changed my name from VIJAYALAKSHMI to VIJAYA LAKSHMI BATTAPOTHULA for all future purposes vide Affidavit dated 26/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I, A OMANA mother of JC-812362P, Rank-SUB Name-BAIJU KUMAR S residing at- BIJU BHAVAN, MANTHIKUZHI, PARUTHIKUZHI PO, UZHAMALACKAL, THIRUVANANTHAPURAM, KERALA-695541, have changed my name from A OMANA to OMANA A for all future purposes vide Affidavit dated 26/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I, B SASIDHARANASARI father of JC-812362P, Rank-SUB Name-BAIJU KUMAR S residing at- BIJU BHAVAN, MANTHIKUZHI, PARUTHIKUZHI PO, UZHAMALACKAL, THIRUVANANTHAPURAM, KERALA-695541, have changed my name from B SASIDHARANASARI to SASIDHARANASARI B for all future purposes vide Affidavit dated 26/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I, Shiv Kumar Vasistha S/O Sh. Nempal Sharma R/o H.No. I-24/C, Saurabh Vihar, Hari Nagar Ext., Jaitpur, Badarpur, New Delhi-110044 have declare that my minor daughter Shreya Vasistha correct date of birth is 26.02.2018 from certificate no. B-2022: 9-90116-007531 for all purpose in future.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I AMIT YADAV S/O YUDHVIR SINGH R/O 198, HAIDERPUR VILLAGE, SHALIMAR BAGH, NORTH WEST DELHI-110088 declare that name of my minor daughter and my wife has been wrongly written as SAMRIDDHI YADAV and KOMAL YADAV in my minor daughter namely SAMRIDDHI RAO aged 13 years in her school record. The actual name of my minor daughter and my wife are SAMRIDDHI RAO and KOMAL respectively which may be amended accordingly.

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

(धारा 82 सीआरपीसी/84 भा.न.स.स.देखिए)

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **मोहित जैन उर्फ रिंकू** पुत्र हंस कुमार जैन, निवासी- मकान नंबर 576, गली नंबर 11, न्यू विकास नगर, लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने **प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 83/12 धारा 381/420/467/468/471 भा.द.स, थाना कोतवाली, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है की किया है) और उस पर जारी किये गए गिरफ्तारी के वारंट को यह कह कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **मोहित जैन उर्फ रिंकू** मिल नहीं रहा और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **मोहित जैन उर्फ रिंकू** फ़रार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)। इस लिए इस के द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि उक्त अभियुक्त **मोहित जैन उर्फ रिंकू, प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 83/12 धारा 381/420/467/468/471 भा.द.स, थाना कोतवाली, दिल्ली** न्यायालय के समक्ष या मेरे समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **27.09.2025** को या उससे पहले हाजिर हो।

आदेश से
सुश्री सायेशा चड्ढा
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी-08 (केंद्रीय)
तीस हजारी न्यायालय, दिल्ली

DP/11428/N/2025

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address : qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

हरियाणा में आयुष्मान कार्ड धारकों का इलाज करेंगे प्राइवेट अस्पताल, हड़ताल खत्म

चंडीगढ़। हरियाणा के निजी अस्पतालों में दोबारा आयुष्मान कार्ड धारकों का इलाज होने लगेगा। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की हरियाणा शाखा ने 19 दिन बाद अपनी हड़ताल वापस ले ली है। हरियाणा के मुख्य सचिव के साथ कई घंटे तक चली बैठक के बाद आईएमए ने दोबारा गरीबों का इलाज करने का ऐलान किया है। बैठक में तय हुआ कि अब कोई भी भुगतान एक महीने से ज्यादा लंबित नहीं रहेगा। यदि एक महीने से ज्यादा देरी हुई तो हरियाणा सरकार निजी अस्पतालों को उनकी बकाया राशि का ब्याज प्रदान करेगी। निजी अस्पतालों के मुद्दों को सुलझाने के लिए आइएमए के सदस्यों को हरियाणा सरकार के स्वास्थ्य विभाग की कमेटियों में शामिल किया जाएगा। आयुष्मान योजना के तहत निजी अस्पतालों का करीब 490 करोड़ रुपये का भुगतान लंबित है। राज्य सरकार की ओर से बकाया भुगतान नहीं देने पर आईएमए के आह्वान पर निजी अस्पतालों ने सात अगस्त की रात से आयुष्मान के लाभार्थियों का इलाज बंद कर दिया था। आईएमए हरियाणा के अध्यक्ष डा.महावीर पी जैन एवं पूर्व अध्यक्ष डॉ. अजय महाजन ने बताया कि राज्य सरकार व स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच करीब ढाई घंटे बैठक चली। अब तक निजी अस्पतालों को लंबित भुगतान में से 45 फीसदी राशि आ चुकी है।

हरियाणा सरकार का दावा एक साल में सात गैंगस्टर मारे, 47 मुठभेड़ में पकड़े

चंडीगढ़। विधानसभा में मानसून सत्र के दौरान विपक्ष जहां कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर मुखर हो रहा है वहीं सरकार भी बचाव की मुद्रा में आ गई है। कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर मंगलवार को काम रोको प्रस्ताव के तहत चर्चा होगी। इससे पहले कालांवाली से विधायक शीशपाल केहरवाला के अतारांकित सवाल के जवाब में मुख्यमंत्री ने कहा कि इनेलो से लेकर कांग्रेस के शासन में जहां एफआइआर दर्ज नहीं की जाती थी, वहीं भाजपा सरकार में गैंग चलाने वाले गैंगस्टर मौत के घाट उतारे जा रहे हैं। वर्ष 2024 में बदमाशों के साथ 42 पुलिस मुठभेड़ हुई। जिसमें सात गैंगस्टर मौत के घाट उतार दिए गए। जबकि 57 घायल हुए। सभी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। मुख्यमंत्री ने दावा किया कि वर्ष 2017 में संगठित अपराध पर अंकुश लगाने के लिए विशेष कार्यबल (एसटीएफ) के गठन के बाद अपराधी हरियाणा छोड़ रहे हैं। राज्य में संगठित अपराध रोकथाम के लिए मानक संचालक प्रक्रिया (एसओपी) का गठन किया जा रहा है।

हरियाणा शहर स्वच्छता अभियान-2025 की शुरुआत, स्वच्छता पर जोर

सोनीपत। सोनीपत जिले को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए उपायुक्त सुशील सारवान ने हरियाणा शहर स्वच्छता अभियान-2025 का आरंभ किया। यह अभियान सात नवंबर तक कुल 11 सप्ताह तक चलेगा। इसका उद्देश्य शहरों को कूड़ा-कचरा मुक्त बनाना और लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है। उपायुक्त ने कहा कि अभियान की शुरुआत सभी अधिकारी अपने-अपने कार्यालयों की सफाई से करेंगे। उच्च अधिकारी समय-समय पर इनकी जांच करेंगे। यदि किसी भी कार्यालय के बाहर गंदगी या कचरे का ढेर दिखाई देगा, तो नगर निगम की ओर से तुरंत कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने सार्वजनिक पार्कों और वहां स्थापित व्यायामशालाओं की नियमित सफाई पर जोर दिया। जन स्वास्थ्य अधिकारियों को जल समितियों की सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अभियान के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित भी किया जाएगा। सार्वजनिक स्थलों, सड़कों, अस्पतालों, कार्यालयों और बाजारों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। आमजन को भी अपने आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया जाएगा। ठोस कचरा प्रबंधन पर विशेष बल दिया जाएगा और कचरा संग्रहण की निगरानी के लिए रियल टाइम ट्रैकिंग पोर्टल व मोबाइल ऐप का इस्तेमाल किया जाएगा।

बरसात में शनि मंदिर अंडरब्रिज पर तैनात रहेंगे निगम कर्मचारी

सोनीपत। सोनीपत में बरसात के दौरान शनि मंदिर अंडरब्रिज पर हादसों से बचाव के लिए प्रशासन ने स्थायी व्यवस्था की है। उपायुक्त सुशील सारवान ने अंडरब्रिज का दौरा किया और अधिकारियों को निर्देश दिए कि यहां नगर निगम के कर्मचारी 24 घंटे मौजूद रहें। बरसात शुरू होते ही कर्मचारी वाहन चालकों को अंडरब्रिज प्रयोग न करने की जानकारी देंगे और लोगों को जागरूक करेंगे। उपायुक्त ने कहा कि यह अंडरब्रिज शहर का काफी व्यस्त मार्ग है। आसपास की कालोनियों का पानी यहां जमा हो जाता है, जिससे कई बार वाहन फंस जाते हैं और दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। उन्होंने नगर निगम आयुक्त हर्षित कुमार और अधिकारियों के साथ अंडरब्रिज की स्थिति की जांच की।

निगम आयुक्त ने बताया कि जलभराव से निपटने के लिए निगम ने सभी जरूरी प्रबंध किए हैं। पंप ऑपरेटरों की ड्यूटी चौबीसों घंटे लगाई गई है, ताकि बारिश का पानी तुरंत निकाला जा सके। कर्मचारियों को निर्देश दिए गए हैं कि बरसात में किसी वाहन को अंडरब्रिज में न जाने दें। साथ ही अंडरब्रिज के आसपास कूड़ा न डालने के लिए बोर्ड भी लगाए गए हैं। दौरे के दौरान अतिरिक्त उपायुक्त डॉ. लक्षितसरीन, संयुक्त आयुक्त मीतू धनखड़ समेत कई अधिकारी मौजूद रहे। उपायुक्त ने बरसात के मौसम में बीमारियों से बचाव पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस समय मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी साइकिल से पहुंचे विधानसभा, नशे के खिलाफ जागरुकता का दिया संदेश

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी साइकिल चलाकर हरियाणा विधानसभा पहुंचे। उनके साथ राज्य के कैबिनेट मंत्री, विधायक और भाजपा के अन्य नेता भी साइकिल पर नजर आए। इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं को नशे से दूर रहने के प्रति जागरूक करने का संदेश देना था। मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि युवाओं को नशे से दूर रखने को लेकर संदेश देने के लिए इस तरीके से साइकिल यात्रा की जाती है। उन्होंने कहा कि सरकार 'उदय हरियाणा' पहल के तहत युवाओं को नशे के खिलाफ जागरुक करने की कोशिश कर रही है। साइकिल यात्रा और मैराथन जैसी सरकार की पहलों का नतीजा है कि नशे के खिलाफ जनआंदोलन खड़ा हुआ है। हमारे युवा और तमाम नागरिक इस मुहिम में जुड़कर सहयोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई व्यक्ति नशा फैलाने का काम करता है तो सरकार उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रही है।

इस दौरान, मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर सवाल उठाए और कहा, ÷विधानसभा स्पीकर ने सभी सदस्यों से आह्वान किया था। यह अच्छा होता कि नशे के खिलाफ साइकिल यात्रा में विपक्ष के सदस्य भी आते।' हरियाणा की कानून व्यवस्था पर विपक्ष के आरोपों को लेकर मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष अपराध के मुद्दे को लेकर गुमराह करने की कोशिश करता है। उन्होंने कहा कि विपक्ष को अपने गिरेबां में झांकना चाहिए कि उनकी सरकार में कानून व्यवस्था की स्थिति क्या थी। सीएम सैनी ने यह भी स्पष्ट किया कि सरकार सदन में कानून व्यवस्था के मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार है और विपक्ष के हर आरोप का जवाब देने के लिए भी तैयार है। पंजाब में भाजपा नेताओं की गिरफ्तारी को लेकर हरियाणा के मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी आपस में मिले हुए हैं। इन दलों ने हरियाणा में समझौता किया था। दिल्ली में भी इन दलों की सांठगांठ थी। यह लोग अच्छे कामों का समर्थन करने की बजाय उसका विरोध करते हैं।वहीं, हरियाणा के कैबिनेट मंत्री अरविंद शर्मा ने कहा कि नशे को लेकर युवाओं को एक संदेश देने के लिए आज सभी विधायक और मंत्री साइकिल पर विधानसभा पहुंचे हैं। बीजेपी के सभी मंत्री और विधायक साइक्लोथॉन का आयोजन करते समय एमएलए हॉस्टल से विधानसभा तक पहुंचे हैं।

हरियाणा मंत्रिपरिषद की बैठक 28 अगस्त को, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी करेंगे अध्यक्षता

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज हो गई है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हरियाणा मंत्रिपरिषद की एक महत्वपूर्ण बैठक आगामी 28 अगस्त को सुबह 11 बजे आयोजित होगी। यह बैठक हरियाणा सिविल सचिवालय, चंडीगढ़ की चौथी मंजिल पर होगी। यह बैठक ऐसे समय में हो रही है, जब राज्य सरकार कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम कर रही है। उम्मीद की जा रही है कि बैठक में कई अहम फैसले लिए जा सकते हैं। मंत्रिपरिषद की इस बैठक में राज्य के विकास से संबंधित विभिन्न योजनाओं, नीतियों और कार्यक्रमों पर चर्चा होने की संभावना है। सूत्रों के मुताबिक, इस बैठक में मौजूदा परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जाएगी और नई योजनाओं को मंजूरी दी जा सकती है। हाल ही में हुए प्रशासनिक फेरबदल के बाद यह बैठक और भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इस बैठक में सभी मंत्रीगण उपस्थित रहेंगे, और वे अपने-अपने विभागों से संबंधित प्रस्तावों और चुनौतियों को मुख्यमंत्री के सामने रखेंगे। बैठक में जनहित से जुड़े मुद्दों, जैसे कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचा विकास पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में सरकार का यह पहला कार्यकाल है, और इस तरह की बैठकें उनके कामकाज की दिशा और प्राथमिकताओं को स्पष्ट करेंगी।

डीसी ने किया झज्जर की सफाई व जल निकासी व्यवस्था का औचक निरीक्षण

एजेंसी

झज्जर। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने सुबह बूंदाबांदी के बीच शहर की सफाई और जल निकासी व्यवस्था का औचक निरीक्षण किया। उनके औचक दौरे की सूचना मिलते ही नगर परिषद के अधिकारी मौके पर पहुंच गए। डीसी ने राव मंगली राम पार्क में मौजूद लोगों से बातचीत करते हुए नप अधिकारियों को पार्क में और बेहतर व्यवस्था करने के आदेश दिए। डीसी पाटिल ने गुरुग्राम रोड, सिलानी गेट, बीकानेर चौक, अंबेडकर चौक, पुराना बस स्टैंड एरिया, शहीद भगत सिंह चौक, नया बस स्टैंड, बाईपास, राव मंगली राम पार्क, महाराजा अग्रसेन चौक, शहीद कुलदीप चौक, बादली रोड होते हुए सब्जी मंडी एरिया, कोर्ट परिसर व लघु सचिवालय परिसर का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को कहा कि सफाई कार्य प्रतिदिन करने से ही शहर साफ सुथरा रहेगा। कूड़ा डंपिंग प्वाइंट्स की सफाई प्रतिदिन सुबह सुनिश्चित की जाए। इसमें किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं होगी। डीसी ने पार्कों और शहर में टूटे हुए बैंचों को ठीक करने, पार्कों की सुंदरता बढ़ाने, स्ट्रीट लाइट व्यवस्था को दुरुस्त रखने, बिजली के लटकते हुए तारों को ठीक करने, जल निकासी नालों की सफाई निरंतर करने, जल निकासी व्यवस्था को दुरुस्त रखने, शहर की सुंदरता में बाधा बन रहे अवैध होर्डिंग को हटाने के आदेश दिए। बस स्टैंड का निरीक्षण करते हुए रोडवेज अधिकारियों को परिसर को साफ सुथरा रखने के आदेश दिए। डीसी ने कहा कि हर वार्ड की व्यवस्थाओं की निगरानी के लिए एक-एक नोडल अधिकारी नियुक्त किया जा रहा है। नगर परिषद के अधिकारियों को भी निर्देश दिए गए हैं कि शहर में सुबह सफाई कार्य के समय फील्ड में रहें और नागरिकों से फीडबैक लेते हुए कार्य करवाएं। उपायुक्त पाटिल ने शहर के नागरिकों से सहयोग का आह्वान करते हुए कहा कि पॉलिथिन, प्लास्टिक की खाली बोतल व अन्य प्लास्टिक कचरा, कूड़ा आदि जल निकासी नालों व खुले में न डालें।

हरियाणा में आठ आईएएस और 12 एचसीएस अधिकारियों के तबादले

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने तुरंत प्रभाव से आठ आईएएस और 12 एचसीएस अधिकारियों के स्थानांतरण एवं नियुक्ति आदेश जारी किए हैं। राज्य सरकार द्वारा जारी किए गए आदेशों के अनुसार, आईएएस अधिकारी अपराजिता को स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) का मिशन निदेशक नियुक्त किया गया है। अंकिता चौधरी को नगर निगम गुरुग्राम में अतिरिक्त आयुक्त लगाया गया है। नूंह के अतिरिक्त उपायुक्त एवं जिला नागरिक संसाधन सूचना अधिकारी प्रदीप सिंह को जिला परिषद नूंह और डीआरडीए नूंह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है। हिसार की अतिरिक्त उपायुक्त एवं जिला नागरिक संसाधन सूचना अधिकारी सी. जयश्रद्धा को जिला परिषद हिसार तथा डीआरडीए हिसार के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है।

रेवाड़ी के अतिरिक्त उपायुक्त एवं जिला नागरिक संसाधन सूचना अधिकारी राहुल मोदी को जिला परिषद रेवाड़ी एवं डीआरडीए रेवाड़ी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। रोहतक के अतिरिक्त उपायुक्त एवं जिला नागरिक

संसाधन सूचना अधिकारी नरेन्द्र कुमार को जिला परिषद रोहतक एवं डीआरडीए रोहतक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है। करनाल के अतिरिक्त उपायुक्त एवं जिला नागरिक संसाधन सूचना अधिकारी सोनू भट्ट को जिला परिषद करनाल एवं डीआरडीए करनाल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है।

इसी प्रकार जींद के अतिरिक्त उपायुक्त एवं जिला नागरिक संसाधन सूचना अधिकारी विवेक आर्य को जिला परिषद जींद एवं डीआरडीए जींद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। एचसीएस अधिकारियों में जिला परिषद रोहतक एवं डीआरडीए रोहतक के सीईओ प्रदीप कुमार-टू को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), रोहतक नियुक्त किया गया है। जिला परिषद नूंह एवं डीआरडीए नूंह के सीईओ, प्रदीप अहलावत-टू को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), मानेसर लगाया गया है। शशि वसुंधरा को शहरी स्थानीय निकाय विभाग में संयुक्त निदेशक एवं उप सचिव नियुक्त किया गया है। जिला परिषद रेवाड़ी एवं डीआरडीए रेवाड़ी के सीईओ प्रदीप कुमार-थ्री को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), पानीपत नियुक्त किया गया है। अनिल कुमार यादव को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), यमुनानगर नियुक्त किया गया है। अशवीर सिंह को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), फरीदाबाद लगाया गया है। कपिल कुमार को उप सचिव, मॉनिटरिंग एवं कोऑर्डिनेशन तथा विशेष अधिकारी (स्वच्छता), कुरुक्षेत्र नियुक्त किया गया है। जिला परिषद जींद एवं डीआरडीए जींद के सीईओ अनिल कुमार दून को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), सोनीपत नियुक्त किया गया है। जिला परिषद हिसार एवं डीआरडीए हिसार के सीईओ हरबीर सिंह को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), हिसार नियुक्त किया गया है। जिला परिषद करनाल एवं डीआरडीए करनाल के सीईओ अमित कुमार-टू को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), करनाल नियुक्त किया गया है। प्रतीक हुड्डा को विशेष अधिकारी (स्वच्छता), अंबाला नियुक्त किया गया है। रमित यादव को उप सचिव, मॉनिटरिंग एवं कोऑर्डिनेशन नियुक्त किया गया है।

'हरियाणा शहर स्वच्छता अभियान' में जुटा नूंह प्रशासन - उपायुक्त

अधिकारियों की बैठक लेकर दिए दिशा-निर्देश

एजेंसी

नूंह। जिला उपायुक्त अखिल पिलानी ने लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में स्वच्छता अभियान को लेकर संबंधित अधिकारियों की बैठक ली और जिले में चल रहे ÷हरियाणा शहर स्वच्छता अभियान 2025÷ की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के मार्गदर्शन में शुरू हुआ यह अभियान 11 सप्ताह तक, यानी 24 अगस्त से 7 नवंबर तक, जिले के शहरी क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर चलाया जाएगा।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफाई व्यवस्था केवल औपचारिकता न होकर लोगों की आदत और जिम्मेदारी बने। इसके लिए गांव-गांव और शहर की गलियों में सफाई कार्य नियमित रूप से हो, कूड़ा फैलने न पाए और जन-जागरूकता कार्यक्रमों के जरिए आमजन को इस मुहिम से जोड़ा जाए। उपायुक्त ने कहा कि अभियान के तहत स्कूलों, पंचायतों, आरडब्ल्यूए, एनजीओ और बाजार संघों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए ताकि स्वच्छता का संदेश

हर घर तक पहुंचे। उन्होंने स्पष्ट कहा कि लापरवाही बरतने वाले कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। नगरपालिका, पंचायत, स्वास्थ्य एवं शिक्षा विभाग आपसी तालमेल से इस अभियान को सफल बनाने में योगदान दें।

अभियान के दौरान सरकारी व निजी कार्यालयों को 'शून्य अपशिष्ट कार्यालय' बनाने की दिशा में कदम उठाए जाएंगे। सभी सरकारी/निजी भवनों, पर्यटन व धार्मिक स्थलों की सफेदी और रंगाई, सड़कों व नालों की मरम्मत, स्ट्रीट लाइट और साइन बोर्ड की दुरुस्ती, तालाबों व नहरों की सफाई, ठोस कचरे का वैज्ञानिक प्रबंधन तथा पुराने कचरा स्थलों की बायो-रिमेडिएशन पर भी काम किया जाएगा। साथ ही शहर के सौंदर्यीकरण और हरियाली बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण और पार्कों के रखरखाव पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। उपायुक्त अखिल पिलानी ने कहा कि ÷स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य केवल कूड़ा उठाना नहीं, बल्कि नागरिकों में स्वच्छता की आदत विकसित करना है। इसके लिए आमजन की सक्रिय भागीदारी बेहद जरूरी है।÷ उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे स्वच्छता संबंधी शिकायत सीधे नगर आयुक्त कार्यालय में दर्ज कराएं और शहर को साफ-सुथरा बनाने में प्रशासन का सहयोग करें। इस अवसर पर एसडीएम नूंह अंकिता पुवार, डीएमसी दलबीर सिंह, सीईओ जिला परिषद प्रदीप अहलावत सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

हिसार के सेक्टर-33 में बनेगा बिजली सब-स्टेशन, ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने दी मंजूरी

एजेंसी

हिसार। हरियाणा के ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने घोषणा की है कि हिसार के सेक्टर-33 में एक नया बिजली सब-स्टेशन स्थापित किया जाएगा। इस परियोजना को सरकार की ओर से हरी झंडी मिल गई है। यह घोषणा उन्होंने हरियाणा विधानसभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए की। विज ने आश्वासन दिया कि सब-स्टेशन के लिए जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया इसी महीने के भीतर शुरू हो जाएगी। उन्होंने बताया कि इस संबंध में ऊर्जा विभाग और हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के बीच बातचीत चल रही है। दोनों विभागों के अधिकारी जल्द ही एक साथ बैठकर भूमि को अंतिम रूप देंगे। इस सब-स्टेशन के स्थापित होने से हिसार के सेक्टर-33 और आसपास के क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति की स्थिति में सुधार होगा। यह कदम स्थानीय निवासियों की लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करेगा।

कम्प्यूटर इंजीनियरिंग का डिप्लोमा करेंगे जेल बंदी, गुरुग्राम से शुरू होगी पायलट परियोजना : डॉ अरविंद शर्मा

एजेंसी

चंडीगढ़। सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत एवं पर्यटन मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि प्रदेश की जेलों में बंदियों के सुधार, पुर्नवास एवं समाज की मुख्यधारा में लाने की कवायद के बीच प्रदेश की पांच जेलों में बंदियों को कौशल विकास के 12 कोर्सों को शुरू किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जेल बंदियों को कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा के तीन वर्षीय डिप्लोमा के अवसर भी उपलब्ध होंगे, इसके लिए पायलट प्रोजेक्ट के तहत गुरुग्राम जेल में कम्प्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया जा रहा है।जेल मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने हरियाणा सिविल सचिवालय स्थित कार्यालय में जेल महानिदेशक आलोक कुमार राय, गृह विभाग के सचिव मनीराम शर्मा, उपसचिव गगनदीप सिंह के साथ एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक उपरांत जेल मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि प्रदेश की जेलों में बंद बंदियों के सुधार, पुनर्वास व समाज की मुख्यधारा में लाने के उद्देश्य से उठाए जा रहे कदमों की समीक्षा की गई। जेल बंदियों को

सजा पूरी करने के बाद सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में रोजगार के उचित अवसर उपलब्ध हों, इसके लिए तकनीकी शिक्षा विभाग के साथ मिलकर विभिन्न जेलों में तकनीकी कोर्स के अवसर उपलब्ध करवाए जाएंगे। कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने बताया कि गुरुग्राम जेल में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर एक तकनीकी डिप्लोमा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया जा रहा है, जहां जेल बंदियों को तीन वर्षीय कम्प्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा करवाया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए तकनीकी सहयोग राजकीय तकनीकी संस्थान इन्द्री (मेवात) द्वारा दिया जाएगा। इसी कडी में 5 जेलों में 12 औद्योगिक प्रशिक्षण कोर्स करवाए जाएंगे। इसमें केंद्रीय जेल अंबाला में पोशाक निर्माण एवं वेल्डर, करनाल जेल में पोशाक निर्माण व सौंदर्य प्रसाधन, पानीपत जेल में सिलाई प्रशिक्षण एवं बढ़ई, गुरुग्राम जेल में कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रोग्रामिंग असिस्टेंट, वेल्डर एवं प्लंबर, फरीदाबाद जेल में कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रोग्रामिंग असिस्टेंट, इलेक्ट्रीशियन एवं बढ़ई के कोर्स शामिल हैं। जेल मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने बताया कि जेलों में बंद इन बंदियों को सजा पूरी होने के बाद सरकारी क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। इस कडी में जेल विभाग कौशल रोजगार निगम लिमिटेड एवं उद्योगों के साथ एमओयू कर रहा है ताकि उनके लिए रोजगार के अवसरों की कमी न रहे। उन्होंने कहा कि औद्योगिक कोर्स करवा रही इन जेलों में जेल बंदियों के पंजीकरण की प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है। जेल अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि अधिक से अधिक बंदियों को उनकी रूचि के औद्योगिक कोर्सों में भागीदारी करने के लिए प्रेरित किया जाए, ताकि कौशल विकास के साथ आत्मनिर्भर बन सकें। यही नहीं श्रम विभाग के साथ मिलकर सजा पूरी कर चुके बंदियों को विभिन्न योजनाओं के तहत लोन भी उपलब्ध करवाए जाएंगे।

मुख्यमंत्री का ऐलान, 1984 के दंगों में जान गवाने वाले व्यक्ति के परिवार के एक सदस्य को मिलेगी नौकरी

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार द्वारा 1984 में हुए सिख विरोधी दंगों के दौरान प्रदेश के ऐसे सभी 121 परिवारों जिनके किसी एक सदस्य की जान चली गई थी उनके परिवार के एक सदस्य को प्राथमिकता के आधार पर नौकरी प्रदान की जाएगी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सोमवार को हरियाणा विधानसभा में चल रहे मानसून सत्र के दौरान यह घोषणा की। उन्होंने सदन को अवगत कराया कि 1984 में हुए सिख विरोधी दंगों में प्रदेश में लगभग 20 गुरुद्वारों, 221 मकानों, 154 दुकानों, 57 फैक्ट्रियों, 3 रेलडिब्बों और 85 वाहनों को जला दिया गया था। इन दंगों में 58 व्यक्ति घायल हुए और 121 लोगों की मृत्यु हुई थी। उन्होंने पीड़ित परिवारों को आपसी सहमति से परिवार के एक सदस्य का नाम अपने जिले के उपायुक्त के माध्यम से मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार को भिजवाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा हिदायतें शीघ्र ही जारी कर दी जाएंगी।

जनता में हंसी का पात्र बन रहे हैं राहुल गांधी : बड़ौली

एजेंसी

चंडीगढ़। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने पंचकूला में सह परिवार माता मनसा देवी, चंडी देवी और काली माता के पावन दर्शन किए। इससे पहले उन्होंने भगवान भोलेनाथ के शिवलिंग पर दूध और जलाभिषेक कर विधिविधान से पूजा-अर्चना की। बड़ौली ने बाबा भोलेनाथ और मां भगवती से प्रदेश की खुशहाली और कृपा बनाए रखने की प्रार्थना की।

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने पूजा-अर्चना के बाद कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने लोकतंत्र का कभी सम्मान नहीं किया। हरियाणा में कांग्रेस नेता प्रतिपक्ष तक नहीं चुन सकी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के लोग जातिवाद, क्षेत्रवाद और परिवारवाद की राजनीति करते हैं। मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि 2014 में भाजपा की सरकार बनने के बाद हरियाणा में कानून व्यवस्था बेहतर है। हरियाणा की नायब सरकार अच्छा काम काम कर रही है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश तेजी से विकसित राज्य बनने की ओर अग्रसर है। हरियाणा का हर वर्ग केंद्र

की मोदी और प्रदेश की नायब सरकार की योजनाओं से खुश है। भाजपा सरकार अंत्योदय की भावना से काम कर रही है और हर पात्र व्यक्ति को सरकार की योजनाओं का लाभ मिल रहा है। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने कांग्रेस को घेरते हुए कहा कि धरना, प्रदर्शन और सड़कों को रोकना कांग्रेस की राजनीति का हिस्सा है, जनहित के मुद्दों से कांग्रेस पार्टी का कोई मतलब नहीं होता। देश और प्रदेश की जनता जानती है कि कांग्रेस झूठ और लोगों को भ्रमित करने वाली राजनीति करती रहती है, इसलिए जनता ने कांग्रेस को पूरी तरह से नकार दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी लोगों का विश्वास खो चुकी है।

बड़ौली ने कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस नेताओं के वोट चोरी के आरोप खोखले हैं इनमें कोई दम नहीं है। कांग्रेस के लोग हार का ठीकरा पहले ईवीएम पर फोड़ते थे और अब वोट चोरी का झूठ फैला रहे हैं।

विधानसभा में बोले कांग्रेस विधायक , पीपीपी में खामियां, अपराधी हुए बेलगाम

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा विधानसभा में विपक्षी दलों के विधायकों ने सरकार से परिवार पहचान पत्र की खामियों पर जवाब मांगा तो किसी ने प्रदेश में बढ़ रही अपराधिक घटनाओं पर सरकार को घेरा। सदन में शून्यकाल की कार्यवाही के दौरान कांग्रेस विधायक जस्सी पेटवाड़ ने पीपीपी को गरीबों का खून चूसने वाला करार देते हुए कहा कि गलत तरीके से लाखों लोगों की पेंशन काट दी गई है। चुनाव से पहले आनन-फानन में राशन कार्ड बनाए गए और अब इन्हें काटा जा रहा है। कांग्रेस विधायक विकास सहारण ने कहा कि 10 मार्च 2017 को तत्कालीन शिक्षा मंत्री ने कलायत में महाविद्यालय बनाने की घोषणा की थी। सरकार अब इससे इन्कार कर रही है।कांग्रेस के ही नरेश सेलवाल ने आरोप लगाया कि भाजपा रैलियों में रोडवेज बसों का दुरुपयोग किया जा रहा है। 24 फसलों को एमएसपी पर खरीदने के दावों के विपरीत सिर्फ गेहूं को ही न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सरकार खरीद रही है। महम से कांग्रेस विधायक बलराम दांगी ने कहा कि सडक़ों का बुरा हाल है।

मुख्यमंत्री ने सदन में घोषणा की थी कि छह महीने के भीतर सभी सडक़ों को गड्ढा मुक्त कर दिया जाएगा। लगता है कि महम विधानसभा क्षेत्र शायद हरियाणा में नहीं आता, इसलिए यहां की गड्ढे वाली सडक़ें अभी तक सही नहीं की गई हैं।मुलाना से कांग्रेस विधायक पूजा चौधरी ने कहा कि प्रदेश में खुलेआम हत्याएं हो रही हैं। फिरौतियां मांगी जा रही हैं। बेटियां सुरक्षित नहीं हैं। प्रदेश में बेरोजगारी बढ़ रही है। पुलिस में 21 हजार पद खाली पड़े हैं। इन पदों पर जल्द भर्ती की जाए। रोहतक से कांग्रेस विधायक बीबी बत्रा ने एजी आफिस को लेकर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि कोर्ट के स्टे के बावजूद आफिस काम नहीं कर रहा है। इस कारण कई सालों तक काम अटके रहते हैं।

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I RIYAA YADAV D/o SUNIL KUMAR R/o House No-1221, Near Ayyapa Mandir Gate, Sector-21 Industrial Complex Dundahera Gurgaon Haryana-122016, declare that name of my father has been wrongly written as SUNIL YADAV in my 12th class educational documents. The actual name of my father is SUNIL KUMAR which may be amended accordingly.

यूपीएस चुन चुके कर्मचारी एनपीएस में एक बार फिर कर सकते हैं स्विच

-यह सुविधा दंडात्मक या अनुशासनात्मक की चल रही जांच कर्मचारी को नहीं मिलेगी

नई दिल्ली।

केंद्र सरकार ने सोमवार को केंद्रीय कर्मचारियों को एक विशेष अवसर प्रदान किया है। जिन कर्मचारियों ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम चुनी है, वे अब राष्ट्रीय पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में एक बार और एकतरफा बदलाव कर सकते हैं।

वित्त मंत्रालय के मुताबिक यह विकल्प कर्मचारी अपनी सेवानिवृत्ति से कम से कम एक साल पहले या यदि स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले रहे हों, तो निर्धारित सेवानिवृत्ति तिथि से तीन महीने पहले तक इस्तेमाल कर सकते हैं। विभाग ने स्पष्ट किया है कि यदि कर्मचारी इस सुविधा का समय पर लाभ नहीं उठाते हैं, तो उन्हें स्वचालित रूप से यूपीएस के तहत बनाए रखा जाएगा। यह सुविधा उन कर्मचारियों के लिए उपलब्ध नहीं होगी जिनके खिलाफ बर्खास्तगी, अनिवार्य सेवानिवृत्ति, दंडात्मक कार्रवाई या अनुशासनात्मक जांच चल रही है या प्रस्तावित है।

यूपीएस से एनपीएस में ट्रांसफर करने पर कर्मचारी पर पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी के 2015 के एग्जिट और विड्रॉल नियम लागू होंगे। इसका मतलब है कि अब उन्हें यूपीएस के तहत सुनिश्चित भुगतान की गारंटी नहीं मिलेगी। सरकार द्वारा एनपीएस के डिफॉल्ट निवेश पैटर्न में 4 फीसदी का योगदान उनके एनपीएस खाते में समय पर जमा किया जाएगा।

वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक अब तक केवल 1.37 फीसदी केंद्रीय कर्मचारियों ने यूपीएस चुना है। जुलाई 2025 तक कुल 31,555 कर्मचारियों ने इस योजना के तहत विकल्प अपनाया था। सरकार ने पहले 30 जून 2025 की समय सीमा को बढ़ाकर सितंबर 2025 कर दिया। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि यूपीएस, एनपीएस के विकल्प के रूप में पेश की है ताकि कर्मचारियों को तय पेंशन का लाभ मिल सके। अगस्त 2024 में सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा था कि इस योजना से करीब 2.3 लाख केंद्रीय कर्मचारियों को लाभ होगा।

केंद्रीय कर्मचारियों और अन्य पेशेवरों के लिए पेंशन योजनाओं का चुनाव अहम है।

नया टैबलेट वनप्लस पेड 3 जल्द होगा लॉन्च

नई दिल्ली ।

भारतीय बाजार में वनप्लस जल्द ही अपने नए टैबलेट वनप्लस पेड 3 को लॉन्च करने जा रही है। कंपनी इसे प्रीमियम कैटेगरी में उतारने की तैयारी कर रही है और इसकी सबसे बड़ी खासियत हाई-परफॉर्मेंस स्नैपड्रेगन 8 इलाइट चिपसेट है, जो इसे गेमिंग और हैवी मल्टीटास्किंग के लिए बेहतरीन विकल्प बनाएगा। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म अमेजन पर यह टैबलेट 'कमिंग सून' टैग के साथ दिखाई दे रहा है। डिज़ाइन और कलर वेरिएंट की बात करें तो वनप्लस पैड 3 दो शेड्स फ्रॉस्टेड सिल्वर और स्टॉर्म ब्लू–में उपलब्ध होगा। स्टोरेज ऑप्शन में यूजर्स को 12जीबी रैम प्लस 256जीबी और 16जीबी रैम प्लस 512जीबी के दो वैरिएंट मिलेंगे। माना जा रहा है कि कंपनी इसे केवल वायफाय मॉडल में लॉन्च करेगी। इसके साथ वनप्लस स्टायलो 2, स्मार्ट की-बोर्ड और फोलियो केस जैसे एक्सेसरीज भी पेश किए जा सकते हैं। स्पेसिफिकेशंस की बात करें तो टैबलेट में 13.2 इंच का बड़ा एलसीडी डिस्प्ले मिलेगा, जिसमें 144एचझेड रिफ्रेश रेट और 900 निट्स ब्राइटनेस का सपोर्ट होगा। पावर के लिए इसमें 12140 एमएएच की बैटरी होगी, जो 80वॉट फास्ट चार्जिंग के साथ आएगी। सॉफ्टवेयर लेवल पर डिवाइस एंडाएड 15 आधारित आक्सीजन ओएस 15 पर चलेगा। फोटोग्राफी के लिए टैबलेट में पीछे 13एमपी का प्राइमरी कैमरा और फ्रंट में 8एमपी कैमरा मिलेगा।

बेहतरीन ऑडियो क्वॉलिटी के लिए कंपनी इसमें 8-स्पीकर सिस्टम देने वाली है। डिवाइस का वजन करीब 675 ग्राम और मोटाई केवल 5.97एमएम है, जिससे यह हल्का और प्रीमियम लुक वाला होगा।

अगर हर साल एक ईएमआई अलग से चुकाएं तो 25 साल का होम लोन 10 साल में चुक जाएगा

नई दिल्ली।

ज्यादातर घर खरीदारों के लिए सबसे बड़ा आर्थिक बोझ होता है होम लोन की ईएमआई चुकाना। शुरूआती सालों में ज्यादातर लोग सोचते हैं कि उनकी किश्तें चुकाने के बाद भी होम लोन कम क्यों नहीं होता है। वजह है कि लोन की शुरुआत में करीब 90 फीसदी ईएमआई ब्याज में चला जाता है और सिर्फ 10 फीसदी मूलधन घटता है। जैसे किसी ने 50 लाख का होम लोन 8.5 फीसदी ब्याज दर पर 25 साल के लिए लिया है। उसकी ईएमआई बनेगी करीब 40,000 रुपए। पहले साल में उसने करीब 4.8 लाख ईएमआई भरी, लेकिन उसमें से केवल 60,000 रुपए ही मूलधन घटा, बाकी 4.2 लाख बैंक को ब्याज में चला गया। यही वजह है कि कई साल तक लोगों को लगता है कि उनका कर्ज कम नहीं हो रहा।

सर्टिफाइड फाइनेंशियल प्लानर का कहना है कि थोड़ी-सी समझदारी से आप 25 साल का लोन सिर्फ 10 साल में खत्म कर सकते हैं और लाखों रुपए ब्याज बचा सकते हैं। अगर आप हर साल 40,000 रुपए की एक अतिरिक्त ईएमआई भर दें, तो यह सीधा आपके मूलधन से घटता है। इस कदम से ही लोन की अवधि 25 साल से घटकर 20 साल रह जाती है। मान लीजिए आपने पहले साल 40,000 रुपए ईएमआई से शुरुआत की। दूसरे साल इसे 43,000 कर दी और तीसरे साल 46,200 कर दी इस तरह साल-दर-साल ईएमआई बढ़ाने से यह आपके वेतन वृद्धि के साथ तालमेल बिठा लेता है। इस रणनीति से लोन की अवधि घटकर 12 साल रह जाती है। अगर आप हर साल एक अतिरिक्त ईएमआई भी भरें और ईएमआई में 7.5फीसदी की बढ़ोतरी भी करें, तो लोन सिर्फ 10 साल में खत्म हो सकता है। ऐसा करने से आप करीब 35-40 लाख का ब्याज बचा सकते हैं।

अगर आप भी होम लोन ले रहे हैं, तो 20-25 साल तक एक जैसी ईएमआई मत रखिए। वेतन बढ़ने के साथ ईएमआई बढ़ाएं और साल में एक अतिरिक्त ईएमआई जरूर भरें। इन दोनों उपायों को मिलाकर अपनाएंगे तो आप भी सिर्फ 10 साल में पूरा लोन चुका सकते हैं।

पटेल रिटेल आईपीओ की जबरदस्त लिस्टिंग, निवेशकों को हर लॉट पर हुआ 2900 का फायदा

नई दिल्ली।

रिटेल सुपरमार्केट चेन चलाने वाली पटेल रिटेल आईपीओ के शेयर मंगलवार को शेयर बाजार में गिरावट के बावजूद शानदार प्रीमियम पर लिस्ट हो गए। पटेल रिटेल आईपीओ के शेयर बीएसई पर 305 रुपए प्रति शेयर पर लस्ट हुए। यह आईपीओ प्राइस बैंड के अपर एंड 255 रुपए की तुलना में 50 रुपए या 19.61 फीसदी का प्रीमियम दर्शाता है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर पटेल रिटेल के शेयर 300 रुपए पर लिस्ट हुए। यह इश्यू प्राइस के मुकाबले 45 रुपए या 17.65 फीसदी जायदा है।

पटेल रिटेल के आईपीओ की लिस्टिंग करीब बाजार अनुमानों के अनुरूप ही रही। एक्सचेंजों पर लिस्ट होने से पहले कंपनी के नॉन-लिस्टेड शेयर ग्रे मार्केट में करीब 307 रुपए पर कारोबार कर रहे थे। यह इश्यू प्राइस पर 52 या करीब 20.39 फीसदी के ग्रे मार्केट प्रीमियम को दर्शाता है। आईपीओ के हर लॉट में 58 शेयर था। इस तरह, निवेशकों को हर लॉट पर 2900 रुपए का तगड़ा फायदा हुआ।

एनएसई के आंकड़ों के मुताबिक पटेल रिटेल आईपीओ को 78.15 लाख शेयरों के मुकाबले 74.79 करोड़ शेयरों के लिए बोलियां मिलीं। आईपीओ 19 से 21 अगस्त तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। आईपीओ के रिटेल निवेशकों वाले हिस्से को 42.49 गुना सब्सक्राइब किया गया। नॉन-इंस्टीट्यूशनल निवेशकों का हिस्सा 108.17 गुना भरा। वहीं, क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स की श्रेणी को 272.43 गुना सब्सक्रिप्शन मिला। कंपनी ने डीआरएचपी में बताया था कि आईपीओ से जुटाई गई राशि का इस्तेमाल कर्ज चुकाने, वर्किंग कैपिटल जरूरतों और सामान्य कॉर्पोरेट कार्यों के लिए किया जाएगा। पटेल रिटेल का आईपीओ का प्राइस बैंड 237 से 255 रुपए प्रति शेयर रखा गया था। इसका लॉट साइज़ 58 शेयरों का था। रिटेल निवेशक मैक्सिमम 13 लॉट या 754 शेयरों के लिए बोली लगा सकते हैं। पटेल रिटेल आईपीओ सब्सक्राइब करने के लिए 21 अगस्त को बंद हो गया था। शेयरों का अलॉटमेंट 22 अगस्त को फाइनल हुआ था।

भारत पर बुधवार से लागू हो जाएगा 50 फीसदी टैरिफ, ऑफिशियल नोटिफिकेशन जारी

नई दिल्ली।

अमेरिका ने भारत से आयातित कई वस्तुओं पर कुल 50 फीसदी टैरिफ लगाने का ऑफिशियल नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। यह नया टैरिफ 27 अगस्त को 12ः01 बजे (ईएसटी) से लागू होगा। अमेरिकी प्रशासन का दावा है कि भारत रूस से तेल खरीदकर अप्रत्यक्ष रूप से यूक्रेन युद्ध में मास्को को वित्तीय सहायता दे रहा है। यह 50 फीसदी टैरिफ, 1 अगस्त से पहले लगाए गए 25 फीसदी रेसिप्रोकल टैरिफ में शामिल अतिरिक्त टैरिफ के साथ लागू होगा।

इसका टैरिफ का प्रभाव भारत के 87 अरब डॉलर यानी करीब 7.3 लाख करोड़ रुपए के अमेरिकी निर्यात पर पड़ सकता है, जिसमें कपड़ा, रत्न और आभूषण, चमड़ा, समुद्री उत्पाद, रसायन और ऑटो पार्ट्स जैसे उद्योग सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे। हालांकि, फार्मास्यूटिकल्स, सेमीकंडक्टर्स और ऊर्जा संसाधन जैसी कुछ अहम श्रेणियों को इससे छूट दी गई है।

भारत सरकार ने अमेरिका के इस कदम को अन्यायपूर्ण बताया है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत अपनी ऊर्जा जरुरतों और राष्ट्रीय हितों के आधार पर रूस से तेल खरीद रहा है और अमेरिका ने पहले ही ग्लोबल एनर्जी मार्केट की स्थिरता के लिए इस दिशा में कदम उठाने की सलाह दी थी। भारत फिलहाल तुरंत जवाबी टैरिफ लगाने के बजाय कूटनीतिक बातचीत और निर्यातकों को प्रोत्साहन देने जैसे उपायों पर विचार कर रहा है।

पीएम मोदी ने भी अमेरिकी टैरिफ से पहले स्पष्ट संदेश दिया कि भारत अपनी अर्थव्यवस्था और निर्यातकों की सुरक्षा के लिए हर संभव कदम उठाएगा।

अहमदाबाद में जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हम किसी भी आर्थिक दबाव के बावजूद अपने रास्ते पर चलते रहेंगे। आज आत्मनिर्भर भारत अभियान को गुजरात से नई ऊर्जा मिल रही है, जो पिछले दो दशकों की मेहनत का परिणाम है।

रुपया गिरावट के साथ बंद

मुंबई ।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले मंगलवार को भारतीय रुपया सात पैसे की गिरावट के साथ ही 87.63 पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस रुपया 87.56 पर बंद हुआ था।सकारात्मक घरेलू संकेतों के बीच गत दिव स सुबह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 18 पैसे मजबूत होकर 87.34 पर पहुंच गया। वहीं अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 87.38 पर खुला और फिर बढ़त दर्ज करते हुए 87.34 प्रति डॉलर पर आ गया। यह शुक्रवार के बंद भाव 87.52 से 18 पैसे की मजबूती दिखाता है। इस मजबूती का प्रमुख कारण घरेलू शेयर बाजारों में जारी तेजी रही। बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 285.62 अंकों की बढ़त के साथ 81,592.47 पर पहुंचा, जबकि एनएसई निफ्टी 91.25 अंकों की तेजी के साथ 24,961.35 पर कारोबार कर रहा था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डॉलर सूचकांक भी 0.15 फीसदी बढ़कर 97.86 पर आ गया, जो छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की मजबूती को दर्शाता है। वहीं, कच्चे तेल की कीमतों में भी मामूली बढ़त देखी गई। ब्रेंट क्रूड 0.10 फीसदी चढ़कर 67.80 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

गणेशोत्सव के अवसर पर देश भर में बैंक बंद रहेंगे, आज शेयर बाजार भी बंद रहेगा

मुंबई। मुंबई समेत देश भर में आज से गणेशोत्सव शुरू जाएगा। मुंबई और इसके आस-पास में रहने वाले लाखों कोंकणवासी गणेशोत्सव के लिए अपने-अपने गांवों के लिए रवाना हो चुके हैं। गणपति उत्सव के अवसर पर कई जगहों पर छुट्टियों की घोषणा की गई है। गणेशोत्सव के दौरान बैंकों में भी छुट्टियां रहती हैं। इसलिए अगर आपको इस दौरान बैंक में कोई काम है, तो छुट्टियों की सूची पहले ही देख लें। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने अगस्त महीने के आखिरी हफ्ते की छुट्टियों की सूची घोषित की है। इसमें 25 से 31 अगस्त तक कई दिन बैंक बंद रहेंगे। अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग त्योहार हैं। इसके साथ ही वीकेंड की छुट्टी भी रहेगी। आईये जानते हैं त्यौहारों पर कितने दिन बंद रहेंगे बैंक-

* 27 अगस्त (बुधवार)- गणेशोत्सव के अवसर पर 27 अगस्त को कई राज्यों में छुट्टियां रहेंगी। अहमदाबाद, बेलापुर, मुंबई और नागपुर, बेंगलुरु, भुवनेश्वर, चेन्नई, हैदराबाद, पणजी, विजयवाड़ा बंद रहेंगे। गणेश चतुर्थी के अवसर पर भी छुट्टियां रहेंगी।
* 28 अगस्त- भुवनेश्वर (ओडिशा) और पणजी में बैंक बंद रहेंगे।
* 31 अगस्त (रविवार)- वीकेंड छुट्टी के मद्देनजर रविवार को सभी बैंक बंद रहेंगे।

- आज शेयर बाजार भी बंद रहेगा

शेयर बाजार भी आज बंद रहेगा। आज दिनांक 27 अगस्त को बीएसई और एनएसई बंद रहेंगे। गणेश चतुर्थी के अवसर पर शेयर बाजार में भी छुट्टियां रहेंगी। इस दिन बैंक बंद रहेंगे। लेकिन एटीएम कार्ड, मोबाइल बैंकिंग, एटीएम, यूपीआई सुविधाएं खुली रहेंगी।

विक्रम सोलर आईपीओ प्रीमियम पर हुए लिस्टिंग, निवेशकों से मिला जोरदार रिस्पांस

नई दिल्ली। विक्रम सोलर आईपीओ के शेयर मंगलवार को शेयर बाजार में गिरावट के बावजूद प्रीमियम पर लिस्ट हो गए हैं। विक्रम सोलर के शेयर नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर 338 रुपए प्रति शेयर पर लिस्ट हुए। यह 332 रुपए प्रति शेयर के प्राइस बैंड के मुकाबले 6 रुपए या 1.8 फीसदी ज्यादा है। बीएसई पर विक्रम सोलर आईपीओ के शेयर 340 रुपए प्रति शेयर के भाव पर लिस्ट हो गए हैं। यह प्राइस बैंड के मुकाबले 8 रुपए या 2.4 फीसदी का प्रीमियम दर्शाता है। आईपीओ की लिस्टिंग ग्रे मार्केट की उम्मीदों से थोड़ी कम रही। ग्रे मार्केट में कंपनी के शेयर 367 रुपए पर कारोबार कर रहे थे। यह इश्यू प्राइस से 35 रुपए या 11.14 फीसदी का ग्रे मार्केट प्रीमियम दर्शाता है। विक्रम सोलर के 2,079 करोड़ रुपए के पब्लिक ऑफर को निवेशकों से जोरदार रिस्पांस मिला। एनएसई के आंकड़ों के मुताबिक इश्यू को करीब 143 गुना ओवरसब्सक्राइब हुआ।

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

सेंसेक्स 849 , निफ्टी 255 अंक गिरा

मुम्बई । अमेरिका के टैरिफ लगाने की आधिकारिक घोषणा के बाद पड़े दबाव से भारतीय शेयर बाजार मंगलवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के दूसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 849.37 अंक नीचे आकर 80,786.54 पर बंद हुआ। जबकि 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 255.70 अंक नीचे आकर 24,712.05 पर बंद हुआ। आज एफएमसीजी को छोड़कर सभी क्षेत्रों में गिरावट रही। धातु , रियल्टी ओर फार्मा व पीएसयू कंपनियों के शेयर सबसे अधिक गिरे।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स के शेयरों में सन फार्मास्युटिकल, टाटा स्टील, ट्रेंट, बजाज फाइनेंस, महिंद्रा एंड महिंद्रा, बजाज फिनसर्व, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एक्सिस बैंक, टेक महिंद्रा, अदाणी पोर्ट्स, टाइटन, बीईएल और लार्सन एंड टुब्रो के शेयर गिरे जबकि हिंदुस्तान यूनिलीवर, मारुति सुजुकी इंडिया, आईटीसी, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर बढ़त के साथ बंद हुए। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों ने सोमवार को 2,466.24 करोड़ रुपये के शेयर बेचे।

इससे भी बाजार पर दबाव आया। इससे पहले आज सुबह सेंसेक्स 200 से अधिक अंक की गिरावट के साथ ही 81,377.39 पर खुला। खुलते ही इसमें बिकवाली गहरा गई। सुबह यह 534.30 अंक या 0.65 फीसदी की गिरावट लेकर 81,101.61 पर कारोबार कर रहा था। वहीं इसी प्रकार 50 शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी गिरावट के साथ ही 24,899 पर खुला। खुलते ही इंडेक्स में बिकवाली होने से ये नीचे आने लगा। सुबह यह 180 अंक या 0.72 फीसदी की गिरावट के साथ 24,787 पर कारोबार कर रहा था। मिडकैप और स्मालकैप शेयरों में भी गिरावट रही। निवेशकों का ध्यान आज अमेरिका की तरफ से जारी नोटिस पर रहा। अमेरिका ने भारत से आयान पर कुल 50 फीसदी टैरिफ लगाने की आधिकारिक घोषणा की है। यह नया टैरिफ 27 अगस्त से लागू होगा। यह 50 फीसदी टैरिफ, 1 अगस्त से पहले लगाए गए 25 फीसदी रेसिप्रोकल टैरिफ में शामिल अतिरिक्त शुल्क के साथ लागू होगा। एशिया के ज़्यादातर इक्विटी बेंचमार्क डॉलर के साथ-साथ गिरे। एशिया पैसिफिक में 0.7 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। इसकी वजह जापान का निक्केई 1.09 फीसदी की गिरावट और दक्षिण कोरिया का कोस्पी 0.86 फीसदी की गिरावट आई।हांगकांग का हैंगसेंग, जापान का निक्की, दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और चीन का शंघाई कम्पोजिट नुकसान में रहे। यूरोपीय बाजार भी गिरा।

टैक्स स्ट्रक्चर में बदलाव का लाभ मिलेगा कार खरीदने वालों को

नई दिल्ली । ऑटोमोबाइल सेक्टर को केंद्र सरकार ने बड़ी राहत देते हुए टैक्स स्ट्रक्चर में बदलाव की घोषणा की है। इस फैसले का सीधा फायदा ग्राहकों को मिलेगा। केंद्र सरकार की इस घोषणा से छोटी कारें अब 1 लाख रुपये तक सस्ती हो जाएंगी, वहीं एसयूवी और सेडान पर भी कीमतों में कमी देखने को मिलेगी। जानकारी के मुताबिक, यह राहत नई टैक्स पॉलिसी और प्रोडक्शन कॉस्ट कम होने के चलते मिल रही है। ऑटोमोबाइल कंपनियों का कहना है कि टैक्स घटने से छोटे हैचबैक मॉडल्स पर 50 हजार से लेकर 1 लाख रुपये तक का फायदा उपभोक्ताओं को होगा। वहीं मिड-सेगमेंट सेडान और पॉपुलर एसयूवी कारों की कीमत भी 80 हजार रुपये तक कम हो सकती है। मारुति सुजुकी, हुंडई, टाटा मोटर्स और महिंद्रा जैसी कंपनियां जल्द ही नई कीमतों की घोषणा कर सकती हैं। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि कीमतों में इस गिरावट से त्योहारी सीजन में कारों की बिक्री में तेजी आएगी। बीते कुछ समय से महंगाई और बढ़ती ब्याज दरों के कारण कारों की डिमांड धीमी पड़ी थी, ऐसे में यह राहत ग्राहकों के साथ-साथ कंपनियों के लिए भी फायदेमंद साबित होगी। ऑटोमोबाइल डीलरों का कहना है कि छोटे शहरों और कस्बों में ग्राहकों का सबसे ज्यादा रुझान छोटी कारों की ओर होता है। ऐसे में 1 लाख रुपये तक की कीमत घटने से पहली बार कार खरीदने वालों की संख्या में इजाफा होगा। वहीं एसयूवी और सेडान की कीमतें घटने से मिडिल क्लास खरीदारों को बड़ी राहत मिलेगी।

आईसीआईसीआई म्यूचुअल फंड ने विदेशी निवेशकों के लिए डेडिटेकेट ब्रांच खोली

यह फंड ग्लोबल पूंजी और भारत में निवेश के अवसरों के बीच सेतु का काम करेगा

नई दिल्ली।

विदेशी निवेशक भारतीय शेयर बाजार में जमकर निवेश करते हैं और कुछ म्यूचुअल फंड में भी उनका निवेश बढ़ रहा है, लेकिन आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड ने विदेशी निवेशकों के लिए पहली बार एक डेडिटेकेट ब्रांच खोली है। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल ने विदेशी निवेशकों के लिए भारत केंद्रित फंड की घोषणा की है। फंड हाउस ने गिफ्ट सिटी में इसके लिए नया ऑफिस भी खोला गया है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड ने इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विसेस सेंटर, गिफ्ट सिटी, गुजरात आईएफएससी शाखा में अपनी भी एक शाखा खोली है। आईएफएससी शाखा ने आईएफएससीए के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण के तहत पंजीकरण कराया है। यह शाखा निधि प्रबंधन इकाई (खुदरा) के रूप में पंजीकरण हासिल कर सर्विस उपलब्ध कराएगी। फंड हाउस ने बताया कि आईसीआईसीआई म्यूचुअल फंड की नई ब्रांच से फंड स्कीम की रिटेल योजनाओं और एक्सचेंज ट्रेडेड फंड यानी ईटीएफ के तहत संपत्ति का मैनेजमेंट किया जा सकेगा। यह फंड ग्लोबल पूंजी और भारत में निवेश के अवसरों के बीच एक ब्रिज का काम करेगा। इसकी मदद से विदेशी निवेश को भारतीय फंड बाजार में आकर्षित किया जा सकेगा। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल फंड हाउस का कहना है कि एएमसी की आईएफएससी शाखा ने भारत के वित्तीय बाजार में अंतर्राष्ट्रीय पूंजी लाने के लिए अपनी पहली प्रबंधित योजना का अनावरण किया है। उद्घाटन के अवसर पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एएमसी लिमिटेड के मुख्य वित्तीय अधिकारी ने कहा कि हमारा मानना है कि भारत अपनी विकास यात्रा में बदलाव की ओर बढ़ रहा है। यह मजबूत जनसांख्यिकी, तेजी से बढ़ते शहरीकरण, डिजिटल अर्थव्यवस्था और दूरगामी नीतिगत सुधारों पर आधारित है। इसी अवसर को भुनाने के लिए फंड हाउस ने पहली बार यह सुविधा शुरू की है। यह फंड हाउस भारतीय बाजारों में निवेश करने के इच्छुक दीर्घकालिक निवेशकों के लिए एक अवसर प्रस्तुत करता है।

लैंड क्रूजर एफजे को ग्लोबल लेवल पर लॉन्च करने की तैयारी

नई दिल्ली ।

टोयोटा कंपनी जल्द ही लैंड क्रूजर एफजे को ग्लोबल लेवल पर लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। रिपोर्ट्स के अनुसार इसकी मास प्रोडक्शन अगले साल की दूसरी तिमाही से शुरू होगी। यह नई एसयूवी टोयोटा के आईएमवी 0 लैडर-फ्रेम प्लेटफॉर्म पर तैयार होगी, जिस पर विदेशों में बिक रही हायलक्स चैंप भी बनाई गई है। डिजाइन पेटेंट लीक होने के बाद इस एसयूवी का लुक सामने आया है। इसमें सी-शेप ष्ठक्ररु वाले स्क्वायर हेडलैंप्स, चौड़े व्हील आर्च और स्लैब-स्टाइल रूफलाइन दी गई है। इसे कंपनी फॉर्च्यूनर से नीचे पोजिशन करने वाली है, ताकि यह ऑफ-रोड पोर्टफोलियो में एंट्री-लेवल ऑप्शन के तौर पर खरीदारों तक पहुंचे। पावरट्रेन की बात करें तो बेस वेरिएंट में 1.5-लीटर डीजल इंजन मिलने की उम्मीद है, जबकि हाई वेरिएंट्स में 48वी माइल्ड-हाइब्रिड टेक्नोलॉजी के साथ 2.8-लीटर जीडी डीज़ल इंजन दिया जा सकता है। इसके अलावा लाइनअप में 2.0-लीटर और 2.7-लीटर पेट्रोल इंजन भी शामिल किए जाने की संभावना है। टोयोटा इसमें परमानेंट 4डब्ल्यूडी सिस्टम, टॉर्सन लिमिटेड-स्लिप डिफरेंशियल और मल्टीपल टेरेन मोड्स जैसे फीचर्स देने वाली है, जिससे यह किसी भी तरह की सड़क और कठिन रास्तों पर बेहतर परफॉर्मेंस दे सकेगी। भारत में इसके लॉन्च को लेकर कंपनी ने अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है।

गणेश हैं विघ्नहर्ता-मंगलकर्ता एवं जीवंत राष्ट्रीयता के प्रतीक

ललित गर्ग

भारतीय धर्म-दर्शन में गणेश जी 'आरंभ के देवता' हैं। वैदिक परंपरा से लेकर पुराणों और लोककथाओं तक, वे हर युग में 'मार्गदर्शक' बने रहे हैं। यही कारण है कि उन्हें 'सर्वोपास्य' देवता कहा गया, सभी पंथों, संप्रदायों और वर्गों के लोग उनके पूजन में समान रूप से भाग लेते हैं। गणेशजी को प्रथम लिपिकार माना जाता है उन्होंने ही देवताओं की प्रार्थना पर वेद व्यासजी द्वारा रचित महाभारत को लिपिबद्ध किया था।

भारतीय संस्कृति और धर्मजगत में गणेशजी का स्थान अद्वितीय है। वे विघ्नहर्ता, बुद्धिदाता, मंगलकर्ता और उन्नत राष्ट्र-निमार्ता हैं। वे न केवल भारतीय संस्कृति एवं जीवनशैली के कण-कण में व्याप्त है बल्कि विदेशों में भी घर-कारों-कार्यालयों एवं उत्पाद केन्द्रों में विद्यमान हैं। किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत उनके पूजन के बिना अधूरी मानी जाती है। उनके स्वरूप में ही गहन प्रतीकात्मकता निहित है, हाथी का विशाल मस्तक विवेक और दूरदर्शिता का प्रतीक है, छोटा मुख संयमित वाणी का द्योतक है, बड़े कान अधिक सुनने और कम बोलने की शिक्षा देते हैं, छोटा नेत्र गहराई से देखने की प्रेरणा देता है और विशाल उदर सहिष्णुता व समावेशिता का बोध कराता है। मनुष्य के दैनिक कार्यों में सफलता, सुख-समृद्धि की कामना, बुद्धि एवं ज्ञान के विकास एवं किसी भी मंगल कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने हेतु गणेशजी को ही सर्वप्रथम पूजा जाता है, याद किया जाता है। प्रथम देव होने के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है, लोकनायक का चरित्र है। गणेश शिवजी और पार्वती के पुत्र हैं, ऐसे सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदैशिक लोकप्रियता वाले देव का जन्मोत्सव भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को सम्पूर्ण दुनिया में उमंग एवं हर्षोल्लास से मनाया जाता है। गणेशोत्सव हिन्दुओं का एक उत्सव है।

भारतीय धर्म-दर्शन में गणेश जी 'आरंभ के देवता' हैं। वैदिक परंपरा से लेकर पुराणों और लोककथाओं तक, वे हर युग में 'मार्गदर्शक' बने रहे हैं। यही कारण है कि उन्हें 'सर्वोपास्य' देवता कहा गया, सभी पंथों, संप्रदायों और वर्गों के लोग उनके पूजन में समान रूप से भाग लेते हैं। गणेशजी को प्रथम लिपिकार माना जाता है उन्होंने ही देवताओं की प्रार्थना पर वेद व्यासजी द्वारा रचित महाभारत को लिपिबद्ध किया था। जैन एवं बौद्ध धर्मों में भी गणेश पूजा का विधान है। अनंतकाल से अनेक नामों से गणेश दुख, भय, चिन्ता इत्यादि विघ्न के हरणकर्ता के रूप में पूजित होकर मानवों का संताप हरते रहे हैं। गणेश जी का पूजन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का माध्यम भी है। स्वतंत्रता संग्राम के दौर में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गणेशोत्सव को सार्वजनिक रूप दिया। इससे गणेश चतुर्थी केवल पारिवारिक पर्व न रहकर जनजागरण और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक बन गई। तिलक ने इसे सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चेतना के मंच के रूप में स्थापित किया, जिसने भारत को स्वतंत्रता संग्राम के लिए एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्तमान काल में स्वतंत्रता की रक्षा, राष्ट्रीय चेतना, भावनात्मक एकता और अखंडता की रक्षा के लिए गणेशजी की पूजा और गणेश चतुर्थी के पर्व का उत्साहपूर्वक मनाने का अपना विशेष महत्व है। आज के समय में जब समाज विभिन्न मत-मतांतरों, भाषाओं और संस्कृतियों में बंटा दिखाई देता है, तब गणेशजी पुनः राष्ट्रीय एकता के प्रतीक बनकर सामने आते हैं। उनका स्वरूप हमें विविधता में एकता, सहिष्णुता, धैर्य और विवेकपूर्ण निर्णय की प्रेरणा देता है। गणेश जी हमें बताते हैं कि बुद्धि और करुणा का समन्वय ही प्रगति का मार्ग है। आज जब विश्व हिंसा, कट्टरता और असहिष्णुता से जूझ रहा है, तब गणेश चतुर्थी का पर्व हमें समन्वय और सहयोग का संदेश देता है। वे केवल धार्मिक आस्था के देवता ही नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक और राष्ट्रीय एकता के जीवंत प्रतीक हैं।

हिन्दुओं में गणेशजी के जन्म के विषय में अलग-अलग कथाएँ प्रचलित हैं। वराह पुराण के अनुसार स्वयं शिव ने पंच तत्त्वों को मिला कर गणेश का निर्माण बहुत तन्मयता से किया। जिससे वे अत्यंत सुन्दर और आकर्षक बने तो देवताओं में खलबली मच गयी, स्थिति को भांप कर शिव ने गणेश के पेट का आकार बढ़ा दिया और सिर को गजानन की आकृति का कर दिया ताकि उनके सौन्दर्य और आकर्षण को कम किया जा सके। शिव पुराण के अनुसार एक बार पार्वती ने अपने उबटन के मैल से एक पुतला बनाया और उसमें जीवन डाल दिया। इसके उपरांत उन्होंने इस जीवधारी पुतले को द्वार पर प्रहरी के रूप में बैठा दिया और उसे आदेश दिया कि वह किसी भी व्यक्ति को अंदर न आने दे। इसके बाद वे स्नान करने लग गई। संयोगवश कुछ ही समय बाद शिव उधर आ निकले। उनसे सर्वथा अपरिचित गणेश ने शिव को भी अंदर जाने से रोक दिया। इस पर शिव अत्यंत क्रोधित हुए और उन्होंने अपने त्रिशूल से गणेश का मस्तक काट दिया। पार्वती ने यह देखा तो वे बहुत दुखी हुईं। तब पार्वती को प्रसन्न करने के लिए शिव ने एक हाथी के बच्चे का सिर गणेश के धड़ से लगाकर उन्हें पुनर्जीवित कर दिया। तभी से गणेश, गजानन कहलाए। लेकिन बालक की आकृति से पार्वती बहुत दुखी हुई तो सभी देवताओं ने उन्हें आशीर्वाद और अतुलनीय उपहार भेंट किए, उन्हें प्रथम देव के रूप में सभी अधिकार प्रदत्त किये। इंद्र ने अंकुश, वरुण ने पाश, ब्रह्मा ने अमरत्व, लक्ष्मी ने ऋद्धि-सिद्धि और सरस्वती ने समस्त विद्याएँ प्रदान कर उन्हें देवताओं में सर्वोपरि बना दिया।

ऋद्धि-सिद्धि गणेशजी की पत्नियाँ हैं। वे प्रजापति विश्वकर्मा की पुत्रियाँ हैं। गणेश की पूजा यदि विधिवत की जाए, तो इनकी पतिव्रता पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि भी प्रसन्न होकर घर-परिवार में सुख-शांति-समृद्धि और संतान को निर्मल विद्या-बुद्धि देती है। सिद्धि से 'क्षेम' और ऋद्धि से 'लाभ' नाम के शोभा सम्पन्न दो पुत्र हुए। जहां भगवान गणेश विघ्नहर्ता हैं तो उनकी पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि यशस्वी, वैभवशाली व प्रतिष्ठित बनाने वाली होती है। वहीं शुभ-लाभ हर सुख-सौभाग्य देने के साथ उसे स्थायी और सुरक्षित रखते हैं। जन-जन के कल्याण, धर्म के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने एवं सुख-समृद्धि-निर्विघ्न शासन व्यवस्था स्थापित करने के कारण मानव-जाति सदा उनकी ऋणी रहेगी। आज के शासनकर्ताओं को गणेश के पदचिन्हों पर चलने की जरूरत है।

गणेशजी की सम्पूर्ण शारीरिक रचना के पीछे भगवान शिव की व्यापक सोच रही है। एक कुशल, न्यायप्रिय एवं सशक्त शासक एवं देव के समस्त गुण उनमें समाहित किये गये हैं। गणेशजी का गज मस्तक हैं अर्थात वह बुद्धि के देवता हैं। वे विवेकशील हैं। उनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त कुशाग्र हैं। हाथी की भ्रांति उनकी प्रवृत्ति प्रेरणा का उद्गम स्थान धीर, गंभीर, शांत और स्थिर चेतना में है। हाथी की आंखें अपेक्षाकृत बहुत छोटी होती हैं और उन आँखों के भावों को समझ पाना बहुत कठिन होता है। दरअसल गणेश तत्ववेत्ता के आदर्श रूप हैं। गण के नेता में गुरुता और गंभीरता होनी चाहिए। उनके स्थूल शरीर में वह गुरुता निहित है। उनका विशाल शरीर सदैव सतर्क रहने तथा सभी परिस्थितियों एवं कठिनाइयों का सामना करने के लिए तत्पर रहने की भी प्रेरणा देता है। उनका लंबोदर दूसरों की बातों की गोपनीयता, बुराइयों, कमजोरियों को स्वयं में समाविष्ट कर लेने की शिक्षा देता है तथा सभी प्रकार की निंदा, आलोचना को अपने उदर में रख कर अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहने की प्रेरणा देता है। छोटा मुख कम, तर्कपूर्ण तथा मृदुभाषी होने का द्योतक है।

गणेश का व्यक्तित्व रहस्यमय हैं, जिसे पढ़ पाना एवं समझ पाना हर किसी के लिये संभव नहीं है। शासक भी वही सफल होता है जिसके मनोभावों को पढ़ा और समझा न जा सके। इस प्रकार अच्छा शासक वही होता है जो दूसरों के मन को तो अच्छी तरह से पढ़ ले परन्तु उसके मन को कोई न समझ सके। दरअसल वे शौर्य, साहस तथा नेतृत्व के भी प्रतीक हैं। उनके हेरंब रूप में युद्धप्रियता का, विनायक रूप में यक्षों जैसी विकरालता का और विघ्नेश्वर रूप में लोकरंजक एवं परोपकारी स्वरूप का दर्शन होता है। गण का अर्थ है समूह। गणेश समूह के स्वामी हैं इसीलिए उन्हें गणाध्यक्ष, लोकनायक, गणपति आदि नामों से पुकारा जाता है। इसलिए, गणेश चतुर्थी मनाना केवल धार्मिक परंपरा का निर्वाह नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना को जागृत करने, सामाजिक समरसता को मजबूत करने और राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करने का संकल्प है।

संपादकीय

प्रकृति का रौद्र रूप

देश में हो रही जबरदस्त बरसात के कारण जन-जीवन बुरी तरह अस्त-व्यस्त है। जम्मू-कश्मीर में बाढ़ को देखते हुए हाई एलर्ट जारी किया गया है। हिमाचल में दो राष्ट्रमार्गों समेत तकरीबन चार सौ सड़कों को वाहनों के आवागमन के लिए बंद कर दिया है। राजस्थान के कई इलाकों में जलभराव के चलते हालात बेकाबू हैं। मौसम विभाग ने 27 अगस्त तक मध्यम से तीव्र बारिश के अतिरिक्त बादल फटने, बाढ़ व भुस्खलन का पूर्वानुमान लगाया है। खासकर हिमाचल, उत्तराखंड व जम्मू-कश्मीर में बादल फटने, वज्रपात व भूस्खलन की चेतावनी है। दिल्ली-एनसीआर से लेकर हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड, उप्र के कई इलाकों व बिहार में तेज हवाओं के साथ भारी बरसात की संभावनाएं जताई जा रही हैं। मुसलाधार बारिश के कारण हो रहे जल-भराव, भवनों के ध्वस्त होने व आवाजाही अवरुद्ध होने के चलते जन-जीवन बुरी तरह प्रभावित है। कई इलाकों में गांव के गांव बह गए हैं या डूब चुके हैं। ऐसे में लोग जीवन के संकट से ही नहीं जूझ रहे हैं बल्कि जान-माल की हानि के अतिरिक्त खाने-पीने की चीजों का आभाव व सेहत संबंधी दिक्कतों का कोई छोर नहीं रहा। बरसाती मिट्टी/गाद जमा होने से सड़कें अवरुद्ध हैं। घर/मकान जमींदोज हो चुके हैं, बिजली व पेय-जल संकट पर तो चर्चा भी नहीं होती। रोजगार बुरी तरह ठप पड़े हैं। उपज व पशुधन का भारी नुकसान हुआ है। देश में पश्चिम से लेकर उत्तर तक बाढ़-बरसात की तबाही की जो तस्वीरें उपलब्ध हैं, उन्हें सिर्फ झलक माना जा सकता है। क्योंकि पुलों व राजमार्गों के अवरुद्ध होने से आवा-जाही संभव नहीं रह गई। अंधाधुंध कटाव, निर्माण व आधुनिकीकरण भी इस तबाही का जिम्मेदार है। मुंबई/दिल्ली, बंगलुरु/कोलकाता जैसे महानगरों में बरसात के दरम्यान आने वाली तस्वीरों के आधार पर सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि विभिन्न इलाकों में बाढ़-बारिश ने क्या तबाही मचाई होगी। प्राकृतिक आपदाएं प्रतिवर्ष अपने निश्चित समय पर आती हैं, उनसे निपटने की तैयारी करने में सरकारी तंत्र बुरी तरह चूक जाता है। जिस तरह आपदाओं की चपेट में आने वाले पीड़ितों के लिए मुआवजा राशि का ऐलान होता है, उसे बरसात से पहले ही उचित रूप से उपयोग किया जाए तो स्थिति इतनी भीषण न हो। निःसंदेह कुछ आपदाओं का अनुमान नहीं लगाया जा सकता, मगर नीयत में खोट न हो तो ऐहितियात बरत कर आधे से ज्यादा पीड़ितों को सुरक्षा मुहैया कराई जा सकती है।

चिंतन-मनन

कर्तव्य को बनाएं सर्वोपरि लक्ष्य

अध्यापक ने विद्यार्थियों से पूछा- ह्यरामायण और महाभारत में क्या अंतर है?ह्व विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार उत्तर दिए। अध्यापक को संतोष नहीं हुआ। एक विद्यार्थी ने अनुरोध किया- ह्यआप ही बताइएह्व अध्यापक बोला-रामायण और महाभारत में सबसे बड़ा अंतर है ह्यहक-हकूकह्व का। रामायण में राम ने अपना अधिकार छोड़ा, राज्य छोड़ा और चौदह वर्षों तक वन में जाकर रहे। वे चाहते तो अधिकार के लिए लड़ाई कर सकते थे। दशरथ उन्हें वन में नहीं भेजना चाहते थे। अयोध्या की जनता उनके वन-गमन से व्यथित थी। पर राम ने अपने कर्तव्य को अधिकार से ऊपर रखा। पिता के कहे का पालन उनके जीवन का महान आदर्श था।

महाभारत का संपूर्ण कथानक अधिकारों की लड़ाई का कथानक है। कौरव और पांडव आपस में चचेरे भाई थे। भाई-भाई के रिश्तों में जो गंध होती है, मिठास होती है, अपनापा होता है, उसका दर्शन ही वहां कहां होता है! पांडव सब कुछ जुए में हार गए। सब वादे पूरे कर वे लौटे तो दुर्योधन ने पांच गांव तो क्या, सूई की नोक के बराबर भूमि भी देने से मना कर दिया। ये दो उदाहरण हैं - हमारे सामने। प्रथम उदाहरण अपनेपन से भरे आत्मीय संबंधों का है। वह संबंधों की मधुरता व्यक्ति को कभी आत्मकेंद्रित नहीं होने देती। वह अपने बारे में नहीं सोचता; परिवार, समाज और देश के बारे में सोचता है। उसका अपना कोई स्वार्थ होता ही नहीं। पद-प्रतिष्ठा और सुख-सुविधा के संस्कारों से वह ऊपर उठ जाता है। ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है, जो कर्तव्य को अपने जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य मानता है। वह संस्कृति सफल होती है जो कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों को जन्म देती है।

वह शताब्दी सफल होती है, जो कर्तव्य की धारा को सतत प्रवाही बनाकर जन-जन तक पहुंचाती है। वह परंपरा सफल होती है, जो कर्तव्य का बोध देती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पूजा-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान और सुख-सुविधा की अर्थहीन चिंता छोड़कर व्यक्ति अपने जीवन को कर्तव्य के लिए समर्पित कर दे।

चीन की मोनोपोली को मोदी की खुली चुनौती, रेयर अर्थ मामले में भारत जल्द बनेगा आत्मनिर्भर

नीरज कुमार दुबे

आज की दुनिया में रेयर अर्थ मैग्नेट्स और क्रिटिकल मिनरल्स (जैसे लिथियम, कोबाल्ट, निकल) बिना इलेक्ट्रिक वाहन, सेमीकंडक्टर और बैटरी इंडस्ट्री की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अब तक इन संसाधनों पर चीन का जबर्दस्त वर्चस्व रहा है। मोदी सरकार ने National Critical Mineral Mission की शुरुआत कर भारत में क्रिटिकल मिनरल्स की जरूरत को पूरा करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। इस मिशन के तहत भारत के विभिन्न हिस्सों में खोज अभियान चलाकर घरेलू खनिज क्षमता बढ़ाई जा रही है। लक्ष्य यह है कि भारत को rare earth supply chains के लिए आत्मनिर्भर बनाया जाए और विदेशी दबाव कम हो। यह कदम सीधा चीन की rare earth monopoly को चुनौती देता है, क्योंकि अब भारत खुद अपना सप्लाई लाइन तैयार करेगा।

हम आपको बता दें कि मोदी के नेतृत्व में Make in India केवल नारा नहीं, बल्कि वैश्विक उद्योग रणनीति बन चुकी है। Maruti Suzuki की e-Vitara का शुभारंभ भारत को वैश्विक ईवी एक्सपोर्ट हब बनाने की दिशा में मील का पत्थर है। अब भारत से बनी ईवी 100 देशों में, जापान और यूरोप जैसे बाजारों तक निर्यात होंगी। हम आपको बता दें कि गुजरात के हंसलपुर में हाइब्रिड बैटरी इलेक्ट्रोड और लिथियम-आयन प्लांट का शुभारंभ हुआ है, जिससे बैटरी इकोसिस्टम घरेलू स्तर पर मजबूत होगा। साथ ही, भारत में अगले 5-6 वर्षों में रू.70,000 करोड़ का निवेश आ रहा है, जो सीधे ईवी और बैटरी सेक्टर को टार्गेट करता है। इसके अलावा, सेमीकंडक्टर फैब्स और बैटरी मैन्युफैक्चरिंग से जुड़ी यह पूरी चेन भारत को चीन के विकल्प के रूप में स्थापित कर रही है।

हम आपको बता दें कि अब तक इलेक्ट्रिक वाहनों की सप्लाई चेन में चीन का लगभग 80% नियंत्रण था-खासकर रेयर अर्थ माइनिंग, प्रोसेसिंग और बैटरी निर्माण में। मोदी सरकार का National Critical Mineral Mission इस निर्भरता को तोड़ने का बड़ा कदम है। ईवी और बैटरी प्लांट्स का लोकलाइजेशन, सेमीकंडक्टर उत्पादन और क्रिटिकल मिनरल्स की खोज भारत को स्ट्रेटेजिक स्वतंत्रता देगा। इससे अमेरिका, जापान और यूरोप जैसे देशों को भी भारत एक विश्वसनीय सप्लायर दिखाई देगा।

Maruti Suzuki की e-Vitara का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने साफ कहा- "Make in India, Make for the World?" प्रधानमंत्री ने कहा कि सेमीकंडक्टर सेक्टर में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है और भारत सरकार को यह भी पता है कि ऑटो उद्योग के लिए रेयर अर्थ मैगनीज की कमी है। इस दिशा में उद्योग की क्षमता बढ़ाने के लिए हमने राष्ट्रीय क्रिटिकल मिनरल मिशन की भी शुरूआत की है। इसके तहत देश के अलग-अलग हिस्सों में और अधिक खोज अभियानों को अंजाम दिया जाएगा और महत्वपूर्ण खनिजों की खोज की जाएगी।

हम आपको बता दें कि पिछले 10 वर्षों में भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन 500% बढ़ा है साथ ही मोबाइल फोन में 2700% और रक्षा उत्पादन में 200% की वृद्धि हुई है। देखा जाये तो भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था, युवा डेमोग्राफी और स्किल्ड वर्कफोर्स निवेशकों के लिए Win-Win Situation बना रही है। आने वाले वर्षों में भारत ईवी, बैटरी और सेमीकंडक्टर का ग्लोबल हब बनने की ओर बढ़ रहा है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि मोदी का यह अभियान केवल औद्योगिक नीति नहीं, बल्कि एक भू-राजनीतिक रणनीति भी है। रेयर अर्थ और ईवी सेक्टर में आत्मनिर्भरता हासिल करके भारत न सिर्फ चीन की मोनोपोली को तोड़ेगा, बल्कि आने वाले दशक में नई टेक्नोलॉजी का वैश्विक केंद्र भी बनेगा।

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

क्रिकेटः जबर्दस्त विरासत छोड़ गए पुजारा

मनोज चतुर्वेदी

चेतेश्वर पुजारा के जिस डिफेंस को दुनिया के दिग्गज गेंदबाज भेदने में असफल रहे, उसे भेदने में वक्त कामयाब हो गया और उन्होंने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लेने की घोषणा कर दी। वह लंबे समय से भारतीय टेस्ट टीम में वापसी का इंतजार कर रहे थे, लेकिन पिछले दिनों रोहित शर्मा और विराट कोहली के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद उन्हें भी विश्वास हो गया कि अब वापसी संभव नहीं है और उन्होंने संन्यास लेने की घोषणा कर दी। हालांकि उन्हें इस बात की खुशी रहेगी कि वह टेस्ट क्रिकेट में भारत के लिए सर्वाधिक रन बनाने के मामले में आठवें नंबर के खिलाड़ी के तौर पर रिटायर हुए हैं। उन्होंने 103 टेस्ट मैचों में 43 .60 के औसत से 7195 रन बनाए, जिसमें 19 शतक और 35 अर्धशतक शामिल रहे।

यह सही है कि पुजारा के खेल में विराट जैसा आकर्षण नहीं था और ना ही वह ऋषभ पंत जैसे आक्रामक शॉट खेल सकते थे। पर वह विकेट पर लंगर डालकर खेलने की क्षमता की वजह से भारतीय क्रिकेट के लंबे समय तक बहुत ही भरोसेमंद बल्लेबाज रहे। आंकड़ों के हिसाब से उनके समय के दिग्गज ऑस्ट्रेलियाई पेस गेंदबाज हेज़लवुड की 44.3 प्रतिशत गेंदें उन्हें कोहनी के ऊपर लगीं और पैट कमिंस की 26.5 प्रतिशत गेंदें छाती पर लगीं पर कोई भी गेंदबाज उन्हें डिगा नहीं सका। मैजूदा भारतीय कोच गौतम गंभीर का यह कहना मायने रखता है,.जब तूफान आया तो वह डटे रहे, जब उम्मीदें धूमिल हो रहीं थीं, तब उन्होंने जुझारूपन दिखाया।.वहीं सचिन तेंदुलकर ने कहा,.पुजारा आपको नंबर तीन पर बल्लेबाजी करते देखना हमेशा भरोसा देता था। आपकी मजबूत तकनीक, धैर्य और दबाव में संयम टीम के लिए स्तंभ रहे। पुजारा जबर्दस्त विरासत छोड़कर जा रहे हैं। उनके बाद के दौर में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की भरमार है, तमाम आक्रामक खेल से रोख बदलने की क्षमता रखते हैं। पर उन जैसा कोई दूसरा खिलाड़ी नहीं दिखा है। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में भारत को पहली टेस्ट सीरीज जितने में जिस तरह का प्रदर्शन किया, वैसा प्रदर्शन कम ही देखने को मिलता है। इस 2018-19 की सीरीज में उन्होंने 1258 गेंदों का सामना करके 521 रन बनाए थे, जिसमें तीन शतक शामिल थे। इस सीरीज की खास बात यह थी कि उन्होंने जो गेंदें खाली छोड़ीं, उनमें से तीन चौथाई गेंदों ने शरीर पर प्रहार किया था। इस तरह का प्रदर्शन गावस्कर 1971 वेस्ट इंडीज के खिलाफ और शुभमन गिल 2025 में इंग्लैंड के खिलाफ कर सके हैं। पुजारा 2010 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बेंगलुरो में टेस्ट कॅरियर की शुरूआत करने के साथ ही अपने खेल से प्रभावित करने में सफल रहे, लेकिन इसके बाद भी उन्हें अगला टेस्ट खेलने के लिए अगस्त 2012 तक का इंतजार करना पड़ा। न्यूजीलैंड के खिलाफ हुई इस सीरीज के हैदराबाद में खेले गए टेस्ट में पहला शतक (159) बनाया। इसी साल इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में अपना दोहरा शतक जमाने में सफल हो गए, लेकिन एक समय ऐसा भी आया, जब यह माना जाने लगा कि पुजारा के खेल की चमक कम होने लगी है। इस कारण ही वेस्टइंडीज दौरे पर तीसरे टेस्ट के दौरान उन्हें टीम से ड्रॉप कर दिया गया। हालांकि पुजारा की यह खूबी रही है कि जब भी उनकी काबिलियत पर शक किया गया तो उन्होंने घरेलू क्रिकेट में रनों का अंबार लगाकर चयनकर्ताओं का मन मोह लिया है।

पुजारा को अच्छा क्रिकेटर बनाने में पिता अरविंद की अहम भूमिका रही है। उन्होंने पुजारा के तीन साल की उम्र में प्लास्टिक के बल्ले से शॉट खेलते समय देखा कि उनकी निगाह आखिर तक गेंद पर जमी रहती है। इस पर खुद रणजी खिलाड़ी रहे पिता ने राजकोट स्थित अपनी कोठी में लगे नीम के पेड़ के नीचे उन्हें घंटों खिलाना शुरू कर दिया। वह जब आठ साल के हुए तो मां रीना ने बेटे के क्रिकेट प्रेम को देखते हुए, उनके लिए अपने गद्दे के पैड तैयार किए। उन्होंने 14 साल की उम्र तक पहुंचते बीसीसीआई टूर्नामेंट में तिहरा शतक जमाकर सभी को प्रभावित कर दिया। वह 18 साल की उम्र तक पहुंचते अंडर-19 विश्व कप में सबसे ज्यादा रन बनाकर मैन ऑफ द सीरीज बन गए।

सौराष्ट्र को सफल क्रिकेट राज्य बनाने में पुजारा की भूमिका अहम रही है। उन्होंने इस राज्य के लिए 278 प्रथम श्रेणी मैच खेलकर 51.82 के औसत से 21301 रन बनाए हैं, जिसमें तीन तिहरे शतकों सहित 66 शतक शामिल हैं। वह अभी भारत की इंग्लैंड के साथ हुई पिछली टेस्ट सीरीज के दौरान कमेंट्री करते भी दिखे। साथ ही वह पिता के साथ राजकोट में अकादमी भी चलाते हैं। पर पूछा गया तो उन्होंने इससे इनकार किया। पुजारा के रिफ्लेक्सेस में पिछले दो वर्षों में कमी आई है और इस कारण वह आखिरी कुछ मैचों में उम्मीदों के अनुरूप नहीं खेल सके। कहा जा रहा है कि उन्हें यदि पिछली इंग्लैंड सीरीज में भी चुना जाता तो वह पांचवें टेस्ट के दौरान संन्यास की घोषणा कर देते। वैसे भी टेस्ट टीम में नहीं चुने जाते के बाद इस बार पश्चिम क्षेत्र दलीप ट्रॉफी की टीम में नहीं चुनने पर यह साफ हो गया था कि वह संन्यास ले लेंगे क्योंकि वह आईपीएल में अब खेलते नहीं हैं।

संक्षिप्त समाचार

स्पेसएक्स के स्टारशिप की लॉन्चिंग टली

वाशिंगटन, एजेंसी। एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के विशाल स्टारशिप रॉकेट की लॉन्चिंग टल गई है। लॉन्चिंग से करीब आधा घंटे पहले ही रॉकेट की लॉन्चिंग टाल दी गई। हालांकि आधिकारिक बयान जारी कर कंपनी ने लॉन्चिंग टालने की वजह का खुलासा नहीं किया है, लेकिन दावा किया जा रहा है कि ग्राउंड सिस्टम में अज्ञात तकनीकी दिक्कत के चलते लॉन्चिंग टाली गई है। स्पेसएक्स के इस रॉकेट की लॉन्चिंग इसलिए भी अहम है क्योंकि हाल के समय में कंपनी के रॉकेट में धमाकों की घटनाएं हुई हैं।

अमेरिका में पहली बार मिला इंसानी मांस खाने वाला परजीवी का मामला

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में पहली बार इंसानी मांस खाने वाले परजीवी का मामला सामने आया है। अमेरिका के मेरीलैंड के एक व्यक्ति के शरीर में इंसानी मांस खाने वाले परजीवी की मौजूदगी की पुष्टि हुई है। यह परजीवी गर्म खून वाले जीवों के शरीर में पाए जाते हैं और इंसानी मांस को खाकर जिंदा रहते हैं। इस परजीवी के संक्रमण में धीरे-धीरे संक्रमित जगह से मांस खत्म होना शुरू हो जाता है और यह संक्रमण जानलेवा हो सकता है। जिस व्यक्ति में परजीवी की पुष्टि हुई है, उसने कुछ ग्वाटेमाला का दौरा किया था। यह परजीवी दक्षिणी मेक्सिको में बीते साल आपदा ला चुका है। अब अमेरिका में इसके मिलने से चिकित्सा जगत चिंतित है।

उत्तर कोरिया ने दो नई मिसाइलों का किया परीक्षण

प्योंगयांग, एजेंसी। दक्षिण कोरिया व अमेरिका के वार्षिक सैन्य अभ्यास के बीच उत्तर कोरिया ने हवाई हमलों को रोकने में सक्षम दो नई मिसाइलों का परीक्षण किया। उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन इस परीक्षण के दौरान मौजूद रहे। उत्तर कोरिया की सरकारी समाचार एजेंसी ने बताया कि शनिवार को हुए परीक्षण ने दर्शाया कि ये मिसाइलें ड्रोन व क्रूज मिसाइल के हमलों से निपटने में सक्षम हैं। यह परीक्षण ऐसे समय में हुआ है, जब दक्षिण कोरिया के नए राष्ट्रपति ली जे म्यूंग शिखर सम्मेलन के लिए टोक्यो की यात्रा पर हैं।

मॉस्को शॉपिंग सेंटर में हुए धमाके में एक की मौत, तीन घायल

वाशिंगटन, एजेंसी। रूस की महानगरीय राजधानी मॉस्को की एक मशहूर वाणिज्यिक इमारत में रविवार को हुए धमाके में कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई और तीन लोग घायल हो गए। रूसी आपातकालीन सेवाओं के मुताबिक,यह धमाका मध्य मॉस्को स्थित लुब्यंका स्क्वायर के सेंट्रल चिल्ड्रन स्टोर शॉपिंग मॉल की तीसरी मंजिल पर हुआ। सरकारी समाचार एजेंसी आरआईए नोवोस्ती ने बताया कि धमाका एक गैस सिलिंडर में विस्फोट से हुआ था। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, दो घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

ब्रिटेन में अपराधियों को यात्रा व पब में जाने की नहीं होगी इजाजत

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन सरकार की ओर से रविवार को घोषित नए दंड नियमों के तहत अपराधियों के पब जाने, संगीत समारोहों में शामिल होने व खेल स्पर्धाओं को देखने पर प्रतिबंध रहेगा। नए उपायों के तहत देश के न्यायाधीश अपराधियों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा सकेंगे तथा उन पर ड्राइविंग प्रतिबंध, यात्रा प्रतिबंध व निशिद्ध क्षेत्रों तक सीमित रहने जैसे प्रतिबंध भी लागू कर पाएंगे। ब्रिटेन के कानून मंत्रालय ने कहा कि इन बदलावों से सामुदायिक दंड को कठोर बनाया जाएगा, जिससे दोबारा अपराध करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने में मदद मिलेगी।

वेनेजुएला में 13 राजनीतिक बंदियों की रिहाई, विपक्ष ने बताया एक सकारात्मक कदम

कैरेकस, एजेंसी। वेनेजुएला में विपक्षी नेताओं और सामाजिक संगठनों ने रविवार को बताया कि राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की सरकार द्वारा पिछले साल के विवादित चुनावों के बाद किए गए दमन के तहत गिरफ्तार किए गए 13 लोगों को रिहा किया गया है। हालांकि सरकार की ओर से इन रिहाइयों की तुरंत पुष्टि नहीं की गई, लेकिन विपक्षी नेता हेनरिक कैप्रिलेस ने सोशल मीडिया पर इस कदम का स्वागत किया और इसे जेल में बंद लोगों के लिए एक आगे बढ़ने वाला कदम बताया। उन्होंने बताया कि 8 लोगों को पूरी तरह रिहा किया गया, जबकि 5 को घर में नजरबंद किया गया है।कैप्रिलेस ने एक वीडियो साझा करते हुए लिखा, आज कई परिवार अपने अपनों से फिर मिल पाए हैं। हम जानते हैं कि अभी भी बहुत से लोग बंद हैं, और हम उन्हें नहीं भूलेंगे। हम उनके लिए लड़ाई जारी रखेंगे। यह रिहाई उस चुनाव के एक साल बाद हुई है जिसे लेकर भारी विवाद हुआ था। जुलाई में हुए राष्ट्रपति चुनाव में मादुरो की जीत घोषित की गई, लेकिन चुनाव आयोग ने वोटों की गिनती से जुड़े जरूरी दस्तावेज (एक्टास) साझा करने से इनकार कर दिया।

हूतियों ने दागी नई किस्म की मिसाइल तो इजरायल ने मचा दी तबाही, यमन में 6 की मौत, 86 घायल

काहिरा, एजेंसी। ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों द्वारा इजरायल पर एक नए किस्म की मिसाइल दागे जाने के बाद इजराइल ने रविवार को यमन की राजधानी सना पर जोरदार हमला बोला। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, यमन की राजधानी सना पर नियंत्रण रखने वाले हूती विद्रोहियों के अनुसार, इन हमलों में कम से कम छह लोग मारे गए हैं और 86 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। इजरायली सेना ने आगे कहा कि उसने एक सैन्य स्थल पर हमला किया, जहाँ राष्ट्रपति भवन स्थित है, साथ ही दो बिजली संयंत्रों और एक ईंधन भंडारण स्थल पर भी हमले किए हैं।

इजराइली रक्षा बलों ने कहा है कि यह हमला इजरायल और उसके नागरिकों पर हूती आतंकवादी शासन द्वारा बार-बार किए जा रहे हमलों के जवाब में किया गया है। इजरायली वायुसेना के एक अधिकारी के अनुसार, इन हमलों में 10 से अधिक लड़ाकू विमानों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि सबसे दूर का लक्ष्य इजरायल से लगभग 2,000 किलोमीटर (1,240 मील) की दूरी पर था।

बड़े पैमाने पर तबाही

हूतियों द्वारा संचालित अल-मसीरा टीवी ने रविवार को देश के स्वास्थ्य मंत्रालय के हवाले से बताया है कि

इजरायली हमलों में बड़े पैमाने पर तबाही हुई है और जान-माल का नुकसान हुआ है। रॉयटर्स की खबर के अनुसार, ईरान समर्थित विद्रोहियों द्वारा इजराइल पर क्लस्टर बम दागे जाने के कुछ ही दिन बाद इजराइल का यह हमला हुआ है।

हूती मीडिया कार्यालय ने बताया कि सना के बिजलीघर और गैस स्टेशन समेत कई इलाकों को निशाना बनाया गया। निवासियों ने बताया कि राष्ट्रपति भवन के पास समेत कई इलाकों में धमाकों की तेज आवाज़ें सुनी गईं। विद्रोहियों के कब्जे वाले सना पर एक सप्ताह पहले किए गए हमले के वक्त इजरायल ने कहा था कि हमलों में ऊर्जा संयंत्रों को निशाना बनाया गया, जिसके बारे में माना जाता है कि इसका इस्तेमाल विद्रोहियों द्वारा किया जाता था।

22 महीनों से हूती दाग रहे मिसाइल

ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों ने 22 महीनों से भी ज़्यादा समय से इजरायल पर मिसाइल और ड्रोन दागे हैं तथा लाल सागर में जहाजों को निशाना बनाया है। हूती विद्रोहियों का कहना है कि वे गाज़ा पट्टी में युद्ध के बीच फलस्तीनियों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए ये हमले कर रहे हैं। यह हमला हूती विद्रोहियों द्वारा शुक्रवार को इजरायल की ओर नई मिसाइलों के दागे जाने के दावे के बाद हुआ है, जिसमें देश के सबसे बड़े हवाई अड्डे को निशाना बनाया गया। इस हमले से इजरायल में किसी तरह के नुकसान या किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

क्लस्टर बम वाली मिसाइलें नए खतरे का संकेत

इजराइली सेना ने कहा कि उसने मिसाइल को हवा में ही नष्ट कर दिया। इजराइली वायुसेना के एक अधिकारी ने कहा कि शुक्रवार रात यमन से इजराइल की ओर दागी गई क्लस्टर बम वाली मिसाइल एक नए ख़तरे का संकेत है। अधिकारी ने बताया कि हूती विद्रोहियों ने 2023 में इजराइल की ओर रॉकेट दागना शुरू करने के बाद से पहली बार इजराइल पर क्लस्टर बम दागा है। अधिकारी ने बताया कि क्लस्टर बमों के इस्तेमाल से इजराइल के लिए उन्हें रोकना मुश्किल हो जाता है।

लंदन में भारतीय रेस्तरां में लगाई आग, खाना खा रहे पांच लोग झुलसे; संदिग्ध पिता-पुत्र गिरफ्तार

लंदन, एजेंसी। लंदन में स्थित एक भारतीय रेस्तरां में आगजनी की घटना सामने आई है। इस घटना में रेस्तरां में खाना खा रहे पांच लोग घायल हुए हैं, जिनमें से दो की हालत गंभीर है। घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है, जिसमें दिख रहा है कि संदिग्धों ने पहले ग्राहकों की मौजूदगी में रेस्तरां के भीतर ज्वलनशील पदार्थ छिड़का और जब तक कोई कुछ समझ पाता, संदिग्ध आरोपियों ने आग लगा दी। जिससे रेस्तरां पलक झपकते ही आग की लपटों में घिर गया।

क्या है मामला

मेट्रोपोलिटन पुलिस ने बताया कि लंदन के इलफोर्ड इलाके में इंडियन एरोमा नामक एक भारतीय रेस्तरां हैं। शुक्रवार की रात इसमें आगजनी की गई। इस घटना में रेस्तरां में मौजूद तीन महिलाएं और दो पुरुष आग की चपेट में आकर जख्मी हो गए। घायलों का अस्पताल में इलाज चल रहा है, जिनमें से दो की हालत गंभीर बताई जा रही है।

संदिग्ध पिता-पुत्र गिरफ्तार

पुलिस ने इस मामले में संदिग्ध पिता-पुत्र को गिरफ्तार किया है। जिनमें से पिता की उम्र करीब 54 साल और बेटे की उम्र 15 साल है। पुलिस ने इस मामले में लोगों से भी जानकारी देने की अपील की है। घटना के बाद इलाके में पुलिस बल तैनात है। आगजनी में रेस्तरां को भारी नुकसान हुआ है। सीसीटीवी फुटेज में दिख रहा है कि नकाबपोश हमलावरों ने पहले रेस्तरां में ज्वलनशील पदार्थ गिराया। इस दौरान रेस्तरां में ग्राहक बैठे दिख रहे हैं। जैसे ही ग्राहक कुछ समझ पाते या वहां से निकल पाते आरोपियों ने आग लगा दी और पलक झपकते ही आग ने पूरे रेस्तरां को चपेट में ले लिया। आग लगने के बाद लोग बाहर की तरफ भागे।

फ्रांस में अमेरिकी राजदूत तलब, यहूदी विरोधी हिंसा रोकने के लिए जरूरी कदम नहीं उठाने का लगाया था आरोप

कुशनेर ने फ्रांसीसी राष्ट्रपति से अपील की कि वह नफरत फैलाने वाले अपराधों पर कानून को सख्ती से लागू करें और इस्राइल की आलोचना में तोड़ी नरमी दिखाएं

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस ने अमेरिकी राजदूत चार्ल्स कुशनेर को तलब किया है। यह कदम तब उठाया गया जब कुशनेर ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने आरोप लगाया कि फ्रांस यहूदी-विरोधी (एंटीसेमिटिक) हिंसा को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रहा है। रविवार को फ्रांसीसी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने यह जानकारी दी।

चार्ल्स कुशनर यहूदी हैं और उनके बेटे की शादी अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बेटी से हुई है। उन्होंने यह खुला पत्र अमेरिकी अखबार वॉल स्ट्रीट जर्नल में प्रकाशित किया। यह पत्र ऐसे समय में सामने आया है, जब फ्रांस, अमेरिका और इस्राइल के बीच कुछ मुद्दों पर मतभेद गहराते जा रहे हैं। पत्र में कुशनेर ने फ्रांसीसी राष्ट्रपति से अपील की कि वह नफरत फैलाने वाले अपराधों पर कानून को सख्ती से लागू करें और इस्राइल की आलोचना में तोड़ी नरमी दिखाएं। उन्होंने यह भी कहा कि फ्रांस की तरफ से फलस्तीन को मान्यता

देने जैसी बातों ने देश में यहूदी-विरोधी घटनाओं को बढ़ावा दिया है।

फ्रांस के विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा, फ्रांस ने अमेरिकी राजदूत चार्ल्स कुशनेर के उन आरोपों को देखा है, जो उन्होंने राष्ट्रपति को भेजे पत्र में यहूदी-विरोधी घटनाओं में बढ़ोतरी और फ्रांसीसी प्रशासन की ओर से कथित रूप से पर्याप्त कार्रवाई न करने को लेकर लगाए हैं।

मंत्रालय ने आगे कहा, राजदूत के ये आरोप अस्वीकार्य हैं। कुशनेर को सोमवार को हाजिर होना होगा। कुशनेर का यह पत्र तब आया जब कुछ दिन पहले इस्राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भी मैक्रों को एक पत्र लिखा था। यरूशलम पोस्ट के मुताबिक, उस पत्र में नेतन्याहू ने मैक्रों पर फलस्तीन को मान्यता देने की बात कहकर यहूदी-विरोधी माहौल को बढ़ावा देने का आरोप लगाया था। राष्ट्रपति मैक्रों गाजा में युद्ध और उसमें मारे जा रहे फलस्तीनी नागरिकों को लेकर इस्राइल की आलोचना करने वालों में सबसे आगे रहे हैं, जबकि डोनाल्ड ट्रंप लगातार इस्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू का समर्थन करते आए हैं।

कुशनेर ने अपने पत्र में लिखा, इस्राइल पर सार्वजनिक रूप से की जा रही सख्त टिप्पणियां और फलस्तीन को मान्यता देने जैसे इशारे चरमपंथियों को हौसला देते हैं, हिंसा को बढ़ाते हैं और फ्रांस में यहूदियों के जीवन को खतरे में डालते हैं। आज के समय में एंटी-जायोनिज्म, सीधे तौर पर एंटीसेमिटिज्म है।

एंटीसेमिटिज्म का मतलब यहूदियों के धर्म, जाति या संस्कृति के खिलाफ नफरत से है, जबकि एंटी-जायोनिज्म इस्राइल के राष्ट्र या उसके विचार के विरोध से जुड़ा होता है। चार्ल्स कुशनेर के बेटे जारेड कुशनेर की शादी डोनाल्ड ट्रंप की बेटी इवांका ट्रंप से हुई है, जिन्होंने शादी से पहले यहूदी धर्म अपना लिया था। उनके तीन बच्चे हैं। फ्रांसीसी राष्ट्रपति मैक्रों पहले भी सार्वजनिक तौर पर कह चुके हैं कि एंटीसेमिटिज्म फ्रांस के मूल्यों के खिलाफ है। उन्होंने गाजा संघर्ष के दौरान यहूदी धार्मिक स्थलों और संस्थानों की सुरक्षा के लिए सुरक्षा व्यवस्था को भी मजबूत किया है।

वेस्ट बैंक में इजरायली सेना का बुलडोजर ऑपरेशन, इजरायल क्यों उखाड़ रहा फिलिस्तीनी पहचान?

वेस्ट बैंक, एजेंसी। युद्ध की कहानियां तो आपने कई सुनी होंगी, जहां सेनाएं गोला-बारूद से हमला करती हैं। लेकिन इजरायली सेना वेस्ट बैंक में बुलडोजर लेकर जैतून के पेड़ उखाड़ रही है। न्यूज एजेंसी एएफपी के मुताबिक, रविवार को वेस्ट बैंक के अल-मुगय्यिर गांव में इजरायली सेना की मौजूदगी में बुलडोजरों ने सैकड़ों जैतून के पेड़ नष्ट कर दिए। संयुक्त राष्ट्र ने भी पुष्टि की है कि क्षेत्र में अकाल जैसी स्थिति है, जहां लोग और बच्चे भूख से जूझ रहे हैं।

क्या है पूरा मामला? : उखाड़े गए ज्यादातर पेड़ जैतून के थे, जो वेस्ट बैंक की अर्थव्यवस्था और संस्कृति का अहम हिस्सा हैं। ये पेड़ लंबे समय से फिलिस्तीनी किसानों और इजरायली बस्तियों के बीच तनाव का कारण रहे हैं। रामल्लाह के पास इस गांव के किसान अब्देलतीफ मोहम्मद अबू आलिया ने बताया कि 70 साल पुराने, एक हेक्टेयर में फैले जैतून के पेड़ों को झूठे बहानों के तहत उखाड़कर जमीन समतल कर दी

गई। स्थानीय लोग उखड़े पेड़ों को फिर से लगाने की कोशिश कर रहे हैं। एएफपी के फोटोग्राफरों ने गिरे हुए जैतून के पेड़ और पहाड़ियों पर चलते बुलडोजर देखे, जिनमें से एक पर इजरायली झंडा था और पास में सेना की गाड़ियां खड़ी थीं।

जैतून का फिलिस्तीनी संस्कृति से रिश्ता : जैतून के पेड़ फिलिस्तीन के इतिहास, संस्कृति और अर्थव्यवस्था से गहराई से जुड़े हैं। ये लचीलेपन, पैतृक भूमि से लगाव और कब्जे के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक हैं। जैतून की खेती हजारों परिवारों की आजीविका का आधार है। सालाना फसल का समय उत्सव के साथ-साथ इजरायली प्रतिबंधों और हमलों के खिलाफ संघर्ष का भी दौर होता है। स्थानीय कृषि संघ के नेता घासन अबू आलिया का कहना है कि इजरायल का उद्देश्य क्षेत्र पर कब्जा और फिलिस्तीनियों को पलायन के लिए मजबूर करना है। उन्होंने कहा कि यह शुरुआत है, यह पूरे वेस्ट बैंक में फैलेगा। बुलडोजर का काम गुरुवार से शुरू हुआ। एक फिलिस्तीनी एनजीओ के अनुसार, तीन दिनों में 14 लोग गिरफ्तार किए गए। इजरायली सेना ने कहा कि वह मामले की जांच कर रही है। शुक्रवार को सेना ने बताया कि अल-मुगय्यिर से एक व्यक्ति को आतंकवादी हमले के आरोप में गिरफ्तार किया गया। 16 अगस्त को फिलिस्तीनी प्राधिकरण ने कहा कि उसी गांव में एक 18 वर्षीय युवक को इजरायली सेना ने गोली मार दी। सेना ने इसे पत्थरबाजी का जवाब बताया, लेकिन युवक की मौत से सीधा संबंध नहीं जोड़ा।

हिंसा का बढ़ता दौर : 7 अक्टूबर 2023 को हमास के हमले के बाद गाजा में युद्ध शुरू होने से वेस्ट बैंक में हिंसा बढ़ी है। एएफपी के आंकड़ों के मुताबिक, तब से 971 फिलिस्तीनी (आतंकवादी और नागरिक) इजरायली सैनिकों या बस्ती वासियों द्वारा मारे गए, जबकि 36 इजरायली मारे गए। 1967 से इजरायल के कब्जे वाले वेस्ट बैंक में 30 लाख फिलिस्तीनी और 5 लाख इजरायली रहते हैं, जिनकी बस्तियां अंतरराष्ट्रीय कानून में अवैध मानी जाती हैं।

अदालत के एक आदेश के बाद ब्रिटेन में भी अप्रवासियों के मुद्दे पर हंगामा, समर्थक और विरोधी भिड़े

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन में अदालत के एक आदेश से अप्रवासियों के मुद्दे पर हंगामा हो गया है। दरअसल अदालत ने लंदन उपनगर के एक होटल से शरणार्थियों को निकालने का आदेश दिया है। इस फैसले का विरोध शुरू हो गया तो कई लोग इसके समर्थन में आ गए। इससे हंगामा हो गया है और पुलिस को दोनों पक्षों को नियंत्रित करने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

अमेरिका की तरह ब्रिटेन में भी अब अप्रवासियों का मुद्दा राजनीतिक टकराव की वजह बन रहा है। युद्धग्रस्त और गरीब देशों से भारी संख्या में ब्रिटेन में शरणार्थी पहुंच रहे हैं। इंग्लिश चैनल के जरिए अवैध नौकाओं में सवार होकर शरणार्थी ब्रिटेन पहुंच रहे हैं। साथ ही इन शरणार्थियों को सरकारी खर्च पर ठहराने के मुद्दे पर भी तनाव बढ़ रहा है। ब्रिटेन में सरकार शरणार्थियों की अपील पर फैसला होने तक उन्हें अपने खर्च पर ब्रिटेन में ठहराती है, इसके लिए अक्सर होटल्स में शरणार्थियों को ठहराया जाता है। शरण मांगने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब ब्रिटेन की सरकार पर दबाव पड़ रहा है, साथ ही शरणार्थियों का ब्रिटेन में विरोध भी शुरू हो गया है।

हालात से निपटने के लिए ब्रिटेन की सरकार ने शरणार्थियों की अपील पर सुनवाई तेज करने का फैसला किया है, ताकि सरकारी खर्च पर ब्रिटेन में रह रहे लोगों को वापस भेजा जा सके। इसके लिए बैकलॉग को भी खत्म किया जा रहा है। ताजा विवाद उस वक्त भड़का, जब एक होटल में रह रहे शरणार्थी ने 14 साल की बच्ची को जबरन किस करने की कोशिश की। आरोपी पर यौन शोषण का आरोप लगा है।

वॉशिंगटन डीसी के बाद शिकागो हथियारों से लैस नेशनल गार्ड, डोनाल्ड ट्रंप का प्लान क्या है?

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन डीसी में नेशनल गार्ड की तैनाती के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अब इलिनोइस के शिकागो में सैन्य तैनाती की योजना बना रहे हैं। वॉशिंगटन पोस्ट के अनुसार, पेंटागन पिछले कुछ हफ्तों से शिकागो में सैन्य तैनाती की रणनीति पर काम कर रहा है। सितंबर तक शिकागो में एक हजार से अधिक नेशनल गार्ड जवान तैनात हो सकते हैं। ट्रंप ने 12 अगस्त को वॉशिंगटन में 800 नेशनल गार्ड की तैनाती का आदेश दिया था, ताकि राजधानी में बिगड़ी कानून-व्यवस्था को सुधारा जा सके। यह फैसला अपराध, अवैध आप्रवासन और बेघरों पर कार्रवाई से जुड़ा है।

हथियारों से लैस नेशनल गार्ड : वॉशिंगटन डीसी में ट्रंप के आदेश पर गश्त कर रही कुछ नेशनल गार्ड इकाइयों ने हथियार ले जाना शुरू कर दिया है। रक्षा विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि कुछ मिशनों में इकाइयां हैंडगन और राइफल्स से लैस होंगी। प्रवक्ता ने कहा कि हथियारबंद इकाइयों को प्रशिक्षित किया गया है और वे सख्त नियमों का पालन कर रही हैं। रविवार को एसोसिएटेड प्रेस के एक फोटोग्राफर ने यूनियन स्टेशन के बाहर साउथ कैरोलिना नेशनल गार्ड के जवानों को पिस्तौल के साथ देखा।

संयुक्त कार्य बल ने कहा कि रविवार से इकाइयों ने अपने सेवा हथियार ले जाने शुरू किए हैं। सैन्य नियमों के अनुसार, बल का उपयोग केवल अंतिम उपाय के रूप में और केवल मृत्यु या गंभीर शारीरिक क्षति के खतरे में किया जाएगा। यह बल वॉशिंगटन के निवासियों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। रक्षा अधिकारी ने बताया कि केवल विशिष्ट अभियानों में तैनात सैनिक हथियार ले जाएंगे, जैसे कि कानून प्रवर्तन की मौजूदगी स्थापित करने के लिए गश्त करने वाले सैनिक। परिवहन या प्रशासनिक कार्यों में लगे सैनिक संभवतः निहत्थे रहेंगे।

अन्य शहरों में तैनाती की धमकी : रविवार को ट्रंप ने डेमोक्रेटिक नेतृत्व वाले शहरों में सैन्य तैनाती का विस्तार करने की धमकी दी, जिसमें शिकागो और न्यूयॉर्क शामिल हैं। वॉशिंगटन में हजारों नेशनल गार्ड और संघीय कानून प्रवर्तन अधिकारी सड़कों पर गश्त कर रहे हैं, जिसके चलते स्थानीय लोगों ने छिटपुट विरोध प्रदर्शन किए हैं।

बाल्टीमोर विवाद : ट्रंप ने मैरीलैंड के गवर्नर वेस मूर के साथ विवाद में बाल्टीमोर को धमकी दी। मूर ने ट्रंप की अपराध और बेघरों से निपटने के लिए संघीय शक्ति के उपयोग की आलोचना की थी और उन्हें मैरीलैंड आकर जन सुरक्षा पर चर्चा करने का न्योता दिया था। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर

लिखा कि वेस मूर का क्राइम रिकॉर्ड बहुत खराब है। अगर उन्हें मदद चाहिए, जैसे लॉस एंजिल्स में गैविन न्यूसम को मिली, तो मैं सैनिक भेजूंगा और अपराध को जल्दी साफ कर दूंगा।

मूर ने कहा कि उन्होंने ट्रंप को निमंत्रण इसलिए दिया क्योंकि वे बाल्टीमोर में अपराध दर में सुधार के बारे में अज्ञानता में रहना पसंद करते हैं। बाल्टीमोर में हिंसक अपराध दर में कमी आई है। 2023 में 200 हत्याएं दर्ज हुईं, जो पिछले साल से 24त्न और 2021 से 42त्न कम हैं। 2023-24 में हिंसक अपराध 8त्न और संपत्ति अपराध 20त्न कम हुए। मूर ने सीबीएस के फेस द नेशन पर कहा कि राष्ट्रपति मुझ पर बात करने में समय बिता रहे हैं, जबकि मैं उन लोगों की सेवा पर ध्यान दे रहा हूं जिनकी मैं सेवा करता हूं।

वॉशिंगटन में विरोध : वॉशिंगटन में जहां ट्रंप नेशनल गार्ड और संघीय अधिकारियों को तैनात कर रहे हैं, सप्ताहांत में शहर भर में विरोध प्रदर्शन हुए। कुछ इलाकों में सन्नाटा रहा, जबकि निवासी नेशनल गार्ड के छोटे समूहों के बीच से गुजरते दिखे। सोशल मीडिया पर गिरफ्तारियों और हिरासत के वीडियो वायरल हुए।

शिकागो और न्यूयॉर्क पर नजर : ट्रंप ने कहा कि शिकागो और न्यूयॉर्क उनके अगले लक्ष्य हैं। वॉशिंगटन पोस्ट के अनुसार, पेंटागन ने शिकागो में ऑपरेशन की तैयारी में हफ्तों बिताए हैं, जिसमें नेशनल गार्ड और संभवतः सक्रिय सैनिक शामिल होंगे। वाइट हाउस ने ट्रम्प की टिप्पणियों का हवाला देते हुए कहा कि वे स्थानीय अपराध को निशाना बनाने के लिए सैन्य बलों का उपयोग बढ़ाना चाहते हैं। ट्रम्प ने कहा कि मुझे लगता है कि शिकागो हमारा अगला कदम होगा, और फिर हम न्यूयॉर्क में मदद करेंगे।

नस्लवाद और प्रोफाइलिंग के आरोप : ट्रंप ने डेमोक्रेटिक नेतृत्व वाले शहरों को खतरनाक और गंदा बताया, जहां अश्वेत मेयर और बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक आबादी है। बाल्टीमोर के मेयर ब्रैंडन स्कॉट और गवर्नर मूर अश्वेत हैं। डीसी और न्यूयॉर्क में भी अश्वेत मेयर हैं। 24 अगस्त 2025 को हावर्ड विश्वविद्यालय में रेव. अल शार्पटन ने कहा कि यह क्राइम के बारे में नहीं, बल्कि हमारी प्रोफाइलिंग के बारे में है। यह कट्टरता और नस्लवाद से भरा है। एक भी श्वेत मेयर को नामित नहीं किया गया। यह नागरिक अधिकारों और डीसी के राज्य दर्जे का मुद्दा है।

इलिनोइस के गवर्नर प्रित्जकर ने कहा कि शिकागो में नेशनल गार्ड की तैनाती के लिए कोई आपात स्थिति नहीं है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि ट्रंप संकट पैदा करने, सैनिकों का राजनीतिकरण करने और परिवारों के दर्द से ध्यान हटाने की कोशिश कर रहे हैं। हम कानून का पालन करेंगे और इलिनोइसवासियों की रक्षा करेंगे।

शिकागो के मेयर जॉनसन ने कहा कि शहर को सैन्य कब्जे की जरूरत नहीं है और वे इसे रोकने के लिए मुकदमा करेंगे। उन्होंने एमएसएनबीसी पर कहा कि हम इस तानाशाह के सामने अपनी मानवता का बलिदान नहीं करेंगे। शिकागो का अत्याचार और मेहनतकश लोगों के हितों को कमजोर करने वालों के खिलाफ खड़े होने का लंबा इतिहास है।

भूलकर भी निमोनिया में न करें इन चीजों का सेवन, खतरे में पड़ जाएगी जान

क्या होता है निमोनिया

निमोनिया सांस से जुड़ी एक गंभीर बीमारी है, जिसमें फेफड़ों (लंग्स) में इन्फेक्शन हो जाता है। निमोनिया होने पर फेफड़ों में सूजन आ जाती है और कई बार पानी भी भर जाता है।

क्यों होता है निमोनिया

निमोनिया ज्यादातर बैक्टीरिया, वायरस या फंगल इन्फेक्शन की वजह से होता है। यह ज्यादातर मौसम बदलने, सर्दी लगने, फेफड़ों पर चोट लगने या फिर चिकनपॉक्स जैसी बीमारियों के बाद हो सकता है। कई बार निमोनिया प्रदूषण में अधिक रहने से भी हो सकता है।

निमोनिया होने पर इन चीजों से करें परहेज

- जिन चीजों से आपको एलर्जी है उन चीजों का सेवन करने से बचें।
- निमोनिया से पीड़ित व्यक्ति को अधिक मीठे का सेवन करने से बचना चाहिए।
- डाइट में खासतौर पर प्रोसेस्ड फूड और शीतल पेय शामिल करने से बचें।
- दूध और डेरी उत्पाद का सेवन न करें क्योंकि ये सभी चीजें शरीर में बलगम बढ़ाने का काम करती हैं।
- ऐसे आहार जिसमें आर्टिफिशियल कलर, स्वाद या फिर कैफिन मौजूद हो डाइट में शामिल नहीं करने चाहिए।

निमोनिया में सब्जियां फल खाएं

निमोनिया के दौरान आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है और इसे मजबूत बनाने के लिए आपको भरपूर मात्रा में पोषक तत्व और एंटीऑक्सिडेंट की आवश्यकता होती है। इसलिए इस बीमारी में आपको अधिक से अधिक सब्जियां खानी चाहिए। सब्जियों में आप हरी पत्तेदार सब्जियां जैसे पत्ता गोभी और अजमोद आदि खाएं। इसके साथ ही साथ आप चुकंदर, खीरा और गाजर भी खा सकते हैं। इन सभी सब्जियों में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, विटामिन सी, फोलिक एसिड और पौटैशियम जैसे पोषक तत्व मौजूद होते हैं। यह पोषक तत्व बीमारी को ठीक करने में मदद करते हैं और संक्रमण से लड़ने के लिए आपके शरीर को मजबूत भी बनाते हैं।

ताजा फलों से आपको पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। जब आपके शरीर को भरपूर मात्रा में पोषक तत्व मिलता है, तब आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होने लगती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होने से आप निमोनिया से जल्द ठीक हो जाते हैं। इसलिए आलूबुखारा, नाशपाती, स्ट्राबेरी, जामुन जैसे मीठे फलों को खाएं, लेकिन ध्यान रहे इन्हें सीमित मात्रा में खाएं।

एचआईवी पॉजिटिव महिलाओं में घट जाती है मेनोपॉज की उम्र

एचआईवी से संक्रमित महिलाओं को औसतन 48 वर्ष की उम्र में मेनोपॉज होने की संभीवना अधिक होती है, जब कि सामान्य औरतों को ये करीब 50-52 की उम्र या उसके बाद होती है। कनाडा में एक अध्ययन के दौरान, नॉर्थ अमेरिकन मेनोपॉज सोसाइटी (NAMS) के शोधकर्ताओं ने इस बात का पता लगाया है। शोधकर्ताओं की मानें तो एक आम महिला में मेनॉपोज की आयु 50 से 52 वर्ष के बीच होती है, जबकि एचआईवी से संक्रमित महिलाओं को 48 वर्ष की उम्र तक पीरिएड्स आना बंद हो जाता है। हालांकि चिकित्सा क्षेत्र में जिस तरीके से उन्नति की है और अब एचआईवी पीड़ित महिलाओं की जीवन प्रत्याशा बढ़ी है, वहीं अब इस शोध से इन महिलाओं को मेनोपॉज और इसके संक्रमण से अवगत कराया है। बता दें कि 48 की उम्र में मेनोपॉज का बंद हो जाना, सामान्य आबादी के मेनोपॉज फेज की उम्र से तीन साल कम है।

बढ़ेगी स्वास्थ्य से जुड़ी अन्य परेशानियां

वहीं इस शोध से एक बात और पता चलती है कि जो एचआईवी पॉजिटिव मरीज नवीनतम चिकित्सा प्रोटोकॉल का पालन करते हैं, वे लगभग 70 या इससे अधिक आयु तक जीवित रह सकते हैं। इसका मतलब है कि इन रोगियों को अब एचआईवी एक जानलेवा बीमारी नहीं है और सही वक्त से इलाज करवाने पर ये मरीज एक आम जीवन जी सकते हैं। साथ ही अब इस रिपोर्ट के अनुसार एचआईवी से संक्रमित महिलाओं के लिए मेनोपॉज की उम्र का घट जाना उनके यौन और प्रजनन स्वास्थ्य को प्रभावित करेगी। अब ऐसे में पीड़ित महिलाओं के पास मां बनने की उम्र में कटौती हो गई है।पिछले अध्ययनों से पता चला है कि एचआईवी पीड़ित महिलाओं में प्रारंभिक आयु 40 और 45 के बीच की है और समय से पहले मेनोपॉज को होना बाकी स्वास्थ्य परेशानियों को भी जन्म दे सकती है। हालांकि, कनाडा का यह अध्ययन एचआईवी रोगियों के लिए की औसत आयु, प्रारंभिक मेनोपॉज और अन्य सहसंबंधों के निर्धारण जैसे प्रजनन और गर्भावस्था से जुड़ा पहला अध्ययन है। अध्ययन के शोधकर्ताओं ने पुष्टि की कि एचआईवी के साथ रहने वाली महिलाओं को कम उम्र में पीरिएड्स बंद हो जाते हैं, विशेष रूप से 48 साल की उम्र में।

जागरूकता है जरूरी

इसके अलावा, प्रारंभिक शिक्षा और हेपेटाइटिस-सी का संक्रमण भी प्रारंभिक मेनोपॉज के जोखिम को प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा इन महिलाओं की वैवाहिक स्थिति और जन्म क्षेत्र सहित अन्य संभावित संशोधन भी इस कम उम्र में मेनोपॉज के कारणों में शामिल है। रिपोर्ट की मानें तो पीरिएड्स के जल्दी बंद हो जाने के कारण एचआईवी से संक्रमित महिलाओं की मनोदशा में परिवर्तन, यौन कार्य, जीवन की गुणवत्ता में कमी और हृदय रोग का खतरा और बढ़ेगा। ऑस्टियोपोरोसिस जैसे अन्य हड्डियों से जुड़े विकार इनमें तेजी से बढ़ेगे। ऐसे में अब इस बात की जरूरत है कि इन महिलाओं में इस लेकर जागरूकता फैलाई जाए। साथ ही उन्हें मानसिक रूप से इसके लिए तैयार किया जाए। अब इन महिलाओं को अपनी प्रेग्नेंसी को और बेहर तरीके और सावधानी के साथ प्लान करना होगा ताकि उनके और उनके बच्चों के जान का जोखिम कम हो सके। शोधकर्ताओं का कहना है कि अब हेल्थकेयर चिकित्सकों को भी एचआईवी से पीड़ित महिला रोगियों में समय से पहले और शुरुआती मेनोपॉज के लिए बढ़े हुए जोखिम के बारे में पता होना चाहिए, ताकि शुरुआती एस्ट्रोजेन की कमी से जुड़े संभावित दीर्घकालिक स्वास्थ्य परिणामों के इलाज देने के लिए वो तैयार रहें। साथ ही पीड़ित महिलाओं को उचित परामर्श और प्रबंधन प्रदान किया जा सके।

रेसिपी

वेज कीमा मटर

सामग्री

■ 2 कप सोया ग्रेन्युल्स ■ 1 कप हरी मटर ■ 1/2 कप दही ■ 1 प्याज ■ 4 टीस्पून तेल ■ 5 काली मिर्च ■ 4 लौंग ■ 1 बड़ी इलायची ■ 1/2 टीस्पून जीरा ■ 1/2 टीस्पून धनिया पाउडर ■ 1/2 टीस्पून हल्दी पाउडर ■ लाल मिर्च पाउडर ■ 1 टीस्पून अदरक का पेस्ट ■ 1 टीस्पून लहसुन का पेस्ट ■ गर्म मसाला ■ नमक स्वादानुसार।

विधि

सोया ग्रेन्युल्स को गर्म पानी में 15 मिनट के लिए भिगो दें और 15 मिनट बाद निचोड़कर अलग रख दें। गर्म तेल में जीरा और साबुत गर्म मसाला डालकर चटकाएं। बारीक कटा प्याज पारदर्शी होने तक भूनें और उसमें अदरक-लहसुन का पेस्ट डालकर भूनें। फिर इसमें धनिया, हल्दी, लाल मिर्च, दही और नमक डालें। जब मसाला तेल छोड़ने लगे तो उसमें सोया ग्रेन्युल्स और मटर डालकर 2 मिनट तक पकाएं। फिर 1 गिलास पानी डालकर उबाल आने तक पकाएं। गर्म मसाला डालें और बारीक कटे हरे धनिए से गार्निश कर सर्व करें।

चटपटा चीला

सामग्री

- कप सूजी
- 1 कप बेसन
- 100 ग्राम दही
- 1 बारीक कटी शिमला मिर्च
- 2 बारीक कटी हरी मिर्च
- कद्दूकस की हुई अदरक
- 1 कटोरी बारीक कटा हरा धनिया
- नमक स्वादानुसार

विधि

दही में दो कप पानी मिलाकर मट्ठा तैयार कर लें। एक बोल में सूजी और बेसन निकाल लें, उसमें मट्ठा और नमक मिलाने के बाद पंद्रह मिनट के लिए रख दें। अब इसमें शिमला मिर्च, हरी मिर्च, अदरक और हरा धनिया डालकर अच्छी तरह मिला लें। मिश्रण गाढ़ा लगे तो उसमें पानी मिला लें। नॉनस्टिक तवे पर थोड़ा तेल गर्म कर लें। चमच से मिश्रण को तवे पर गोल-गोल फैलाने के बाद गैस धीमी कर दें। एक छोटी चम्मच में तेल लेकर चीले के चारों ओर डालें, थोड़ा सा तेल चीले के ऊपर भी डालें। चीले की निचली सतह ब्राउन होने पर उसे कलछी की सहायता से पलटें और दूसरी तरफ भी ब्राउन होने तक सेंकें। चटनी या सॉस के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह बना रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होंगी। प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंग। मनोरथ सिद्धि का योग है। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-3-6-8

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। सम्पत्ति से लाभ। शुभांक-4-6-8

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-2-4-6

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुखदायी समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-4-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): मनोविनोद बढ़ेगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम भी होगा। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। शुभांक-2-4-6

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। स्थान परिर्वतन की संभावना हैं। शुभांक-3-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। यात्रा का योग है। शुभांक-3-5-6

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शुभांक-4-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। परिवारजन का सहयोग काम को बनाना आसान करेगा। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। थोड़े प्रयास से कार्य सिद्ध होंगे। शुभ कार्य सम्पन्न होने से वातावरण आनन्द देने वाला बना रहेगा। शुभांक-2-4-6

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। आर्थिक लाभ हेतु किये गए कार्यों का तत्काल प्रतिफल मिलेगा। बौद्धिक उलझनें बनी रहेंगी। लाभमार्ग प्रशस्त होगा। नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेगे व अभिलाषाएं पूर्ण होगी। शुभांक-1-3-5

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। मेहमानों का आगमन होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। पारिवारिक विवाद टालें। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। शुभांक-2-6-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-2-4-6

काकुरो पहेली - 2652

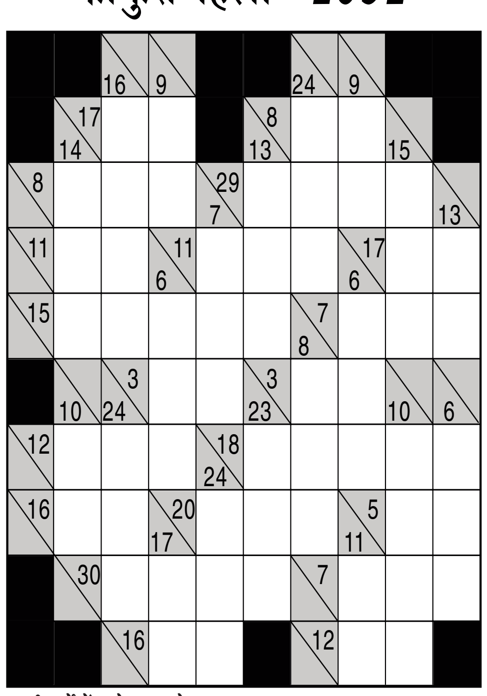

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

11/7 | 1 2 3 5 (↓ 1 2 4)

1+2+3+4+5+6=21
1+2+3+4+5+7=22
3+5+6+7+8+9=38
4+5+6+7+8+9=39

काकुरो - 2651 का हल

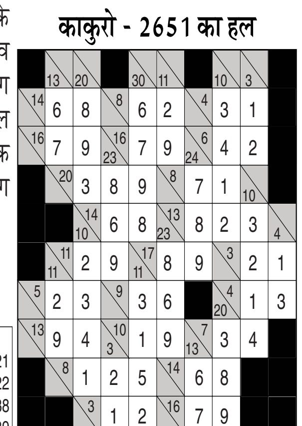

हंसी के फूव्वारें

एक अभिनेत्री ने ब्यूटी-क्लीनिक की मालकिन से अपने चेहरे के दाग को मिटाने का रेट पूछा.

'पांच सौ रुपये लगेंगे !'

'पांच सौ तो ज्यादा हैं !'

'फिर ?'

'कोई सस्ता तरीका बताइए !'

'सस्ता नहीं मुफ्त का तरीका है.'

'कृपया जल्दी बताइये !'

' घूंघट निकालना शुरू कर दीजिए! आपका काम मुफ्त में बन जायेगा.'

□ □ □

एक आंखों के डाक्टर ने अपने एक सर्जन मित्र को नजर का चश्मा बनाकर दिया. संयोग से उसी दिन आंखों के डाक्टर को उसी सर्जन से अपना ऑपरेशन करवाना पड़ा.

फिर जब वह ऑपरेशन टेबल पर लेट गया तो सर्जन चश्मा लगाकर बोला- 'रेडी ! मैं तैयार हो गया हूँ ! अब तुम बताओ कि तुम कहां हो?'

आंखों का डाक्टर तुरन्त मेज से कूद पड़ा.

□ □ □

प्रशंसिका: ''आपके उपन्यास का अंतिम सीन बहुत अच्छा है.''

उपन्यासकार: ''उपन्यास के आरंभ के विषय में आपका क्या विचार है?''

प्रशंसिका: ''मैं उसे अभी पढ़ना शुरू करने वाली हूँ.''

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 2652

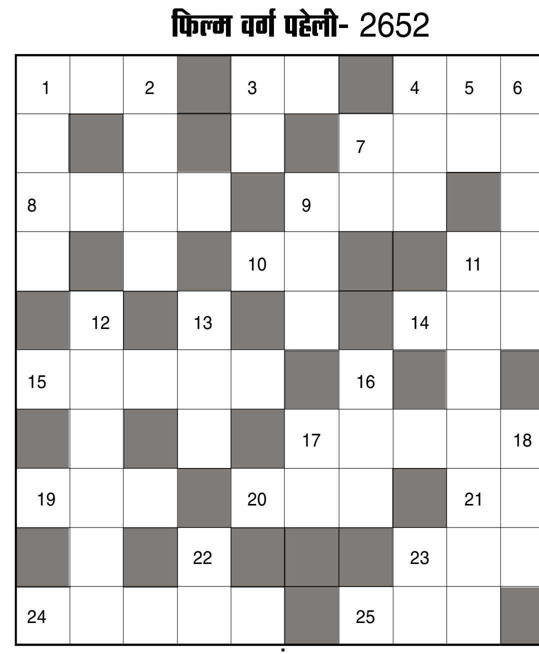

बायें से दायें:-

१. 'राह बनी खुद मंजिल' गीत वाली विस्वजीत, वहीदा की फिल्म-३
३. संजीवकुमार, सुचित्रासेन की 'तेरे बिना जिंदगी से कोई' गीत वाली फिल्म-२
४. 'मैं ने तेरे लिए ही' गीत वाली अमिताभ, राजेश खन्ना, शर्मिला की फिल्म-३
७. गोविंदा, आदित्य, नीलम, मंदाकिनी की अजय कश्यप निर्देशित फिल्म-४
८. 'कितना मजा आ रहा है' गीत वाली धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी की फिल्म-२,२
९. राजेंद्रकुमार, वहीदा की 'ये मौसम भीगा भीगा है' गीत वाली फिल्म-३
१०. 'ना जइयो परदेस' गीत वाली दिलीपकुमार, अनिलकपूर, जैकी श्रॉफ, श्रीदेवी, पुनम ढिल्लों की फिल्म-२
११. जॉन अब्राहम, तारा शर्मा की 'हर तरफ हर जगह' गीत वाली फिल्म-२
१४. 'ऐ मेरे मेहरबां ऐ मेरे हमनशी' गीत वाली मनोजकुमार, साधना की फिल्म-३
१५. जीतेंद्र, रेखा की 'गोकुल की गलियों का' गीत वाली फिल्म-२,२,१
१७. 'जाओ जाओ हम से क्या' गीत वाली जैकी श्रॉफ, अमृता सिंह की फिल्म-२,३
१९. अरविंद, प्रभुदेवा, काजोल की 'चंदा रे चंदा रे कभी' गीत वाली फिल्म-३
२०. 'सिलसिला शुरू हुआ यहाँ से' गीत वाली फिल्म-३
२१. राजकपूर, नर्गिस की 'राजा की आएगी बारात' गीत वाली फिल्म-२
२३. शशि, संजीवकुमार, वहीदा, पूनम की फिल्म-३
२४. राहुलराय, शीबा की 'तेरी दोस्ती में मिला है' गीत वाली फिल्म-२,१,२
२५. 'देखो मेरा दिल मचल' गीत वाली राजेंद्रकुमार, वैजयंती की फिल्म-३

ऊपर से नीचेः-

१. अमिताभ, नाना पाटेकर, तब्बू की 'हम हैं बनारस के भैया' गीत वाली फिल्म-४
२. शाहरूख, विवेक, जूही की फिल्म-४
३. धर्मेन्द्र, माला सिन्हा की 'गैरों पे करम अपनों पे सितम' गीत वाली फिल्म-२
४. 'कभी तो मिलेगी कहीं' गीत वाली अशोक, प्रदीप, मीना की फिल्म-३
५. फिल्म 'परिवार' में जीतेंद्र के साथ नायिका कौन थी-२
६. शाहबाद, किरण, तब्बू, रीता की फिल्म-५
७. सनी, सुष्मिता सेन की 'कोई देख रहा छुप छुप के' गीत वाली फिल्म-२
९. 'तेरे चेहरे में वो' गीत वाली फिरोज खान, हेमा मालिनी, रेखा की फिल्म-३
११. जॉय, सायरा की 'दिल की महफिल सजी है' गीत वाली फिल्म-२,२,३
१२. 'इक तुम पास ना आना' गीत वाली अमिताभ, लक्ष्मी छाया की फिल्म-२,१,३
१३. अक्षयकुमार, माधुरी दीक्षित की 'दुनिया से दूर जा रहा हूँ' गीत वाली फिल्म-३
१६. राजकुमार, शत्रुघ्नसिन्हा, हेमा मालिनी, मिथुन चक्रवर्ती की फिल्म-३
१७. आमिर खान, फैजलखान, ट्विंकल की 'कमरिया लचके रे' गीत वाली फिल्म-२
१८. 'ये दुनिया वाले पूछेंगे' गीत वाली देव आनंद, आशा पारेख की फिल्म-३
२२. 'आज सजन मोहे अंग लगालो' गीत वाली फिल्म-२
२३. नसीरूद्दीनशाह, अतुल अग्निहोत्री, पूजा भट्ट की फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2651

वि	वा	ह	■	इ	श्क	वि	श्क	■	टा
द्या	■	मे	■	श्क	■	धा	■	फ	र्ज
बा	द	शा	ह	■	शै	ता	न	■	न
ल	■	■	सी	मा	■	■	का	ल	■
न	ज	रा	ना	■	श	बा	ब	■	सं
■	मी	ना	■	ना	रा	ज	■	दा	ता
आ	न	■	का	■	बी	■	ना	दा	न
शि	■	जो	शी	ले	■	फि	जा	■	■
क	शि	श	■	कि	ला	■	य	हू	दी
■	वा	■	डॉ	न	■	आ	ज	■	पा

सूडोकु -2652

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2651 का हल

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8

शब्द पहेली - 2652

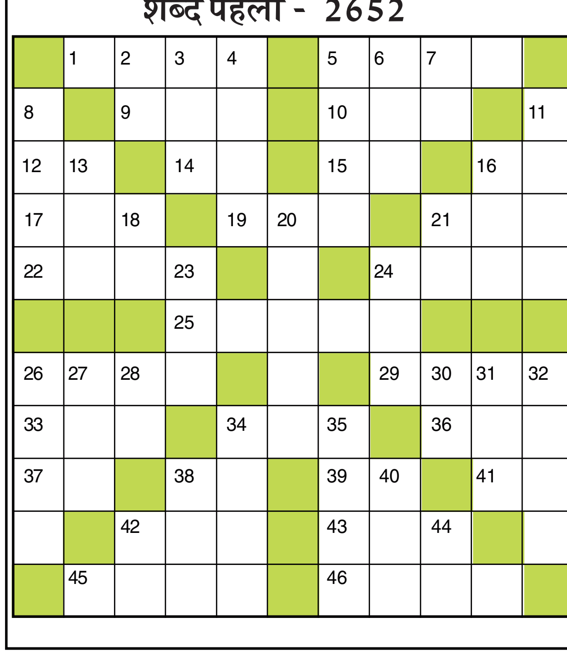

बाएँ से दाएँ

1.सरदार,अगुआ-4
5.जनमत,एक राय-4
9.पुराना जुकाम-3
10.चिंता,परवाह-3
12.पैंदा,तल्ला-2
14.ताल,सुर,आलाप-2
15.महोदय (अंग्रेजी-2)
16.लाडला,दुलारा-2
17.निवास करना-3
19.डोली उठाने वाले-3
21.नसीरुद्दीन शाह की फिल्म-3
22.तड़फाना-4
24.जल में रहनेवाला-4
25.दरियादिल,करुण-5
26.इराक की राजधानी-4
29.भेंट,पुरस्कार-4
33.पासों से भविष्य देखना-3
34.अश्ववाहक,घुड़सवार-3
36.चौकसी,रखवाली-3
37.हलक,कंठ-2
38.सदैव-2
39.लार -2
42.निश्चित-2
42.कालीन-3
43.बंदर,मर्कट-3
45.किसान-4
46.इस्लामी कैलेंडर का एक महीना -4

ऊपर से नीचे

2.क्रिकेट में बनते हैं-2
3.नगमा,गीत (उर्दू-3)
4.जो लायक न हो-4
5.अधिकारी,अफसर-4
6.राशिचक्र की एक राशि -3
7.झगड़ा,बैर-2
8.आदत,व्यवहार-4
11.शमशीर-4
13.तरंग,हिलोर-3
16.तृष्णा,लोभ-3
18.अमेरिका स्थित वेधशाला-2
20.जितेंद्र इस फिल्म में सात सवाल हल करते हैं -5
21.नीर,पानी-2
23.देवर्षि-3
24.ईर्ष्या,डाह-3
26.वटवृक्ष-4
27.जिसमें पौधे लगाते हैं-3
28.दलहन-2
30.मंत्र जाप-2
31.तसल्ली,आराम-3
32.भगवान विष्णु-4
34.धर्मशीलता-4
35.पैजामा-4
38.तमीज-3
40.साजन,प्रेमपात्र-3
42.पहरा,चौकसी-2
44.अवकाश-2

शब्द पहेली -2651 का हल

■	ना	स	म	झ	■	■	क	पा	स	■
कु	ल	■	झ	■	क	रा	ह	■	म	न
ल	■	■	धा	र	ण	■	र	■	■	क
प	रि	चा	र	क	■	पा	■	अ	न	ल
ति	■	ह	■	म	नो	नी	त	■	सी	■
■	जा	त	■	■	■	■	■	त	ब	■
■	मु	■	फि	त	र	त	■	ना	■	ना
म	न	का	■	न	■	प	र	व	रि	श
लि	■	■	न	■	पू	न	म	■	■	वा
का	बु	■	ख	ब	री	■	णी	■	खा	न
■	आ	स	रा	■	■	जा	य	दा	द	■

लोकतंत्र केवल शासन पद्धति नहीं बल्कि जीवन की आत्मा है : नरेन्द्र सिंह तोमर

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि भारत का लोकतंत्र केवल शासन पद्धति भर नहीं है बल्कि यह हमारे जीवन की आत्मा है। लोकतंत्र की जड़ें बहुत गहरी रही हैं। यह एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक सत्य है कि भारत ने ही दुनिया को लोकतंत्र का बीज दिया। लोकतंत्र हमारे लिए केवल संविधान की देन नहीं है बल्कि सबसे पुरानी जीवन परंपरा का हिस्सा है, जो हजारों वर्षों से हमारी संस्कृति, समाज और राजनीति का मार्गदर्शन करता आया है।विधानसभा अध्यक्ष तोमर दिल्ली विधानसभा में आयोजित केंद्रीय विधानसभा के प्रथम निर्वाचित भारतीय स्पीकर स्व. विट्ठल भाई पटेल शताब्दी वर्ष समारोह में आयोजित अखिल भारतीय पीठासीन सम्मेलन में भारत-लोकतंत्र की जननी÷ विषय पर व्याख्यान सत्र को संबोधित कर रहे थे। इस सत्र का विषय प्रवर्तन राज्यसभा के उपसभापति हरवंश ने किया। दो दिन चले व्याख्यान सत्र में देश के लगभग 12 विधानसभा अध्यक्षों-उपाध्यक्षों ने अपने विचार रखे। समापन सत्र के दौरान लोकसभा की पूर्व स्पीकर मीरा कुमार एवं दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता विशेष रूप से उपस्थित थे। तोमर ने कहा कि भारत का लोकतंत्र केवल शासन पद्धति भर नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन की आत्मा है। लोकतंत्र की जड़ें बहुत गहरी रही हैं।

मध्य प्रदेश के दो शिक्षकों को मिलेगा राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

भोपाल। मध्य प्रदेश के दो शिक्षकों को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। केन्द्र सरकार के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कारों की घोषणा की गई है। इनमें मध्य प्रदेश के दो शिक्षक भी शामिल हैं। दमोह जिले की प्राथमिक शिक्षक शीला पटेल और आगर-मालवा के माध्यमिक शिक्षक भेरूलाल ओसारा को नई दिल्ली में सम्मानित किया जाएगा। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित होने वाले शिक्षकों को बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। स्कूल शिक्षा मंत्री उदयप्रताप सिंह ने भी चयनित शिक्षकों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि चयनित शिक्षकों को श्रेष्ठ कार्यों की वजह से मध्य प्रदेश को गौरवान्वित करने का अवसर मिला है। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार चयनित दमोह जिले की प्राथमिक शिक्षक शीला पटेल, शासकीय प्राथमिक शाला देवरान टपरिया में पदस्थ हैं। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से चयनित आगर-मालवा जिले के भेरूलाल ओसारा माध्यमिक शिक्षक शासकीय ईपीईएस माध्यमिक शाला खेरिया सुसनेर में पदस्थ हैं। चयनित दोनों शिक्षकों को स्कूली शिक्षा गुणवत्ता में सुधार एवं छात्रों के जीवन को समृद्ध बनाने, नवाचारों के माध्यम से शैक्षिक उत्कृष्टता के लिये प्रदान किया गया है।

भारतीय प्रतिभाएं भारत के विकास में योगदान दें : शिवराज सिंह चौहान

भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल स्थित भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) में आयोजित 12वें दीक्षांत समारोह' में उपाधि प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने भारत की उज्ज्वलतम प्रतिभाओं को देश में ही बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया। केन्द्रीय मंत्री चौहान ने उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से भावनात्मक आह्वान करते हुए कहा कि वे विदेशों में अवसर तलाशने के बजाय भारत के विकास और नवाचार प्रणाली में सक्रिय योगदान दें। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि सिलिकॉन वैली जैसे वैश्विक तकनीकी केंद्रों में बड़ी संख्या में भारतीय प्रतिभाएं काम कर रही हैं। चौहान ने स्नातकों को प्रेरित किया कि वे अपनी योग्यता और कौशल का उपयोग भारत के हित में करें। उन्होंने ब्रेन ड्रेन की प्रवृत्ति को उलटने की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि युवा देश में ही सफल करियर और उद्यम खड़े करें, जिससे विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्यमिता के क्षेत्र में भारत की नींव मजबूत हो। चौहान ने विद्यार्थियों को जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर, समाज और देश के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

बिहार में महागठबंधन को लेकर जनता में उत्साह : तेजस्वी यादव

पटना । बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने मंगलवार को राबड़ी आवास से 'वोटर अधिकार यात्रा' की शुरुआत की। यह यात्रा सुपौल, मधुबनी और दरभंगा में आयोजित की जाएगी। तेजस्वी ने कहा बिहार की जनता में महागठबंधन को लेकर उत्साह देखने को मिल रहा है। तेजस्वी यादव ने पत्रकारों से बात करते हुए वोटर अधिकार यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने कहा, 'महागठबंधन के नेता राहुल गांधी के साथ मिलकर जनता के बीच जा रहे हैं और जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं। जनता में महागठबंधन के प्रति भारी उत्साह है और लोगों का प्यार, आशीर्वाद और समर्थन मिल रहा है।' तेजस्वी ने एनडीए पर निशाना साधते हुए कहा, हमारे वोटर अधिकार यात्रा से एनडीए नेताओं में बेचैनी साफ दिख रही है। हम पहले भी कह चुके हैं कि एनडीए का मतलब है नहीं देंगे अधिकार। ये लोग लोकतंत्र और संविधान को खत्म करना चाहते हैं। बिहार, जो लोकतंत्र की जननी है, वहां ये लोग लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर करने की साजिश रच रहे हैं। लेकिन हम ऐसा बिल्कुल नहीं होने देंगे।

मध्य प्रदेश हेल्थ केयर फैसिलिटी और इनोवेशन में निभा रहा अग्रणी भूमिकाः जेपी नड्डा

एजेंसी

भोपाल। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरगामी सोच से हमारा देश बदल रहा है। हम विकास के हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और स्वास्थ्य सेवाओं और सुविधाओं के विस्तार में भारत ने पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है। दिल्ली से स्वास्थ्य सुधार के लिए तैयार की गई योजनाओं और स्वास्थ्य कार्यक्रमों को मध्य प्रदेश में अभूतपूर्व तरीके से अमली जामा पहनाया जा रहा है। मध्य प्रदेश का प्रदर्शन देश के दूसरे राज्यों के लिए एक उदाहरण बन रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार, विस्तार और नवाचार में मध्य प्रदेश नेतृत्व कर रहा है।केन्द्रीय मंत्री नड्डा मध्य प्रदेश के प्रवास के दौरान जबलपुर के घंटाघर स्थित नेताजी सुभाषचंद्र बोस सांस्कृतिक सूचना केन्द्र में स्वास्थ्य

विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ रिमोट का बटन दबाकर श्योपुर और सिंगरौली जिले में नवनिर्मित नवीन शासकीय चिकित्सा महाविद्यालयों का वर्चुअली लोकार्पण किया। केन्द्रीय मंत्री नड्डा ने इन दोनों मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस कोर्स की 100-100 सीटों के प्रवेश के लिए केन्द्र सरकार की ओर से लैटर ऑफ परमिशन भी राज्य सरकार को दिया। उन्होंने कहा कि लैटर ऑफ परमिशन के जरिए इन दोनों मेडिकल कॉलेज के संचालन और प्रवेश की प्रक्रिया भी आज से ही प्रारंभ कर दी गई है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री नड्डा ने कहा कि हमारी नई स्वास्थ्य नीति में हमने बीमार होने के बाद इलाज करने की पुरानी व्यवस्था के बजाय नागरिक बीमार ही न पड़ें, इसके लिए प्रिवेन्टिव और प्रमोशनल हेल्थ केयर पर फोकस किया। टोटल हैल्थ केयर सेक्टर में हम विकास और विस्तार की एक नई कहानी लिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत विश्व का पहला ऐसा देश है, जिसने अपनी अधिकतम आबादी को बीमारी की इलाज के लिए पांच लाख रुपये सालाना हैल्थ कवरेज दिया है। आयुष्मान भारत निरामयम् योजना के जरिए हमने यह कर दिखाया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और स्वास्थ्य विभाग का अमला इस उपलब्धि के लिए बधाई और साधुवाद के पात्र हैं।

अंतरराष्ट्रीय साइबर ठगी गिरोह का भंडाफोड़, 3 आरोपित गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने अमेरिकी नागरिकों को ठगने के लिए भारत से चलाए जा रहे अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए 3 लोगों को गिरफ्तार किया है। सीबीआई के मुताबिक गिरफ्तार आरोपियों के नाम जिगर अहमद, यश खुराना और इंदर जीत सिंह बाली हैं। सीबीआई ने इस ठगी को खत्म करने के लिए चक्र-IV चलाया, जिसे अमेरिका की जांच एजेंसी एफबीआई के सहयोग से अंजाम दिया गया। छापेमारी में सीबीआई को 85 हार्ड डिस्क, 16 लैपटॉप, 44 मोबाइल फोन और कई आपत्तिजनक दस्तावेज शामिल हैं। इसके अलावा आरोपितों के घरों से 54 लाख रुपये की नकद राशि भी बरामद की गई है। इनसे जुड़े कई और इलाकों की तलाशी ली गई है और जांच का दायरा लगातार बढ़ाया जा रहा है। सीबीआई की जांच में यह भी सामने आया है कि यह गिरोह ठगी से कमाई गई रकम को वर्चुअल करेंसी (क्रिप्टो) के जरिए एक देश से दूसरे देश में ट्रांसफर करता था ताकि उसे ट्रेस करना मुश्किल हो जाए। सीबीआई ने इस मामले में कई शिकायतों के बाद 18 अगस्त को केस दर्ज किया और तेजी से जांच शुरू की। 20 अगस्त से अमृतसर और दिल्ली में कई ठिकानों पर छापेमारी की गई। अमृतसर में खालसा कॉलेज ऑफ विमेन के सामने ग्लोबल टॉवर में स्थित मेसर्स डिजीकैप्स द फ्यूचर ऑफ डिजिटल नामक एक अवैध कॉल सेंटर से 34 लोगों को रंगे हाथों पकड़ा गया। इस कॉल सेंटर में चल रही गतिविधियों के दौरान अमेरिका के लोगों को फोन करके ठगी की जाती थी। यह गिरोह 2023 से सक्रिय था और खुद को तकनीकी सहायता देने वाली कंपनी बताकर अमेरिका के लोगों को कॉल करता था। आरोपी उन्हें डराते थे कि उनके बैंक खातों से छेड़छाड़ हुई है।

असम-त्रिपुरा की अंतरराज्य सीमा पर तीन करोड़ की सिरप के साथ दो गिरफ्तार

एजेंसी

श्रीभूमि (असम)। असम के बजारीछोरा थाना अंतर्गत त्रिपुरा की अंतराज्यीय सीमा पर स्थित चुराईबाड़ी निगरानी चौकी की पुलिस को नशा विरोधी अभियान में बड़ी सफलता मिली है। पुलिस अभियान में कफ सिरप की 30,430 शीशियां बरामद की गईं। पुलिस ने बताया है कि बरामद कफ सिरप की कीमत कालाबाजार में कम से कम तीन करोड़ रुपये है। पश्चिम बंगाल निवासी हमीनुर इस्लाम और शेख अलामीन को मादक कफ सिरप की तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। बताया जा रहा है कि कोलकाता से त्रिपुरा माल लेकर एक ट्रक सोमवार सुबह असम के चुराईबाड़ी निगरानी चौकी पहुंचा। निगरानी चौकी के प्रभारी प्रणब मिली ने एक टीम के साथ ट्रक की तलाशी ली। तलाशी के दौरान, पुलिस ने विभिन्न सामानों के बीच छिपाए गए खाद्य तेल के डिब्बों से एस्कॉफ सिरप की 30,430 बोतलें बरामद कीं। ट्रक के चालक और सह-चालक, क्रमशः हमीनुर इस्लाम और शेख अलामीन को मादक कफ सिरप की तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। दोनों के घर पश्चिम

बंगाल के 24 परगना जिले के देवगंगा थाना अंतर्गत शिमुलिया में हैं। पुलिस ने गिरफ्तार लोगों के खिलाफ एनडीपीएस अधिनियम की विशिष्ट धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। गौरतलब है कि, पड़ोसी देश बांग्लादेश में इस तरह के गंधहीन नशीले पदार्थों की भारी मांग है। वहां, यह मादक कफ सिरप 1000 से 1200 रुपये प्रति बोतल के हिसाब से बिकता है। नतीजतन, यह आरोप व्यापक रूप से लगाए जा रहे हैं कि इन नशीले पदार्थों की त्रिपुरा कॉरिडोर के माध्यम से बांग्लादेश में तस्करी की जा रही है।

यूपी के बुलंदशहर सड़क हादसे में नौ की मौत

एजेंसी

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में हुए सड़क हादसे में मरने वालों की संख्या नौ हो गई है। हादसे में 30 लोग घायल हुए हैं, जिनमें दस को अलीगढ़ के लिए रेफर किया गया है। इनमें से दो की हालत गंभीर होने पर आईसीयू में हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस घटना पर संवेदना व्यक्त करते हुए मृतकों के परिवार को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये के आर्थिक सहयोग देने का ऐलान किया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि एनएच 34 पर अलीगढ़ बार्डर के पास रनिया थाना क्षेत्र में देररात सवा दो बजे के आसपास एक सड़क दुर्घटना हुई है। कासगंज के सोरो थाना क्षेत्र के रफातपुर गांव से एक ट्रैक्टर ट्रॉली को डबल डेकर बनाकर 61 लोग राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में जहारपीर के दर्शन करने जा रहे थे। तभी पीछे से एक कैंटर ने टक्कर मार देने से ट्रैक्टर ट्रॉली पलट गई। उन्होंने बताया कि सूचना पाकर मौके पर कई थानों की फोर्स, पीआरवी और एम्बुलेंस पहुंची और घायलों को रनिया, खुर्जा और कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां पर आठ लोगों की मौत हो गई। अन्य घायलों को जिला अस्पताल और 10 लोगों को अलीगढ़ के मेडिकल कॉलेज में

रेफर किया गया। अन्य लोगों का इलाज कैलाश अस्पताल में चल रहा था। इलाज के दौरान एक अन्य व्यक्ति की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि इस दुर्घटना में नौ लोगों की मौत हो गई। अलीगढ़ और कैलाश अस्पताल से 20 घायलों को उपचार के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया हैं। 10 लोगों को इलाज के लिए अलीगढ़ भेजा गया है। इनमें से दो आईसीयू में भर्ती हैं। शवों का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। घटनाग्रस्त वाहनों को कब्जे में लेकर पुलिस जांच कर रही है।

पुलिस के अनुसार मृतकों की पहचान ईयू बाबू (उम्र-40 वर्ष) निवासी मिलकिनिया, रामबेटी पत्नी सोरन सिंह (उम्र-65 वर्ष) निवासी रफातपुर, चांदनी पुत्री कालीचरण(उम्र-12 वर्ष) निवासी रफातपुर, घनीराम (उम्र-40 वर्ष) निवासी मिलकिनिया, मोक्षी (उम्र-40 वर्ष) निवासी मिलकिनिया, शिवांश पुत्र अजय (उम्र-6 वर्ष) निवासी मिलकिनिया, योगेश पुत्र रामप्रकाश (उम्र-50 वर्ष) निवासी रफातपुर व विनोद पुत्र सोरन सिंह (उम्र-45 वर्ष) निवासी रफातपुर थाना सोरों जनपद कासगंज और लेखराज के रूप में हुई है।

हमीद के बयान पर गरजे मुख्यमंत्री सरमा, बोले- 'अवैध घुसपैठियों को जगह नहीं, असम हमारी पहचान है'

एजेंसी

गुवाहाटी (असम)। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने असम दौरे पर आई समाजसेवी व पूर्व योजना आयोग की सदस्य सैयदा सैयदीन हमीद के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर आरोप लगाया कि गांधी परिवार की करीबी सैयदा हमीद जैसे लोग अवैध बांग्लादेशियों को वैध ठहराने की कोशिश कर रहे हैं। उनका मकसद जिन्ना के उस ख्वाब को पूरा करना है, जिसमें असम को पाकिस्तान का हिस्सा बनाने की साजिश थी। सरमा ने कहा कि इस तरह की सोच असमिया समाज की अस्मिता पर सीधा हमला है। उन्होंने चेतावनी दी कि आज असम की पहचान विलुप्त होने के कगार पर खड़ी है, क्योंकि कुछ लोग मौन समर्थन देकर घुसपैठियों को

बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन हमलोग लचित बरफूकन के बेटे-बेटियां हैं। अपनी धरती और अपनी पहचान की रक्षा के लिए हम खून की आखिरी बूंद तक लड़ेंगे। मुख्यमंत्री ने साफ शब्दों में कहा कि असम में बांग्लादेशियों के लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा, असम में बांग्लादेशियों का स्वागत नहीं है, यह उनकी जमीन नहीं है। उनसे सहानुभूति रखने वाला कोई भी उन्हें अपने घर में जगह दे सकता है। असम अवैध घुसपैठियों के लिए नहीं है, न अभी, न कभी।

मुख्यमंत्री का यह बयान ऐसे समय में आया है जब राज्य में लगातार बेदखली और अवैध घुसपैठियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई चल रही है। असम में बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा दशकों से बेहद संवेदनशील और राजनीतिक रूप से अहम माना जाता है। हमीद के बयान ने असमिया समाज के एक बड़े वर्ग में नाराजगी पैदा की है। अब मुख्यमंत्री की यह कड़ी प्रतिक्रिया साफ संकेत देती है कि सरकार इस मुद्दे पर और कठोर रुख अपनाने वाली है।

डायमंड हार्बर सीट पर जीत को चुनौती : अभिषेक बनर्जी ने हाईकोर्ट में दाखिल किया प्रत्युत्तर हलफनामा

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर लोकसभा सीट से तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद अभिषेक बनर्जी ने कलकत्ता उच्च न्यायालय में एक प्रत्युत्तर हलफनामा (काउंटर एफिडेविट) दाखिल किया। यह हलफनामा 2024 लोकसभा चुनाव में उनकी भारी जीत को चुनौती देने वाली चुनाव याचिका के जवाब में दायर किया गया है। अब इस मामले की अगली सुनवाई 4 सितंबर को होगी। अभिषेक बनर्जी सोमवार सुबह करीब 11 बजे उच्च न्यायालय पहुंचे और लगभग 15 मिनट तक वहां मौजूद रहे। इस दौरान उन्होंने कुछ आवश्यक दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए और अपने हलफनामे को दाखिल किया। अदालत परिसर में मौजूद तृणमूल कांग्रेस के कई वकीलों ने उनका स्वागत किया और उनके साथ तस्वीरें भी खिंचवाईं।

गौरतलब है कि, भाजपा उम्मीदवार अभिजीत दास (बॉबी) ने 2024 लोकसभा चुनाव परिणामों को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। याचिका में आरोप लगाया गया है कि डायमंड हार्बर सीट पर व्यापक चुनावी अनियमितताएं हुईं और चुनाव परिणाम वैध नहीं हैं। अभिषेक बनर्जी ने इस चुनाव में रिकॉर्ड 7 लाख 10 हजार 930 वोटों से जीत दर्ज की थी, जो पश्चिम बंगाल में अब तक का सबसे बड़ा अंतर है। यह उनकी लगातार तीसरी जीत रही। पिछले अप्रैल में सात महीने की देरी के बाद उच्च न्यायालय ने मामले की सुनवाई करते हुए निर्वाचन आयोग और जिला निर्वाचन अधिकारी को सभी चुनाव संबंधी सामग्री जैसे डेटा, सीसीटीवी फुटेज और डिजिटल रिकॉर्ड संरक्षित रखने का निर्देश दिया था।

चिन्यालीसौड़ व गौचर हवाई पट्टियों का वायुसेना करेगी संचालन

एजेंसी

देहरादून। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के चिन्यालीसौड़ और चमोली जिले के गौचर की हवाई पट्टियों का संचालन भारतीय वायुसेना करेगी, जबकि पिथौरागढ़ हवाई अड्डे का संचालन एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया की ओर से किया जाएगा। सरकार पिथौरागढ़ एयरपोर्ट का विस्तार भी करने जा रही है, जिस पर 450 करोड़ रुपये खर्च होंगे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने यहां कहा कि राज्य सरकार सीमांत जनपदों में हवाई सेवाओं को विस्तार करने पर जोर दे रही है। सीमांत प्रदेश में हवाई नेटवर्क का विस्तार जरूरी है, इससे स्थानीय निवासियों के साथ ही सामरिक जरूरतों की भी पूर्ति संभव होगी। इसके लिए वायुसेना का भी सहयोग लिया जाएगा। पिथौरागढ़ एयरपोर्ट का शीघ्र विस्तार भी किया जाएगा। मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि हवाई सेवाओं के विस्तार से स्थानीय निवासियों के साथ ही सामरिक जरूरतों को भी पूरा किया जा सकता है। इसी क्रम में राज्य सरकार ने चिन्यालीसौड़ और गौचर में स्थित

हवाई पट्टियों का संचालन भारतीय वायुसेना के हवाले करने पर सैद्धांतिक सहमति दे दी है। प्रदेश सरकार पिथौरागढ़ एयरपोर्ट पर बढ़ती हवाई सेवाओं को देखते हुए, इसका संचालन एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के जरिए करने पर सैद्धांतिक तौर पर सहमत हो गई है। इसके लिए राज्य सरकार और एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इडिया के बीच एमओयू के लिए सहमति बन गई है। उन्होंने कहा कि सरकार पिथौरागढ़ एयरपोर्ट का विस्तार भी करने जा रही है, जिस पर करीब 450 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसके साथ ही सरकार गुंजी से आदि कैलाश क्षेत्र में हवाई सेवा शुरु करने के लिए यहां एक किमी लंबी हवाई पट्टी बनाने की तैयार कर रही है। इस हवाई पट्टी के निर्माण में भी वायुसेना की ओर से तकनीकी सहयोग किया जाएगा।

मंत्री कपिल मिश्रा ने सभापुर में किया तीन करोड़ से होने वाले निर्माण का शुभारंभ

नई दिल्ली। दिल्ली के विकास मंत्री कपिल मिश्रा ने करावल नगर विधानसभा के सभापुर क्षेत्र में लगभग 3 करोड़ की लागत से बनने वाली सड़कों और गलियों के निर्माण का शुभारंभ किया। मंत्री कपिल मिश्रा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि करावल नगर का सर्वांगीण विकास मेरी प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर है। आज सभापुर क्षेत्र में करीब 3 करोड़ रुपये की लागत से सड़कों और गलियों के निर्माण का शुभारंभ किया गया है। हमारा लक्ष्य है कि करावल नगर की हर गली और हर मोहल्ला विकास की रफ्तार से जुड़े और करावल नगर के लोगों का जीवन बेहतर और सुविधाजनक बने। उन्होंने कहा कि अभी सरकार आए महज 6 महीने ही हुए हैं, लेकिन करावल नगर की तस्वीर बदलना शुरू हो गई है। उन्होंने जनता से वादा किया कि इस साल के अंत तक करावल नगर क्षेत्र में आने वाले सभी 11 गांवों में से एक भी गांव ऐसा नहीं बचेगा।

भारत एवं फिजी के बीच रणनीतिक सहयोग बढ़ाने के लिए हुई ठोस पहल

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत एवं प्रशांत महासागर के भारतवंशी बहुल फिजी ने रक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, कृषि-प्रसंस्करण, व्यापार एवं निवेश, लघु एवं मध्यम उद्यमों के विकास, सहकारिता, संस्कृति, खेल, शिक्षा और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में एक व्यापक साझीदारी के लिए मिल कर काम करने का संकल्प जताया। दोनों देशों ने एक खुले, समावेशी, स्थिर, संप्रभु और क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान पर आधारित समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए फिजी के हिंद-प्रशांत महासागर पहल (आईपीओआई) में शामिल होने का स्वागत किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारत की यात्रा पर आये फिजी के प्रधानमंत्री सितिवेनी राबुका के बीच यहां हैदराबाद हाउस में हुई द्विपक्षीय बैठक में ये फैसले लिये गये।

प्रधानमंत्री श्री राबुका 24 से 26 अगस्त तक भारत की आधिकारिक यात्रा पर कल शाम यहां पहुंचे। उनके साथ उनकी पत्नी, देश के स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा मंत्री एंटोनियो लालबालावु और फिजी गणराज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल भी आया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने प्रधानमंत्री राबुका और उनके प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया।

दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय मामलों के व्यापक दायरे और आपसी हित के क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर व्यापक और दूरगामी प्रभावों पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने आपसी संबंधों में प्रगति पर संतोष व्यक्त किया तथा रक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, कृषि-प्रसंस्करण, व्यापार एवं निवेश, लघु एवं मध्यम उद्यमों के विकास, सहकारिता, संस्कृति, खेल, शिक्षा और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में एक व्यापक, समावेशी और दूरदर्शी साझीदारी बनाने के अपने संकल्प की पुष्टि की। फिजी में भारत के सहयोग से स्वास्थ्य एवं चिकित्सा और पर्यटन के बुनियादी ढांचे के विकास को लेकर महत्वपूर्ण सहमति कायम हुई है लेकिन भारत से फिजी के लिए सीधी उड़ान शुरू करने को लेकर कोई ठोस पहल नहीं हो पायी। बैठक के दौरान सुवा में 100-बेड वाले सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल बनाने सहित 8 समझौते हुए और 17 घोषणाएं की गईं। इन समझौतों में स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, साइबर सुरक्षा, मानकीकरण और रक्षा सहयोग से जुड़े करार शामिल हैं। इसमें फिजी में दवाओं की आपूर्ति, कौशल विकास तथा त्वरित प्रभाव परियोजनाओं को लागू करने में सहयोग के करार भी महत्वपूर्ण हैं।

दोनों देशों ने मानव संसाधन क्षमता निर्माण, तकनीकी सहयोग और गतिशीलता बढ़ाने के लिए भी करार किए। भारत ने फिजी को दो समुद्री एम्बुलैंस, 12 कृषि ड्रोन और 2 मोबाइल मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएं भी प्रदान करने की घोषणा की। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने प्रेस वक्तव्य में कहा कि भारत प्रशांत द्वीप देश से सहायता में फिजी को एक हब के रूप में देखता है। हम दोनों स्वतंत्र, खुले, समावेशी, सुरक्षित और समृद्ध हिन्द प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करते हैं।

मध्य प्रदेश में वर्ष 2003 में केवल 5 मेडिकल कॉलेज थे, अब 32 हो गए : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि बीमारों का दर्द कोई नहीं जानता, पर हमारी सरकार ने बीमार और उनके परिजन के दर्द को पहचान कर इलाज की व्यवस्था की है। मध्य प्रदेश में बीमारी का इलाज और बीमार की मदद की व्यवस्था हमारी सरकार भी कर रही है। सिर्फ इलाज ही नहीं, बीमारियों के शोध कार्यों को भी हम प्रोत्साहित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2003 में मध्य प्रदेश में केवल पांच मेडिकल कॉलेज हुआ करते थे, वर्तमान में प्रदेश में 17 सरकारी और 13 निजी मेडिकल कॉलेज के साथ आज लोकार्पित होने वाले दो नए गर्वनमेंट मेडिकल कॉलेज के साथ अब 32 मेडिकल कॉलेज उपलब्ध हो गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जबलपुर के नेताजी सुभाषचंद्र बोस सांस्कृतिक सूचना केन्द्र में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रसाद नड्डा की मौजूदगी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री नड्डा और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रिमोट का बटन दबाकर श्योपुर और सिंगरौली जिले में नवनिर्मित नवीन शासकीय चिकित्सा महाविद्यालयों का वर्चुअली लोकार्पण किया। केन्द्रीय मंत्री नड्डा ने इन दोनों मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस कोर्स की 100-100 सीटों के प्रवेश के लिए केन्द्र सरकार की ओर से लैटर ऑफ परमिशन भी राज्य सरकार को दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम प्रदेश के नागरिकों के स्वास्थ्य विकास और एक बेहतर परिवेश के निर्माण की दिशा में कार्य कर रहे हैं। पिछले डेढ़ वर्ष में करीब 15 शासकीय मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की मंजूरी और निर्माण कार्य की दिशा में तेजी से प्रयास किए गए हैं। हमारी सरकार प्रदेश के हर जिले में मेडिकल या आयुर्वेदिक महाविद्यालय खोलने की दिशा में प्रयासरत है। हमारी सरकार का लक्ष्य प्रदेश को उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं से लैस करना और नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाना है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हम मिशन मोड में आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के जनजातीय अंचलों के विकास के लिए संकल्पित है। राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास हो रहा है। प्रदेशवासियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए सरकार सदैव उनके साथ खड़ी है।

संजू सैमसन ने केरल क्रिकेट लीग में किया कमाल, एक गेंद पर ठोके 13 रन

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल क्रिकेट लीग (KCL) में रविवार को शतक लगाकर एशिया कप के लिए प्लेइंग 11 में अपनी जगत पक्की करने की कोशिश करते नजर आए थे। अब इस खिलाड़ी ने एक और कमाल कर दिया है। सैमसन ने चष्ट्ररु ने मंगलवार को तिरुवनंतपुरम के ग्रीनफील्ड इंटरनेशनल स्टेडियम में त्रिशूर टाइटन्स के खिलाफ अपनी शानदार फॉर्म जारी रखी और एक गेंद पर 13 रन बनाने का कमाल कर दिखाया।

ओपनिंग करने उतरे सैमसन ने आखिरकार 46 गेंदों पर 4 चौकों और 9 छक्कों की मदद से 89 रन बनाए। दाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने 193.48 की स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी की। अपनी पारी के दौरान सैमसन ने एक गेंद पर 13 रन भी बनाए। सिजोमन जोसेफ द्वारा फेंके गए पांचवें ओवर में स्पिनर ने चौथी गेंद पर लाइन पार कर ली। सैमसन ने एक्स्ट्रा कवर के ऊपर से छक्का जड़ दिया। दाएं हाथ के इस बल्लेबाज को अगली फ्री हिट मिली और वह भी छक्के के लिए स्टैंड में पहुंचा दी। नतीजतन सैमसन की टीम कोच्चि ब्लू टाइगर्स ने एक गेंद पर 13 रन बनाए। सैमसन ने 26 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया क्योंकि उन्होंने अपनी पारी के अधिकांश समय 200 से ज्यादा की स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी की और अंत में यह केवल थोड़ा कम हुआ।

सैमसन को आखिरकार पारी के 18वें ओवर में अजिनास के ने आउट कर दिया। हालांकि उनकी इस पारी की बदौलत टीम निर्धारित 20 ओवरों में 188/7 का स्कोर बनाने में सफल रही।चष्ट्ररु2025 के पहले दो मैचों में संजू सैमसन ने मध्य क्रम में बल्लेबाजी की, जिससे यह अटकलें लगाई जा रही थीं कि इस बल्लेबाज को एशिया कप के लिए अपनी नई भूमिका के बारे में बता दिया गया है। पहले मैच में सैमसन को बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला क्योंकि शीर्ष क्रम ने काम पूरा कर लिया था जबकि दूसरे मैच में वह 22 गेंदों पर केवल 13 रन बनाकर कोई खास कमाल नहीं दिखा पाए। हालांकि रविवार को वह अपने सलामी बल्लेबाजी क्रम में लौटे और 121 रन बनाकर अपनी टीम को जीत दिलाने में अहम योगदान दिया था।

राइफल निशानेबाज सिफत कौर ने एशियाई चैम्पियनशिप में जीते दो गोल्ड मेडल

शिमकेंट (कजाखिस्तान) (एजेंसी)। ओलंपियन सिफत कौर सामरा ने एशियाई निशानेबाजी चैम्पियनशिप में मंगलवार को यहां महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशंस में व्यक्तिगत वर्ग का स्वर्ण जीतने के साथ भारत को टीम स्पर्धा में भी पीला तमगा दिलाया।

विश्व रिकॉर्डधारी सामरा ने फाइनल में 459.2 स्कोर करके चीन की यांग यूजी (458.8) को हराया। वहीं सामरा, अंजुम मुद्गिल और आशी चौकसे की तिकड़ी ने टीम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। एशियाई चैम्पियनशिप में यह सामरा का चौथा स्वर्ण है। वह 8 निशानेबाजों के फाइनल में 589 अंक के साथ शीर्ष पर रहते हुए फाइनल में पहुंची थी।

भारत की श्रियांका साडंगी क्वालीफिकेशन में शीर्ष पर रही थी लेकिन वह सिर्फ रैंकिंग अंकों के लिए खेल रही थी लिहाजा सामरा और आशी पहले और चौथे स्थान पर रहकर फाइनल में पहुंचे। सामरा ने नीलिंग में 151.0 और प्रोन में 156.2 स्कोर किया। स्टैंडिंग एलिमिनेशन दौर में वह चीनी प्रतिद्वंद्वी से 0.4 अंक आगे रही। जापान की नोबाता मिसाकी (448 . 2) को कांस्य पदक मिला। आशी 402.8 अंक लेकर सातवें स्थान पर रही।

क्वालीफिकेशन में सामरा ने 589 स्कोर किया जबकि आशी का स्कोर 586 और अंजुम का 578 रहा। तीनों ने कुल 1753 अंक के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया। जापान 1750 अंक लेकर दूसरे और दक्षिण कोरिया 1745 अंक के साथ तीसरे स्थान पर रहा। दो बार की ओलंपियन अंजुम 41 निशानेबाजों में 22वें स्थान पर रही। सोमवार को राष्ट्रीय खेल चैम्पियन नीरू ढांडा ने महिला ट्रैप वर्ग में स्वर्ण जीता था।

वीरेंद्र सहवाग ने कर दी भविष्यवाणी, ये टीम जीतेगी एशिया कप

नई दिल्ली (एजेंसी)। बहुप्रतीक्षित एशिया कप 2025 से पहले सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के साथ बातचीत में वीरेंद्र सहवाग ने कहा कि भारत एशिया कप जीतेगा। एशिया कप 2025 के आधिकारिक प्रसारक सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के साथ एक विशेष बातचीत में वीरेंद्र सहवाग ने भारत की संभावनाओं पर कहा, 'हम विश्व चैंपियन हैं। हमने अभी-अभी चैंपियंस ट्रॉफी और टी20 विश्व कप जीता है और मुझे यकीन है कि हम एशिया कप में सर्वश्रेष्ठ टीम हैं और उम्मीद है कि हम एशिया कप जीतेंगे।'

भारत के अभियान के लिए युवाओं की तुलना में उनका अनुभव कितना महत्वपूर्ण है? उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि हमारी टीम बहुत अच्छी है और स्काई (सूर्यकुमार यादव) आगे बढ़कर नेतृत्व कर रहे हैं और वह टी20 प्रारूप में एक शीर्ष खिलाड़ी हैं। मुझे यकीन है कि उनकी कप्तानी में हम अच्छा प्रदर्शन करेंगे क्योंकि हमने पहले भी देखा है कि जब स्काई ने कमान संभाली थी, हमने कई टी20 मैच जीते थे और मुझे यकीन है कि हम एशिया कप भी जीतेंगे।'

हम आमतौर पर एशिया कप को विश्व कप की तैयारी के रूप में देखते हैं। 2026 का विश्व कप आ रहा है। क्या यह एशिया कप विश्व कप की तैयारी के रूप में काम करेगा? इस बारे में सहवाग ने कहा, 'मुझे लगता है कि टी20 प्रारूप में यह एशिया कप हमारे 2026 के टी20 विश्व कप के लिए एक बेहतरीन तैयारी का काम कर सकता है। यह देखने का मौका है कि किन नए खिलाड़ियों को मौका दिया जाना चाहिए और किसे टीम में शामिल किया जा सकता है। आप विश्व कप के लिए टीम बनाना शुरू कर सकते हैं। मेरे विचार से भारतीय टीम के लिए अपनी ताकत परखने का एशिया कप से बेहतर कोई मौका नहीं हो सकता।'

टीम चयन अक्सर बहस का विषय बन जाता है। एशिया कप के लिए मौजूदा भारतीय टीम और इस टीम के लिए चयनकर्ताओं के दृष्टिकोण के बारे में पूछे जाने पर पूर्व ओपनर ने कहा, 'मुझे लगता है कि हमारे पास एक बहुत अच्छा टी20 चयनकर्ता है। मुझे लगता है कि हमारे पास एक बहुत अच्छी टी20 टीम है। सूर्य कुमार यादव के नेतृत्व में हमने टी20 मैचों में अच्छा प्रदर्शन किया है और मुझे यकीन है कि उन्हें चयनकर्ताओं द्वारा दी गई सर्वश्रेष्ठ टीम मिलेगी और उम्मीद है कि हम इस बार एशिया कप जीतेंगे।' एशिया कप 9 सितंबर 2025 से विशेष रूप से शुरू होगा।

यश ढुल की अर्धशतकीय पारी, पुरानी दिल्ली 6 को हराकर सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने कटाया प्लेऑफ का टिकट

नई दिल्ली (एजेंसी)। कप्तान जॉन्टी सिद्धू (16 गेंद में 28 रन और छह रन पर दो विकेट) के हरफनमौला खेल और यश ढुल (37 गेंद में 53 रन) की अर्धशतकीय पारी से सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने बारिश से प्रभावित दिल्ली प्रीमियर लीग (DPL) टी20 मैच में यहां पुरानी दिल्ली 6 को डकवर्थ-लुईस नियम से 104 रन से रौंद कर प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की कर ली है।

बारिश के कारण सोमवार को मैच शुरू होने में विलंब हुआ और इसे 18-18 ओवर का कर दिया। सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने 5 विकेट पर 197 रन का बड़ा स्कोर खड़ा किया। पुरानी दिल्ली 6 को डकवर्थ लुईस नियम से 15 ओवर में 174 रन का लक्ष्य मिला लेकिन टीम महज 69 रन पर ही आउट हो गई। इस जीत से सेंट्रल दिल्ली किंग्स के 9 मैच में 13 अंक के साथ तालिका में दूसरे जबकि पुरानी दिल्ली 6 इतने ही मैचों में पांच अंक के साथ आखिरी पायदान पर है।

सलामी बल्लेबाज ढुल ने अपनी शानदार फॉर्म जारी रखते हुए अर्धशतक जड़कर पारी को संभाला। उन्होंने युगल सैनी (20 गेंद पर 28) के साथ मिलकर 57 रन की ठोस साझेदारी की। सिद्धू (16 गेंद पर 28) और आदित्य भंडारी (11 गेंद पर 17) ने स्कोर बोर्ड को लगातार चलाए रखा, लेकिन पारी को असली रफ्तार आर्यन राणा की तूफानी बल्लेबाजी से मिली। राणा ने केवल 14 गेंदों पर नाबाद 42 रन बनाकर किंग्स को बड़े स्कोर तक पहुंचाया। पुरानी दिल्ली 6 के लिए रजनीश दादर ने अपने चार ओवरों में 40 रन देकर तीन विकेट लिए।

लक्ष्य का पीछा करते हुए पुरानी दिल्ली छह की टीम किंग्स के अनुशासित गेंदबाजी आक्रमण के सामने कभी भी टिक नहीं पाई। मनी ग्रेवाल और अरुण पुंडीर ने शुरुआत में ही रुशाल सैनी (0) और समर्थ सेठ को आउट कर बड़ा झटका दिया। इसके बाद कप्तान वंश बेदी ने 6 गेंदों पर 14 रन की संक्षिप्त पारी खेली, लेकिन उन्हें भी पुंडीर ने चलता किया। पुरानी दिल्ली 6 का स्कोर 6 ओवर में तीन विकेट पर 44 था, तभी बारिश आ गई और डकवर्थ लुईस नियम से लक्ष्य को 15 ओवरों में 174 रन कर दिया गया।

बारिश के बाद भी पुरानी दिल्ली 6 की किस्मत नहीं बदली। सिमरजीत सिंह ने देव लकड़ा (6) और आदित्य मल्होत्रा (0) को आउट कर उनकी मुश्किलें और बढ़ा दी। पुरानी दिल्ली 6 की ओर से सिर्फ प्रणव पंत (17 गेंद पर 24) ने कुछ संघर्ष दिखाया, लेकिन जैसे ही वह सिद्धू की गेंद पर तेजास बरोका के हाथों लपके गए, पूरी टीम ताश के पत्तों की तरह बिखर गई। सिद्धू, सिमरजीत और अरुण पुंडीर ने 2-2 विकेट लिए।

फैंस के लिए बड़ी खुशखबरी, एशिया कप में दर्शकों को मिलेगी फ्री एंट्री

राजगीर । हॉकी इंडिया ने घोषणा की कि 29 अगस्त से शुरू हो रहे एशिया कप में दर्शकों को मुफ्त प्रवेश मिलेगा। हॉकी इंडिया ने एक बयान में कहा, 'प्रशंसक टिकट जिनी डॉट इन या हॉकी इंडिया ऐप के जरिए मुफ्त टिकट पा सकते हैं। उन्हें प्रक्रिया पूरी करने पर वर्चुअल टिकट मिलेगा। हीरो पुरूष एशिया कप में 8 टीमें भारत, जापान, चीन, कजाखस्तान, मलेशिया, कोरिया, बांग्लादेश और चीनी ताइपै भाग लेंगे। यह 2026 में नीदरलैंड और बेल्जियम में होने वाले विश्व कप का क्वालीफायर टूर्नामेंट भी है। भारत को पूल ए में जापान, चीन और कजाखस्तान के साथ रखा गया है। भारत को 29 अगस्त को चीन से, 31 को जापान और एक सितंबर को कजाखस्तान से खेलना है।

अब भारत से द्विपक्षीय क्रिकेट संबंधों को शुरु करने अपील नहीं करेगा पीसीबी : नकवी

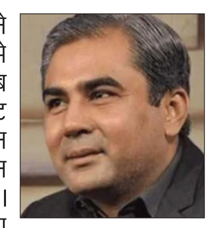

लाहौर । पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) प्रमुख मोहसिन नकवी ने कहा है कि अब उनका बोर्ड भारत से द्विपक्षीय क्रिकेट संबंधों को शुरु करने को लेकर कोई अपील नहीं करेगा। नकवी ने कहा कि पीसीबी ने कई बार भारतीय बोर्ड (बीसीसीआई) से बात कर द्विपक्षीय क्रिकेट को फिर से शुरू करने के प्रयास किये हैं पर सभी विफल रहे हैं। ऐस में अब उनका बोर्ड और अधिक अपील नहीं कर सकता है। भारत और पाके मुकाबले अब केवल आईसीसी टूर्नोमेंटों में ही होते हैं। एशिया कप में अगले माह दोनो ही टीम यूएई में आमने–सामने होंगी। नकवी ने कहा कि द्विपक्षीय क्रिकेट के लिए भारत से फिर से मिन्नते वह नहीं करेंगे। नकवी ने कहा है कि बीसीसीआई के साथ द्विपक्षीय क्रिकेट को लेकर अब सभी बातचीत समान स्तर पर होगी। नकवी ने कहा, मुझे लगता है कि हम इस बात को लेकर पूरी तरह स्पष्ट हैं कि जब भी बातचीत होगी, बीसीसीसीआई के साथ समान स्तर पर होगी और बातचीत के लिए अब कोई भीख नहीं मांगी जाएगी। वह समय बीत चुका है और जो भी होगा, वह समानता के आधार पर होगा। वहीं इससे पहले भारत सरकार ने भी स्पष्ट किया था कि निकट भविष्य में पाकिस्तान के साथ कोई द्विपक्षीय क्रिकेट मैच नहीं होगा पर बहुराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उनकी टीम उतरेगी। पीसीबी से पहले भी पाक के कई क्रिकेटरों ने दोनो देशों के बीच द्विपक्षीय क्रिकेट सीरीज शुरु करने की वकालत की है और कहा है कि खेल को राजनीति से दूर रखा जाना चाहिये। वहीं भारत सरकार का मानना है कि जब तक पाक आतंकवाद में लिप्त है उसके साथ खेला नहीं जा सकता।

सरफराज खान की आक्रामक पारी, हरियाणा के खिलाफ शतक जड़ा, लगाए 9 चौकों और 5 छक्के

चेन्नई । सरफराज खान की 111 रन की आक्रामक पारी की बदौलत मुंबई ने अखिल भारतीय बुची बाबू आमंत्रण क्रिकेट टूर्नामेंट में मंगलवार को यहां हरियाणा के खिलाफ विषम परिस्थितियों से उबरते हुए 9 विकेट पर 346 रन बनाए। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मुंबई ने एक समय 84 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे जिसके बाद सरफराज ने 112 गेंद में नौ चौकों और पांच छक्कों से आक्रामक शतकीय पारी खेलकर अपनी टीम को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया। इसी प्रतियोगिता में TNCA एकादश के खिलाफ 138 रन की पारी खेलने वाले सरफराज ने छक्के की मदद से 99 गेंद में शतक पूरा किया। मुंबई को सलामी बल्लेबाजों दिव्यांश सक्सेना (46) और मुशीर खान (30) ने 69 रन जोड़कर अच्छी शुरुआत दिलाई थी लेकिन इसके बाद टीम ने दोनों सलामी बल्लेबाजों के अलावा प्रग्नेश कंपिलेवार (03) और सूर्यांश शेडगे (01) के विकेट भी जल्दी–जल्दी गंवाए और उसका स्कोर चार विकेट पर 84 रन हो गया। सरफराज ने इसके बाद पारी को संभाला। तनुष कोटियान (48) और शम्स मुलानी (नाबाद 50) ने भी उपयोगी पारियां खेली। इस बीच रुतुराज गायकवाड़ (133 रन, 144 गेंद, 10 चौके, चार छक्के) और अर्शिन कुलकर्णी (146 रन, 190 गेंद, 16 चौके और एक छक्का) के शतक की बदौलत महाराष्ट्र ने हिमाचल प्रदेश के खिलाफ 440 रन बनाए। हिमाचल की तरफ से प्रिंस ठाकुर ने 144 रन देकर 7 विकेट चटकाए। छत्तीसगढ़ ने शशांक तिवारी के 54 रन पर पांच विकेट की बदौलत TNCA अध्यक्ष एकादश को 266 रन पर समेटने के बाद बिना विकेट खोए चार रन बनाए।

ओमान ने अपने पहले एशिया कप के लिए टीम की घोषणा की, चार खिलाड़ी करेंगे डेब्यू

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहली बार क्रिकेट एशिया कप में हिस्सा ले रही ओमान ने अपनी टीम की घोषणा की है। अनुभवी सलामी बल्लेबाज जतिंदर सिंह ओमान की कप्तानी करेंगे। टीम को ग्रुप ए में पाकिस्तान, मेजबान यूएई और भारत के साथ रखा गया है। 17 सदस्यीय टीम में पिछले साल अमेरिका और वेस्टइंडीज में हुए आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप में भाग लेने वाले खिलाड़ियों से अलग खिलाड़ी शामिल हैं।

ओमान टीम में कुल चार नए चेहरे सुफियान यूसुफ, ज़क्रिया इस्लाम, फैसल शाह और नदीम खान अपने अंतरराष्ट्रीय पदार्पण की कतार में हैं। यह ओमान का एशिया कप में पहला प्रदर्शन होगा और मुख्य कोच दलीप मेंडिस यह देखने के लिए उत्साहित हैं कि टीम क्या हासिल कर पाती है। आईसीसी की आधिकारिक वेबसाइट के हवाले से मेंडिस ने कहा, 'यह सच है कि हम एशिया कप में हिस्सा ले रहे हैं, यह एक बड़ा टूर्नामेंट है और हमारे खिलाड़ियों के लिए वैश्विक मंच पर अपने कौशल का प्रदर्शन करने का एक शानदार अवसर है।'

उन्होंने कहा, 'भारत और पाकिस्तान जैसी टीमों के खिलाफ खेलना किसी भी क्रिकेटर के लिए एक यादगार पल होता है। तेज-तर्रार टी20 मैच में कुछ भी हो सकता है, जहां एक शानदार ओवर सब कुछ बदल सकता है। हमारी तैयारी मजबूत रही है, मौजूदा राष्ट्रीय टी20 टूर्नामेंट हमें प्रतिस्पर्धी अनुभव प्रदान कर रहा है, और हमारे प्रशिक्षण सत्र गहन और केंद्रित रहे हैं। यह सिर्फ कौशल की बात नहीं है - शीर्ष टीमों के खिलाफ उच्च दबाव वाले मैचों में मानसिक मजबूती भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। हमें उम्मीद है कि हम इस एशिया कप में प्रभाव डालेंगे और ओमान को एक उभरते हुए क्रिकेट राष्ट्र के रूप में प्रदर्शित करेंगे।'

क्रिकेट एशिया कप के लिए ओमान टीम

जतिंदर सिंह (कप्तान), हम्माद मिर्जा, विनायक शुक्ला, सुफियान यूसुफ, आशीष ओडेडेरा, आमिर कलीम, मोहम्मद नदीम, सुफियान महमूद, आर्यन बिष्ट, करण सोनावले, जिक्रिया इस्लाम, हसनैन अली शाह, फैसल शाह, मोहम्मद इमरान, नदीम खान, शकील अहमद, समय श्रीवास्तव।

दो बार की विम्बलडन चैम्पियन क्वितोवा ने टेनिस को कहा अलविदा

न्यूयॉर्क । दो बार की विम्बलडन चैम्पियन पेत्रा क्वितोवा ने अमेरिकी ओपन के पहले दौर में डायने पैरी से मिली हार के बाद टेनिस को अलविदा कह दिया। मुकाबला खत्म होने के बाद क्वितोवा की आंखें भर आई। दर्शक दीर्घा में मौजूद उनके पति और कोच जिरि वानेक ने उन्हें गले लगाया। पिछले साल जुलाई में बेटे को जन्म देने वाली क्वितोवा 17 महीने बाद कोर्ट पर लौटी थी। उन्होंने इस साल की शुरूआत में ही कह दिया था कि अमेरिकी ओपन उनका आखिरी टूर्नामेंट होगा। मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में उन्होंने बताया कि कुछ सप्ताह पहले वह कोविड 19 संक्रमण का शिकार होने के कारण अमेरिकी ओपन से नाम वापिस लेने की सोच रही थी। उन्होंने कहा, 'सुबह उठने के बाद से मुझे लग रहा था कि कुछ अच्छा नहीं होगा। मैं खा नहीं सकी। मैं काफी नर्वस थी और कुछ कर नहीं पा रही थी। यह काफी कठिन था। मैने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था।' क्वितोवा ने 2011 में मारिया शारापोवा को हराकर विम्बलडन खिताब जीता था। इसके बाद 2014 में यूजीन बूचार्ड को हराकर खिताब अपने नाम किया। ऑस्ट्रेलियाई ओपन 2019 के फाइनल में उन्हें नाओमी ओसाका ने हराया था। दिसंबर 2016 में उनके घर पर एक घुसपैठिये ने उन पर चाकू से हमला किया जिससे लगी चोट से उबरने के लिये उन्हें लंबी सर्जरी करानी पड़ी थी।

अर्जुन–सानिया के नये सफर को लेकर उत्साहित है पूरा परिवार : सचिन

मुम्बई । महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने बेटे अर्जुन तेंदुलकर की सानिया चंडोक से सगाई की खबरों की पुष्टि की है। इससे पहले एक रिपोर्ट में दिखाया गया था कि अर्जुन और सानिया की सगाई निजी समारोह में हुई, जिसमें करीबी दोस्त और परिवार के सदस्य ही शामिल हुए। हालांकि, अर्जुन और सानिया के परिवार की ओर से आधिकारिक तौर पर अब तक कुछ नहीं कहा गया था पर अब सचिन ने सगाई की खबरों को सही बताया है। सचिन से जब एक कार्यक्रम में पूछा गया कि क्या अर्जुन की सगाई हो गई तो उन्होंने इसे सही बताया। साथ ही कहा कि हम सभी उसकी जिंदगी के इस नए सफर को लेकर बहुत उत्साहित हैं। अर्जुन तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर हैं। वह घरेलू क्रिकेट में गोवा के लिए खेलते जबकि आईपीएल में मुंबई इंडियंस (एमआई) से खेलते हैं। अर्जुन ने 2020/21 सत्र में मुंबई के साथ अपने घरेलू करियर की शुरुआत की थी पर वह फिर गोवा की ओर से खेलने लगे। उन्होंने अभी तक 17 फर्स्ट क्लास मैच, 18 लिस्ट ए और 24 टी20 मुकाबले खेले हैं। वह भारत के लिए अंडर–19 क्रिकेट भी खेल चुके हैं। वहीं सानिया चंडोक बड़े कारोबारी रवि घई की पोती हैं। उनका परिवार ग्रैविस ग्रुप चलाता है। यह ग्रुप भारत में फूड और हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र में काम करता घई परिवार का इंटरकॉन्टिनेंटल होटल और लोकप्रिय आइसक्रीम ब्रांड ब्रुकलिन भी है। ग्रैविस ग्रुप भारत में बास्किन रॉबिन्स का भी संचालन करता है। सानिया ने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से बिजनेस मैनेजमेंट की डिग्री ली है। वह सोशल मीडिया में ज्यादा सक्रिय नहीं रहती। सानिया मिस्टर पॉज पेट स्पा एंड स्टोर एलएलपी में डायरेक्टर और साझीदार हैं और उनकी नेटवर्थ भी करोड़ों में है।

रेसलर स्ट्रोमैन फिलहाल परिवार के साथ ही समय बिताएंगे

सेन डियागो । डब्यलूडब्ल्यूई से बाहर किये गये पूर्व यूनिवर्सल चैंपियन ब्रॉन स्ट्रोमैन ने कहा है कि वह अभी कुछ समय परिवार के साथ बिताएंगे। उसी के बाद आगे की योजनाएं बनाएंगे। स्ट्रोमैन के अनुसार लंबे समय बाद उन्हें इस प्रकार अपने दोस्तों और करीबी लोगों के साथ रहने का अवसर मिला है। जिसका वह लाभ उठाना चाहते हैं। इसके बाद ही वह नई योजनाओं पर काम करेंगे। विंस मैकमैहन के समय में स्ट्रोमैन को लोकप्रिय हुए थे। विंस हमेशा से ही लंबे और ताकतवर पहलवानों को पसंद करते थे और स्ट्रोमैन इस पैमाने पर खरे उतरते थे। उन्होंने डब्यलूडब्ल्यूई में यूनिवर्सल चैंपियनशिप जीती और कई यादगार मुकाबले अपने नाम किय। हालांकि, ट्रिपल एच के आने के बाद स्ट्रोमैन का महत्व कम हो गया। ट्रिपल एच की सोच अलग थी और उन्होंने स्ट्रोमैन को सिर्फ एक मिड–कार्ड रेसलर के रूप में देखा। स्ट्रोमैन ने कहा, आगे क्या? यह कोई रहस्य नहीं है। मैंने अपनी जिंदगी के पिछले दस साल दुनिया भर में घूम–घूम कर लोगों से पिटने और उन्हें पीटने में बिताए हैं। यह एक शानदार सफर रहा है। उन्होंने आगे कहा, मैं यह नहीं कह रहा कि मैं फिर से रिंग में नहीं उतरूंगा, लेकिन यह मेरे लिए कुछ नया करने का मौका है। मैं अपने परिवार और दोस्तों के साथ फिर से जुड़ना चाहता हूं। वहीं कहा जा रहा है कि स्ट्रोमैन को कंपनी से निकाले जाने का एक मुख्य कारण उनकी चोटें थीं, क्योंकि हाल उन रेसलर्स को ज्यादा निकाला गया जो फिट नहीं थे। अब देखना होगा कि क्या स्ट्रोमैन किसी अन्य रेसलिंग प्रमोशन में शामिल होते हैं या पूरी तरह से एक नया रास्ता तय करते हैं।

'टेस्ट क्रिकेट के लिए कुछ भी कर सकता हूं', मोहम्मद सिराज का टेस्ट के लिए उमड़ा प्यार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने हाल ही में संपन्न एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के दौरान अपने अविश्वसनीय प्रदर्शन के बारे में खुलकर बात की है, जहां उन्होंने देश के लिए सभी पांच टेस्ट मैच खेले और शानदार 186 ओवर गेंदबाजी की। ऐसे समय में जब कार्यभार प्रबंधन क्रिकेट में सबसे ज्यादा बहस का विषय बन गया है, सिराज का दृष्टिकोण सबसे अलग है। यह जुनून, गर्व और भारत के लिए खेलने के बारे में है।

पांच कड़े टेस्ट मैचों में इतना भारी कार्यभार संभालने के बारे में बात करते हुए सिराज ने कहा कि उनकी प्रेरणा पूरी तरह से देश का प्रतिनिधित्व करने से आती है। सिराज ने कहा, 'सच कहूं तो मुझे नहीं पता। लेकिन जब आप अपने देश के लिए खेलते हैं, तो आप यह नहीं सोचते कि इसका आपके शरीर पर क्या असर पड़ेगा, बल्कि आप अपने देश के लिए खेलने के बारे में सोचते हैं।'

उन्होंने आगे कहा, 'हम जैसे लोगों का बचपन से एक ही सपना होता है और वह है देश के लिए खेलना। और जब वह मौका आता है, तो हम उसे पूरे जोश से लपक लेते हैं। मैं हर मौके का फायदा उठाकर भारत के लिए ज्यादा से ज्यादा मैच खेलने और उन्हें जीतने की कोशिश करने में यकीन रखता हूं।' सीरीज में 186 ओवर फेंकने के बावजूद सिराज ने जोर देकर कहा कि जरूरत पड़ने पर वह और भी ज्यादा गेंदबाजी करने को तैयार हैं। उन्होंने कहा, 'अगर एक और टेस्ट मैच होता, तो मैं 100 प्रतिशत खेल सकता था।'

जब उनसे पूछा गया कि क्या कभी थकान महसूस होती है, तो सिराज ने स्पष्ट किया कि भारत का प्रतिनिधित्व करना हमेशा व्यक्तिगत थकान से पहले आता है। सिराज ने कहा, 'नहीं, यह मेरी प्राथमिकता है। मैं टेस्ट क्रिकेट के लिए कुछ भी कर सकता हूं। मुझे टेस्ट क्रिकेट का सबसे कठिन चुनौतियों और संघर्षों से सामना करना पसंद है, ठीक वैसे ही जैसे जिंदगी हमें देती है।'

सिराज ने आगे टेस्ट क्रिकेट की अनोखी खूबसूरती पर विचार साझा किए। उन्होंने कहा, 'टेस्ट क्रिकेट मानसिक थकान, भावनात्मक थकान, शारीरिक थकान वगैरह देता है, लेकिन यही वो चुनौती है जो मुझे इसमें सबसे ज्यादा पसंद है। आपका एक खराब स्पेल हो सकता है और अगले ही स्पेल में आप खुद को बेहतर बना लेते हैं। टेस्ट क्रिकेट में हमें वापसी करने के लिए एक और पारी मिलती है, ठीक वैसे ही जैसे जिंदगी में हमें हर दिन खुद को बेहतर बनाने के मौके मिलते हैं।'

उन्होंने कहा, 'मुझे टेस्ट क्रिकेट के बारे में ये बातें पसंद हैं और मैं इनका आनंद लेता हूं और अपने प्रदर्शन के अच्छे या बुरे होने की ज्यादा चिंता किए बिना बस अपना शत-प्रतिशत देना चाहता हूं।' सिराज सीरीज में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बने जिन्होंने 32 से ज्यादा की औसत से 23 विकेट लिए, जिसमें 2 बार 5 विकेट और एक बार चार विकेट शामिल हैं।

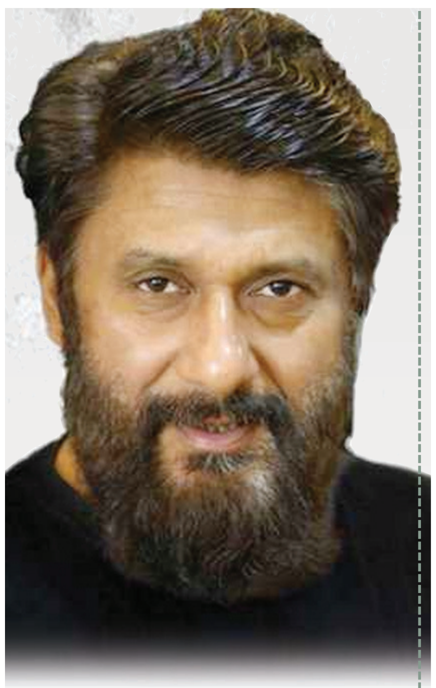

जॉन अब्राहम पर भड़के विवेक अग्निहोत्री

एक्टर जॉन अब्राहम ने हाल ही में कहा था कि वह कभी छावा या द कश्मीर फाइल्स जैसी राजनीतिक प्रभाव वाली फिल्में नहीं बनाएंगे। अब इस पर फिल्ममेकर विवेक अग्निहोत्री ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। बातचीत में विवेक ने कहा, जॉन न इतिहासकार हैं, न इंटलेक्चुअल, न लेखक और न विचारक। वह सिर्फ देशभक्ति दिखाने वाली फिल्में जैसे सत्यमेव जयते और डिप्लोमैट बना चुके हैं। उन्होंने यह बयान कई कारणों से दिया होगा। अगर यह बात कोई बड़ा इतिहासकार कहता तो समझ में आता, लेकिन मुझे उनकी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। जॉन को सलाह देते हुए विवेक ने कहा, वह बाइक चलाने, बॉडी दिखाने और प्रोटीन खाने के लिए जाने जाते हैं। उन्हें इन्हीं पर ध्यान देना चाहिए। सिनेमा पर टिप्पणी करने से बचना ही बेहतर होगा। बता दें कि विवेक की नई फिल्म द बंगाल फाइल्स अगले साल 5 सितंबर 2025 को रिलीज होगी। दोनों ने फिल्म धन धना धन गोल में काम किया है, जिसका निर्देशन विवेक अग्निहोत्री ने किया था और जॉन अब्राहम उस फिल्म में लीड रोल में थे। दोनों ने फिल्म धन धना धन गोल में काम किया है, जिसका निर्देशन विवेक अग्निहोत्री ने किया था और जॉन अब्राहम उस फिल्म में लीड रोल में थे।

जॉन अब्राहम ने क्या कहा था?

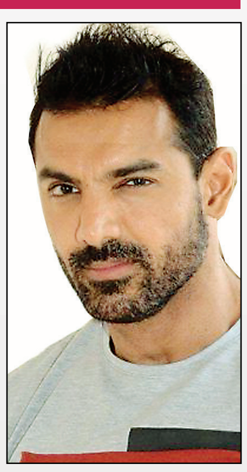

दरअसल, हाल ही में एक इंटरव्यू में जब उनसे पूछा गया था कि क्या वो छावा या द कश्मीर फाइल्स जैसी फिल्में बनाने पर विचार करेंगे, तो जॉन ने जवाब दिया था। उन्होंने कहा था- मैंने 'छावा' और 'द कश्मीर फाइल्स' नहीं देखी है, लेकिन मुझे पता है कि लोगों को यह पसंद आई है। मगर जब फिल्में अति-राजनीतिक माहौल में लोगों को प्रभावित करने के इरादे से बनाई जाती हैं और ऐसी फिल्मों को दर्शक मिल जाते हैं, तो यह मेरे लिए डरावना होता है। बता दें कि जॉन की फिल्म तेहरान ओटीटी प्लेटफॉर्म जी 5 पर 14 अगस्त को रिलीज हुई है। ये फिल्म साल 2012 में इजराइली राजनयिकों पर हुए हमले पर आधारित है। फिल्म में जॉन एसीपी राजीव कुमार का रोल निभाया है।

पाकिस्तानी कलाकारों के बैन पर बोलीं कृतिका कामरा

टीवी, फिल्म और ओटीटी तीनों माध्यमों में कृतिका कामरा ने खुद को साबित किया। भीड़, हश हश, बंबई मेरी जान, ग्यारह ग्यारह जैसी कई वेब सीरीज में नजर आने वाली कृतिका इन दिनों सारे जहां से अच्छा से चर्चा में हैं।

पाकिस्तानी जर्नलिस्ट निभाने के आपको किसी तरह के बैकलैश का सामना करना पड़ा?

बिलकुल नहीं, उलटा तारीफें ही आई हैं कि आप इसे जिंगोस्टिक भी बना सकते थे, मगर आपने इसे पॉजिटिव और संतुलित बनाया। फातिमा खान को प्ले करते समय मेरा लंबे समय तक ट्विटर पर रहना बहुत काम आया। सत्तर के दशक में भी उस तरह के जर्नलिस्ट थे, बॉर्डर के उस पार भी रहे हैं , जो चाहते हैं. देश की मूलभूत जरूरतों एजुकेशन, इंफ्रास्ट्रक्चर, हेल्थ आदि की बात हो, बम और असले की नहीं। इस किरदार की फिलॉसफी से मैं वाकिफ थी। हमने रिसर्च भी काफी की।

आपकी सीरीज सारे जहां से अच्छा इंडिया-पाकिस्तान पर आधारित है। इंडिया-पाकिस्तान के कलाकारों को लेकर कभी बैन तो कभी वेलकम जैसी चीजें चलती रहती हैं, आपकी क्या राय है? कहा जाता है कि कला सरहद से परे होती है?

मेरे हिसाब से तो नहीं होती। अब देश क्या डिसाइड करता है, वो तो अलग बात है।मगर एक कलाकार से आप पूछें, तो वो तो यही कहेगा कि कला की कोई लैंग्वेज या सीमा नहीं होती। और ना ही होने चाहिए। अगर उसके कारण आर्ट प्रभावित होता है, तो ये किसी भी आर्टिस्ट को गवारा नहीं होगा। अगर कलाकार जियोपॉलिटिक्स समझ पाता, तो वो आर्टिस्ट नहीं होता। मगर इस तरह की बातें और फैसले कोई और लेते हैं। हो सकता है, वो कुछ सोच कर ही ऐसे निर्णय लेते होंगे, मगर कभी - कभी उसका लॉजिक मुझे समझ नहीं आता। कई बार आर्ट रुक जाता है, क्रिकेट नहीं। अगर सब कुछ बंद कर देते हैं, तो फिर ये कब तक चलेगा? तो क्या ट्रेड भी रुकता है? या सिर्फ आर्ट? ये सवाल हैं? मेरे पास जवाब नहीं हैं। 5 अगर लाइंस ड्रॉ करते हैं, तो कितनी ड्रॉ करेंगे? क्योंकि सॉफ्ट टारगेट के रूप में फिल्म और म्यूजिक को तो फ़ौरन रोक लगा सकते हैं। मेरे लिए तो ये सारा मामला कन्फ्यूजिंग है।

जब भी देशभक्ति या जियोपोलिटिक्स की बात होती है, तब हम कश्मीर या इंडिया-पाकिस्तान पर ही फोकस क्यों करते हैं?

असल में हमारा इतिहास एक -दूसरे से गहराई से जुड़ा है। हम दोनों की फॉर्मेशन आगे-पीछे है। ये रिश्ता हमेशा ऐसे ही रहने वाला है। ये सचाई है और जब पहलगाम जैसा कुछ कांड हो जाता है, तो चीजें ताजा हो जाती हैं। ये तनाव हमेशा रहेगा। ये तनाव और मतभेद काफी फेसिनेट करता है। हमारे परिवारों में बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं, जो पहले साथ थे और उन नाना-नानियों और दादा-दादियों ने बताया कि कैसे वे लोग एक समय में साथ थे और उनकी दुनिया कैसी थी? ये टेंशन और फेसिनेशन दोनों तरफ है और दर्शक भी इन कहानियों को लेकर उत्सुक रहते हैं।

ऐसे प्रोजेक्ट्स पर काम करना चाहती हूं जो दिल से खुशी दे

अभिनेत्री सई मांजरेकर ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत 16 साल की उम्र से की थी। उनका कहना है कि वह सिर्फ व्यस्त रहने या फिर कैलेंडर भरने के लिए काम नहीं करना चाहती बल्कि उन प्रोजेक्ट्स पर काम करना चाहती हैं जो उनको दिल से खुशी दें। अभिनेत्री का मानना है कि उन प्रोजेक्ट्स पर काम करना चाहिए, जो आपको सच में दिल से या रचनात्मक रूप से संतुष्ट करें।

अभिनेत्री ने कहा, मैंने बहुत कम उम्र में काम करना शुरू कर दिया था। इन सालों में मैंने यही सीखा है कि कई प्रोजेक्ट्स पर काम करने से ज्यादा जरूरी है, कि सही प्रोजेक्ट्स पर काम करें। मैं सिर्फ व्यस्त रहने के लिए काम नहीं करना चाहती हैं। वह कहती हैं, इस समय मैं उन कहानियों पर काम करना चाहती हूं जो मुझे करने में सच में अच्छी लगें, ऐसे किरदार जो मुझे सच में चुनौती दें, और मेरे अंदर के एक कलाकार को अच्छे से निखारें। सई का मानना है कि प्रोजेक्ट्स में खुद को निखारने, अपनी कला को आजमाने और कुछ अनोखा करने की आजादी मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा, जब आप जुनून के साथ काम करते हैं, तो उसका असर आपके काम पर नजर आने लगता है। मैं जल्दबाजी में कोई भी गलत फैसला नहीं लेना चाहती, इसलिए सही मौके का इंतजार कर रही हूं। अभिनेत्री ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत साल 2012 में मराठी फिल्म काक्षपर्श में खुशी दामले के छोटे से किरदार से की थी। 2019 में उन्होंने सलमान खान के साथ हिंदी एक्शन-कॉमेडी दबंग 3 में खुशी चौटाला के किरदार से मुख्य अभिनेत्री के रूप में शुरुआत की थी। फिर, साल 2020 में वह आयुष शर्मा के साथ गाने मंझा के म्यूजिक वीडियो में नजर आईं थीं।

द इंटर्न में नहीं दिखेंगी दीपिका सिर्फ निर्माण करेंगी

दी पिका पादुकोण आने वाले समय में कई बड़े प्रोजेक्ट्स में नजर आने वाली हैं। इन्हीं में से एक फिल्म द इंटर्न भी थी, जिसका ऐलान साल 2020 में हुआ था। हालांकि, लंबे समय से इस फिल्म को लेकर कोई अपडेट नहीं आई थी। अब खबर है कि दीपिका ने इस फिल्म से बतौर अभिनेत्री नहीं, बल्कि निर्माता के रूप में जुड़ने का फैसला किया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्होंने एक्टिंग से ज्यादा फोकस अब प्रोडक्शन पर लगाने का निर्णय लिया है और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कहानियां दर्शकों तक पहुंचाने की योजना बना रही हैं। द इंटर्न इसका पहला कदम होगा। शुरुआत में इस फिल्म में दीपिका के साथ ऋषि कपूर को कास्ट किया गया था लेकिन उनके निधन के बाद प्रोजेक्ट ठहर गया। बाद में मेकर्स ने उनकी जगह अमिताभ बच्चन को साइन किया। दीपिका भी बिग बी के साथ दोबारा काम करने के लिए उत्साहित थीं, क्योंकि दोनों इससे पहले पीकू में अपनी बेहतरीन केमिस्ट्री दिखा चुके हैं। अब जबकि दीपिका फिल्म में अभिनय नहीं कर रही हैं, मेकर्स उनकी जगह नई अभिनेत्री की तलाश कर रहे हैं। द इंटर्न हॉलीवुड की इसी नाम की सुपरहिट फिल्म का हिंदी रीमेक है, जो 2015 में रिलीज हुई थी।

इंडस्ट्री के इनकम गैप पर कृति सेनन ने रखी राय

कृति सेनन ने अपने करियर में वुमन ओरिएंटेड फिल्म भी की हैं। वह एक स्ट्रॉन्ग वुमन के रोल फिल्मों में करती हैं। असल जिंदगी में भी ऐसी ही हैं। कृति का मानना है कि फिल्म इंडस्ट्री में इनकम गैप नहीं होनी चाहिए। लेकिन मौजूदा स्थिति ऐसी ही है, यह बात कृति को बहुत चुभती है।

वेतन एक जैसा होना चाहिए

कृति सेनन कहती हैं, 'मुझे समझ नहीं आता कि वेतन (इनकम) में समानता क्यों नहीं है? क्योंकि कुछ खास तरह के रोल, कुछ खास तरह के कामों के लिए, चाहे आप पुरुष हों या महिला, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा मानना है कि वेतन एक जैसा होना चाहिए। फिल्मों में भी ऐसा ही होना चाहिए। हम बहुत लंबे समय से इस पर बात करते आ रहे हैं, यकीन मानिए यह बात हमें सबसे ज्यादा चुभती है।'

इन फिल्मों में नजर आएंगी कृति सेनन

कृति सेनन के करियर फ्रंट की बात करें तो वह इस साल आनंद एल राय निर्देशित फिल्म 'तेरे इश्क में' में नजर आएंगी। इस फिल्म में उनके अपोजिट साउथ एक्टर धनुष हैं। वहीं वह फिल्म 'कॉकटेल 2' का हिस्सा भी बन चुकी हैं।

वुमन सेंट्रिक फिल्मों पर भी बोलीं कृति

कृति सेनन आगे कहती हैं, 'भले ही कोई फिल्म वुमन सेंट्रिक हो, मुझे लगता है कि उसका बजट उस फिल्म जितना नहीं होता, जो हीरो सेंट्रिक होती है। प्रोड्यूसर डरते हैं कि उन्हें वुमन सेंट्रिक फिल्मों से उतना पैसा वापस नहीं मिलेगा। इसलिए मुझे लगता है कि यह एक ऐसा सर्कल है, जहां वुमन सेंट्रिक फिल्में, हीरो सेंट्रिक फिल्मों जितना नहीं कमा पाती हैं। इस वजह से कई लोगों को ऐसा लगता है कि हीरो की फीस ज्यादा है और हीरोइन की कम।'

सोहा अली खान का दावा मेरा पॉडकास्ट महिलाओं को बनाएगा सशक्त

अभिनेत्री सोहा अली खान फैंस के लिए एक नया पॉडकास्ट ऑल अबाउट हर लेकर आ रही हैं। इस पॉडकास्ट की खास बात यह है कि इसमें महिलाओं से जुड़ी सेहत, पैसे की समझ, लाइफस्टाइल और दूसरे जरूरी विषयों पर बात की जाएगी। यह खासतौर पर महिलाओं की भलाई और उनकी जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। सोहा ने हाल ही में पॉडकास्ट को लेकर बात की। उन्होंने बताया कि उनके पॉडकास्ट में बातचीत सुनियोजित और सवाल-जवाब के आधार पर होगी। उनका मानना है कि अनौपचारिक बातचीत में लोग कई बार विषय से भटक जाते हैं, जिससे दर्शकों को स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती है। इसलिए, उन्होंने अपने पॉडकास्ट को सही तरीके से तैयार किया है। अभिनेत्री ने कहा, मैं चाहती हूं कि दर्शक पॉडकास्ट को अच्छे से सुनें और उससे कुछ जरूरी जानकारी लें। जब बातचीत बिना दिशा के होती है, तो कई बार हम कहीं और भटक जाते हैं और सुनने वालों को कुछ समझ में नहीं आता है। इसलिए हमने हर एपिसोड के लिए एक स्क्रिप्ट तैयार की है, जिसमें अच्छी तरह से रिसर्च किए गए सवाल शामिल होंगे।

उन्होंने एक खास एपिसोड का जिक्र किया, जिसमें कैंसर जैसे गंभीर विषय पर चर्चा होगी। इस एपिसोड में एक ऑन्कोलॉजिस्ट और एक ऐसी महिला मेहमान शामिल होंगी, जिन्होंने खुद कैंसर से जंग लड़ी है। सोहा ने कहा, हम पॉडकास्ट में कैंसर जैसे विषयों पर भी बात करेंगे, जैसे ब्रेस्ट कैंसर, सर्वाइकल कैंसर और फेफड़ों का कैंसर, जो महिलाओं को ज्यादा प्रभावित करते हैं। हम सवाल पूछेंगे कि कैंसर को कैसे रोका जा सकता है, इसके शुरुआती लक्षण क्या हैं, विभिन्न स्टेज क्या हैं, और इलाज के क्या विकल्प हैं। उन्होंने यह भी जोड़ा, अक्सर लोग 'कैंसर' सुनते ही डर जाते हैं और सोचते हैं कि ये तो सबसे बुरी बीमारी है। लेकिन सच यह है कि कई तरह के कैंसर का इलाज संभव है। सबसे जरूरी बात है—बचाव। अगर समय रहते जांच करवाई जाए, खुद भी सावधानी रखी जाए और डॉक्टर से सलाह ली जाए, तो ज्यादातर कैंसर का इलाज संभव है। यह पॉडकास्ट महिलाओं को जागरूक करने और उपयोगी जानकारी देने का एक बेहतरीन मंच साबित होने की उम्मीद है।

करण जौहर ने 'धड़क 2' को लेकर की इमोशनल पोस्ट

करण जौहर अपनी फिल्मों को लेकर, जिंदगी को लेकर फैंस से मन की बातें सोशल मीडिया के जरिए शेयर करते हैं। फिल्म 'धड़क 2' को प्रोड्यूसर करके का खुद को एक बदलाव का हिस्सेदार मानते हैं। जानिए, फिल्म 'धड़क 2' को लेकर अपनी पोस्ट में अपनी इंस्टाग्राम पोस्ट में करण जौहर लिखते हैं, 'जब मैं 2003 में फिल्म 'कल हो ना हो' के साथ प्रोड्यूसर बना, तो मेरा एजेंडा साफ था कंपनी बनाओ और पैसा कमाओ। जिससे हम इन हाउस एंटरटेनर्स और मेनस्ट्रीम ऑडियंस के हिसाब से कहानियों को फंड कर सकें। एक फिल्म प्रोड्यूसर के तौर पर मैं क्लीयर था कि हमेशा लोगों को खुश करना है। इससे ही बॉक्स ऑफिस की सफलता मिलेगी। मेरी प्रायोरिटी हमेशा से बॉक्स ऑफिस था।

करण जौहर अपनी पोस्ट में आगे लिखते हैं, 'मुझे फिल्म 'धड़क 2' पर बहुत गर्व है। राइटर, डायरेक्टर शाजिया इकबाल पर गर्व है। जिन्होंने एक पावरफुल फिल्म का रीमेक बनाने जैसा बहादुरी भरा काम किया। मैं धर्मा मूवीज, उमेश जी का भी थैंकफुल हूं। फिल्म की स्टार कास्ट, क्रू का भी मैं बहुत ग्रेटफुल हूं। सिद्धांत चतुर्वेदी, तृप्ति डिमरी ने बहुत ही मुश्किल किरदार निभाए। यह पूरी स्टार मेरे दिल के बहुत करीब है।' करण जौहर फिल्म 'धड़क 2' से जुड़े हर शख्स को अपनी इंस्टाग्राम पोस्ट में थैंक्स कहते हैं।

रोज हम समाचार पत्र पढ़ते हैं और वही-वही घटनाएँ मन को अस्वस्थ कर जाती हैं। 'ससुराल वालों के अत्याचारों से तंग आकर बहू ने आत्महत्या की।' ऐसी कई घटनाएँ देश में रोज होती रहती हैं।

तुम कभी हार न मानना

रोज हम समाचार पत्र पढ़ते हैं और वही-वही घटनाएँ मन को अस्वस्थ कर जाती हैं। 'ससुराल वालों के अत्याचारों से तंग आकर बहू ने आत्महत्या की।' ऐसी कई घटनाएँ देश में रोज होती रहती हैं। फिर भी जब-जब ऐसी घटनाएँ सुनते-पढ़ते हैं, कई सवाल मन में तूफान मचाने लगते हैं?

क्या जिन महिलाओं ने आत्महत्या नहीं की, ससुरालवालों ने उन्हें कोई तकलीफ नहीं दी? क्या उनका जीवन कहानी की तरह सुंदर था। और वे खुशी-खुशी अपना जीवन जीने लगे।

पुराना जमाना तो छोड़िए आज भी हमारे देश में पति और ससुरालवालों की ओर से बहू को कई तरह से प्रताड़ित किया जाता है। एक हद तक इसे सहा या नजरअंदाज भी किया जा सकता है, उसके बाद क्या? आज लड़कियाँ पढ़ी-लिखी हैं। आत्मनिर्भर हैं, वे अपनी लड़ाई भी लड़ सकती हैं। अब जरूरी है कि वे दूसरों का भी सहारा बनें। माता-पिता का, उस सहेली का जो अपना जीवन समाप्त करने चली हो, या जिसे ससुराल वाले प्रताड़ित कर रहे हैं। उसमें लड़ने का आत्मविश्वास जगाएँ। हमें जब आवश्यकता थी, तब किसी सहेली, भाभी, मौसी, काकी ने हमारा साथ दिया था। आज उसे समाज को लौटाना होगा। मायके की सर्वगुण संपन्न और सुशील लड़की, ससुराल आकर एकदम 'फेल' घोषित कर दी जाती है। उसको अचानक इतनी रोक-टोक में बाँध दिया जाता है मानो वह सुधारगृह में आ गई हो।

अब वो जमाने गए, जब लड़की का किसी कारणवश फिर से मायके में आकर रहना गलत माना जाता था। जहाँ डोली गई वहीं से अर्थी उठेगी...आदि ये वाक्य लड़की को सिखाए जाते थे। आज के माता-पिता को स्थितियों को देखते हुए अपनी बेटी के लिए घर के दरवाजे हमेशा खुले रखने चाहिए। पति द्वारा पत्नी से किया हुआ गलत व्यवहार, फिर वो शारीरिक हो या मानसिक, यह घटना 'पर्सनल' नहीं है। अर्थात दोनों तक सीमित नहीं है।

वह लड़की जिसके साथ अन्याय हो रहा है वह समाज का एक घटक है। उसके साथ होने वाला व्यवहार भी सामाजिक और सार्वजनिक प्रश्न है। लड़की शुरू में उसके साथ हो रहे व्यवहार को छिपाती है। पानी सिर के ऊपर जाने के बाद धीरे-धीरे माता-पिता को बताती है।

अक्सर माता-पिता भी घटनाओं को छिपाते हैं। बेटी की बदनामी से डरते हैं। इससे अत्याचार और बढ़ते जाते हैं। अतः आवश्यक है कि लड़कियाँ इस प्रकार की घटनाओं को छिपाएँ नहीं।

कोई गलत कदम भी न उठाएँ। याद रखें कि हम आत्महत्या करने के लिए पैदा नहीं हुए हैं। कुछ अच्छा काम करके दुनिया से जाएँगे। इस जिद के साथ जीवन जिएँ। यह जीवन आपको ईश्वर की देन है इसका सदुपयोग करें।

इसके लिए सर्वप्रथम लड़कियों का शिक्षित होना आवश्यक है। दूसरा, नौकरी या व्यवसाय अवश्य करें। अपनी रुचि के अनुसार सामाजिक या सार्वजनिक काम के लिए समय अवश्य निकालें जिससे आपके अत्याचारों को जुबां मिलेगी। साथ ही अपनी रुचि का काम करने से दुगुनी शक्ति भी मिलेगी।

मुझे किसी का सहारा मिले इसके साथ ही मैं किसी का सहारा बनूँ, यह लक्ष्य सामने रखें। यही जीवन है यही सच्चा आनंद है।

ये नन्हे फरिश्ते

एक शोध में यह बात उजागर हुई है कि 'अगर माता-पिता बच्चों पर बहुत ज्यादा रोक-टोक या उन पर हावी होने की कोशिश करते हैं तो बच्चे मनो वैज्ञानिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। हालाँकि ध्डायरेक्शन इन साइकोलॉजिकल साइंस' में प्रकाशित इस शोध के मुताबिक पूर्वी देशों की अपेक्षा पश्चिमी देशों पर इसका असर ज्यादा है।

एक शोध में यह बात उजागर हुई है कि 'अगर माता-पिता बच्चों पर बहुत ज्यादा रोक-टोक या उन पर हावी होने की कोशिश करते हैं तो बच्चे मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। हालाँकि ध्डायरेक्शन इन साइकोलॉजिकल साइंस' में प्रकाशित इस शोध के मुताबिक पूर्वी देशों की अपेक्षा पश्चिमी देशों पर इसका असर ज्यादा है।

शोधकर्ताओं के अनुसार शायद पूर्वी देशों के बच्चे संस्कृति की वजह से माता-पिता की अनावश्यक घुसपैठ को स्वीकार कर लेते हैं। इससे बच्चों के अंदर यह कुंठा विकसित हो जाती है कि उनसे कुछ नहीं होने वाला।

बच्चे तो बच्चे समझदारी के मामले में आपका छोटा-सा शिशु भी कई बार आपसे कहीं अधिक समझदार सिद्ध हो सकता है। कुछ नए शोधों से पता चला है कि-

'शिशु जिज्ञासु होते हैं। वे नई चीजों को सीखना चाहते हैं साथ ही उनमें खोजने, समझने और गुणात्मक अध्ययन करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। इतना ही नहीं, वे अच्छे बुरे की पहचान भी कर लेते हैं।'

ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय की फी जु और वास्ती गार्सिया ने एक प्रयोग द्वारा यह सिद्ध किया कि छोटे-छोटे शिशुओं में भी सीखने की वृत्ति काफी होती है। शोधकर्ताओं ने आठ महीने के शिशुओं पर प्रयोग किए। उन्होंने इन शिशुओं को एक डिब्बे में रखी पिंगपोंग दिखाई।

इनमें से सभी गेंदें सफेद थीं और चार गेंदें लाल रंग की थीं। कुछ देर बाद उन्होंने डिब्बा बदल दिया और इस बार लाल चार गेंदें सफेद और सभी गेंदें लाल रंग की कर दीं। सभी शिशु चौंक गए और देर तक डिब्बे को देखते रहे। इससे यह साबित होता है कि शिशुओं में रंगों का गुणात्मक अध्ययन करने की क्षमता होती है। वे समझ जाते हैं कि कुछ अलग हुआ है।

शिशुओं को एक लीवर वाला खिलौना दिया गया जिसको दबाने से गुड़िया बाहर आती थी। दो समूहों के बच्चों में किए गए इस अध्ययन में एक समूह के बच्चों ने तो इसे एक सामान्य खिलौना समझकर छोड़ दिया जबकि एक समूह के बच्चों को लीवर तकनीक पता चल गई और वे उसके साथ प्रयोग करने लग गए।'

बच्चों के बारे में खलील जिब्रान के विचार :

- तुम्हारे बच्चे तुम्हारी संतान नहीं हैं।
- वे तो जीवन की स्वयं के प्रति जिजीविषा के फलस्वरूप उपजे हैं।
- वे तुम्हारे भीतर से आए हैं लेकिन तुम्हारे लिए नहीं आए हैं।
- वे तुम्हारे साथ जरूर हैं लेकिन तुम्हारे नहीं हैं।
- तुम उन्हें अपना प्रेम दे सकते हो, अपने विचार नहीं, क्योंकि उनके विचार उनके अपने हैं।
- तुमने उनके शरीर का निर्माण किया है, आत्मा का नहीं, क्योंकि उनकी आत्मा भविष्य के घर में रहती है, जहाँ तुम जा नहीं सकते, सपने में भी नहीं।
- उनके जैसा बनने की कोशिश करो, उन्हें अपने जैसा हरगिज न बनाओ, क्योंकि जिंदगी पीछे नहीं जाती, न ही अतीत से लड़ती है।
- तुम वे धनुष हो जिनसे वे तीर की भाँति निकले हैं। ऊपर बैठा धनुर्धर मार्ग में कहीं भी निशाना लगाता है, वह प्रत्यंचा को जोर से खींचता है ताकि तीर चपलता से दूर तक जाए। उसके हाथों में थामा हुआ तुम्हारा तीर शुभदायक हो, क्योंकि उसे दूर तक जाने वाले तीर भाते हैं, और मजबूत धनुष ही उसे प्रिय लगते हैं।'

स्नैक्स हैं बहुत से मगर पकौड़ों जैसा कोई नहीं

फुरसत के क्षणों में पकौड़े खाने का अलग ही आनंद होता है। वैसे तो कभी भी नाश्ते में पकौड़े खाने अच्छे लगते हैं लेकिन बरसात के मौसम में गरमागरम पकौड़े चाय के साथ खाने का मजा ही दूसरा होता है और अगर हर बार पकौड़ों का नया स्वाद मिले तो फिर कहना ही क्या। आइए जानते हैं पकौड़ों के नए-नए जायके बनाने की

विधियां- बेसन के घोल में थोड़ी उरद की दाल का पेस्ट डाल दें। इससे पकौड़ों का स्वाद बढ़ जाता है। बेसन के घोल में थोड़ी सी धुली मूंग की फूली हुई दाल मिला दें। इससे पकौड़ों का जायका और बढ़ जाएगा। मूंग की दाल के पकौड़े बनाने के लिए हमेशा छिलके वाली दाल का ही इस्तेमाल करें। दाल को छिलके समेत ही पीसें। इससे पकौड़े कुरकुरे बनते हैं। फटे दूध में बेसन घोल कर पकौड़े बनाने से उनका अनूठा स्वाद मिलता है। बेसन के घोल में थोड़ा सा कार्नफ्लोर मिला देने से पकौड़े अधिक करारे बनते हैं। पकौड़ों के घोल में चावल का आटा डाल देने से पकौड़े काफी कुरकुरे बनते हैं।

कौड़ों के घोल में में थोड़ा सा अचार वाला तेल मिला देने से पकौड़ों का स्वाद अलग हो जाता है। पनीर बनाने के बाद बचे पानी से बेसन घोल कर पकौड़े बनाने से स्वाद अच्छा लगता है। चना, उड़द, मूंग, मसूर बराबर मात्रा में लेकर पानी में कुछ घंटे भिगो कर पीस लें। इस मिश्रण के पकौड़े बेहद स्वादिष्ट होते हैं। पकौड़ों के घोल में अधिक मात्रा में धनिया पत्ती काट कर डालने से स्वाद बढ़ जाता है।